

केनरा बैंक की
द्विमासिक गृह पत्रिका
दिसंबर 2025 – जनवरी 2026 | 304



श्रेयस
Shreyas

Canara Bank's
Bimonthly House Magazine
December 2025 - January 2026 | 304

"श्रेयस प्रतियोगिता : बैंक के आंतरिक प्रतिभा का शानदार उत्सव"
"Shreyas Contest: A Vibrant celebration of inhouse talent"



श्रेयस के लिए क्लिक करें
Scan to know more

कारोबार रणनीति सह समीक्षा बैठक – लखनऊ / Business Strategy cum Review Meet @ Lucknow



दिनांक 23 दिसंबर, 2025 को लखनऊ अंचल में आयोजित कारोबार रणनीति सह समीक्षा बैठक में श्री के सत्यनारायण राजु, प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी उपस्थित रहे। बैठक में श्री अजीत कुमार मिश्रा, महाप्रबंधक व अंचल प्रमुख, श्री एच रघु राजा, उप महाप्रबंधक, अंचल कार्यालय व क्षेत्रीय कार्यालय के अन्य कार्यपालकगण भी उपस्थित रहे।

Sri. K Satyanarayana Raju, MD & CEO, at the Business Strategy cum Review Meet conducted at Lucknow Circle, on 23rd December 2025. Sri Ajit Kumar Mishra, GM & Circle Head, Sri. H Raghu Raja, DGM, CO and other executives from Circle & Regional Office are seen in the picture.

नराकास राजभाषा सम्मान / TOLIC Official Language award



श्री हरदीप सिंह अहलूवालिया, प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी (प्रभारी), को मध्य, पश्चिम एवं दक्षिणी क्षेत्रों के संयुक्त क्षेत्रीय सम्मेलन के दौरान माननीय केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री बंडी संजय कुमार से "नराकास राजभाषा सम्मान" पुरस्कार श्रेणी में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। यह कार्यक्रम दिनांक 20 जनवरी, 2026 को इंदौर में गृह मंत्रालय, भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित किया गया था। नराकास सदस्य सचिव, श्रीमती श्रीकला श्रीकुमार, सहायक महाप्रबंधक, राजभाषा एवं एचएमएल अनुभाग, प्रधान कार्यालय, ने संसद सदस्य श्री शंकर लालवानी से प्रमाण पत्र ग्रहण किया।

Sri. Hardeep Singh Ahluwalia, MD & CEO (In-charge), receiving the First prize – "TOLIC Official Language" award category from Sri. Bandi Sanjay Kumar, Union Minister of State for Home Affairs, during the Joint Regional Conference of the Central, Western and Southern regions. The event was organized by the Department of Official Language, Ministry of Home Affairs, GOI, on 20th January, 2026, at Indore. The Member Secretary of TOLIC, Smt. Sreekala Sreekumar, AGM, OL and HML section, HO, is seen receiving the certificate from Sri. Shankar Lalwani, Member of Parliament, during the event.

श्रेयस - SHREYAS

SINCE 1974

केनरा बैंक की द्विमासिक गृह-पत्रिका
Bimonthly House Magazine of Canara Bank

दिसंबर 2025 - जनवरी 2026 | 304 / December 2025 - January 2026 | 304

ADVISORY COMMITTEE

Hardeep Singh Ahluwalia

B P Jatav

Amitabh Chatterjee

Amit Mittal

Sreekala Sreekumar

Someshwara Rao Yamajala

Bibin Vargheese

Priyadarshini R

EDITOR

Priyadarshini R

ASST. EDITOR

Manisha Manohar

Nikhlesh Soni

सह संपादक (हिंदी)

बिबिन वर्गीस

Edited & Published by

Priyadarshini R

Senior Manager

House Magazine & Library Section
HR & PR Wing, HO, Bengaluru - 560 002.

Ph : 080-2223 3480

E-mail : hohml@canarabank.com

for and on behalf of Canara Bank

Design & Print by

Blustream Printing India (P). Ltd.

#1, 2nd Cross, CKC Gardens,

Lalbagh Road Cross, Bangalore - 560 008.

Ph : 080-2223 0070 / 2223 0006.

The views and opinions expressed herein are not necessarily those of the Bank. Reproduction of the matter in any manner with the permission of the editor only. For private circulation only. Not for Sale.



श्रेयस प्रेयस मनुश्यमेत स्तौ संपरीत्य विविनक्ति धीरः//

(कठोपनिषद् II - 2)

Both good and pleasant approach us:

The wise on examining choose the good. (Kathopanishad II - 2)

CONTENTS

- 2 प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश / MD & CEO's Message
- 4 संपादकीय / Editorial
- 5 Farewell message of MD & CEO, Sri K. Satyanarayana Raju
- 6 New CGM's and GM's Messages
- 8 The Vigilant Eye: How to Spot and Stop Fraud - Daita Ujwala
- 11 सतर्क दृष्टिकोण: धोखाधड़ी की पहचान व रोकथाम - प्रदीप राज एस
- 15 कासा बढ़त: प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ने और सफलता पाने की रणनीतियाँ - धीरज जुनेजा
- 20 Painting - Seema Sharma, Rasika N and Veena Devi K M
- 22 Unplugged - Neha Chenani
- 26 माँ - प्रमोद रंजन
- 28 The Ledger of Forgotten Dreams - Abrar UI Mustafa
- 31 मिठी - पुलक चक्रवर्ती
- 34 Sketching - Ankit Mishra, Rasika N and Moniranjana Samanta
- 36 The Curious Case of a Bachelor Banker - Raghavendra B Kyadad
- 38 कौन भागी? - धीरज जुनेजा
- 40 The Round Roti Conspiracy - Sakshi Jain
- 42 A Legacy Retires: Shri. K Satyanarayana Raju, MD & CEO- bids farewell
- 44 चौबे जी चले अमेरिका - गौरव जोशी
- 47 Employee achievements
- 48 Circle News / अंचल समाचार
- 56 Shall I leave then ? (A Soldier's Final Letter) - Raghavendra B Kyadad
- 57 शाश्वत सत्य है वर्तमान - दिव्या प्रजापति
- 58 The River Remembers - Basavraj Kulali
- 59 ए! वक्रत मुझे मेरा बचपन लौटा दे - मोहम्मद इमरान अंसारी
- 60 Colour Photography - Ramakrishna and Nandu A
- 61 Special Feature - Signing of Memorandum of Understanding with NBCC (India) Ltd
- 62 Pahalgam Reflections: A Journey of Healing - Daita Ujwala
- 64 उत्तर भारत की सुनहरी गलियों में: एक पारिवारिक यात्रा का सफरनामा - दीपक ओझा
- 68 Fun corner
- 69 Breezing Through Japan's Gentle Autumn Breeze - Safin Ahmed S
- 73 PRSI National Awards 2025
- 74 पहाड़ों की पुकार - एक सप्ताह हिमालय की गोद में - कुरुबा भवानी
- 77 Cartoon - Salin K P and Prashanth K
- 78 Econ Speak - Union Budget impact on Banking sector
- 83 Homage
- 84 Book Review - Manisha Manohar

प्रबंध निदेशक व
मुख्य कार्यकारी अधिकारी
का संदेश



MD & CEO's Message

प्रिय केनराइट्स,

हम सभी आगामी तिमाही में प्रवेश करने की तैयारी में हैं। मैं इस अवसर पर आप सभी को हमारे संस्थान के प्रति समर्पण, दृढ़ता और अटूट प्रतिबद्धता के लिए व्यक्तिगत रूप से धन्यवाद देना चाहता हूँ। शाखाओं, कार्यालयों और विभिन्न विभागों में आपके सामूहिक प्रयासों ने बैंक को निरंतर बेहतर से बेहतरीन एवं उत्कृष्टतापूर्ण प्रदर्शन करने, हमारे संस्थान के प्रति ग्राहकों के विश्वास को और अधिक मजबूत करने तथा संस्थान के मूल्यों को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हमने कारोबार के क्षेत्र में जो प्रगति हासिल की है, वह केवल आंकड़ों को ही प्रतिबिंब नहीं करती है, अपितु यह हमारी समस्त टीम द्वारा प्रतिदिन प्रदर्शित किए गए सामूहिक प्रयास, कड़ी मेहनत, कारोबारी दृष्टिकोण और कारोबार के प्रति अपनेपन की भावना को भी प्रदर्शित करती है।

भविष्य के कालखंड हमारे लिए अक्सर अवसर और चुनौतियाँ दोनों ही साथ लेकर आते हैं। एक संगठन के रूप में, हम स्पष्ट रणनीतिक दिशा का अनुसरण करते हुए, ससमय निर्णय लेकर, उन्नत डिजिटल और तकनीकी सुविधाओं और निरंतर क्षमता निर्माण के माध्यम से आप सभी को सहयोग प्रदान करने के लिए पूर्णरूपेण प्रतिबद्ध हैं। हमारा बैंक प्रबंधन इस प्रकार के वातावरण का निर्माण करने पर जोर देता है, जो हमारे कर्मचारियों को अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने में सहयोग प्रदान करता है। साथ ही साथ यह भी प्रयास किया जाता है कि इस प्रकार के वातावरण, हमारी परिचालनगत दक्षता को बढ़ाने, जोखिम प्रबंधन की क्षमता का निर्माण करने और उत्कृष्ट ग्राहक सेवा प्रदान करने में सार्थक भूमिका अदा करें।

आगामी तिमाही में, मुख्य रूप से हमारा जोर प्रमुख क्षेत्रों में कारोबारी वृद्धि को सुदृढ़ करने, ग्राहक संबंधों को और अधिक

Dear Canarites,

As we prepare to enter the upcoming quarter, I would like to take this opportunity to personally thank each one of you for your dedication, perseverance and unwavering commitment to Canara Bank. Your collective efforts across branches, offices and verticals have enabled the Bank to deliver consistent performance, strengthen customer trust and uphold the values that define our institution. The progress we have achieved is not merely a reflection of numbers, but of the hard work, professionalism and sense of ownership demonstrated by our teams every day.

The months ahead will present both opportunities and challenges. As an organisation, we are fully committed to supporting you through clear strategic direction, timely decision-making, enhanced digital and technological enablement and continuous capacity building. Management remains focused on creating an ecosystem that empowers our employees to perform at their best, while ensuring that operational efficiency, risk discipline and customer service excellence remain at the core of our efforts.

In the upcoming quarter, our emphasis will be on strengthening business growth in key segments, deepening customer relationships,

सुदृढ़ करने, कम लागत वाली जमा राशि जुटाने में सुधार करने और आस्ति गुणवत्ता एवं प्रबंधन के उच्चतम मानकों को बनाए रखने पर रहेगा। मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि ग्राहक-केंद्रित मानसिकता के साथ काम करते हुए, टीम भावना के साथ सतत विकास में योगदान देने वाले अवसरों की सक्रिय रूप से पहचान करें। हमारी रणनीति को ज़मीनी स्तर पर सार्थक परिणामों में परिवर्तित करने में आप समस्त कर्मचारियों की भूमिका महत्वपूर्ण है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम समग्रता एवं एकजुटता के सार्थक उद्देश्यों और साझा जिम्मेदारी की भावना के साथ, भविष्य की चुनौतियों को अवसर में तबदील करते हुए केनरा बैंक को एक मजबूत, भरोसेमंद और प्रगतिशील सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक के रूप में सर्वोत्कृष्ट पहचान दिलाने में सक्षम होंगे।

इन्हीं मंगलकामनाओं के साथ, बैंक की सफलता के ध्वज को उत्कृष्टता के नए शिखर पर फहराते रहें।

रहें संग, बढ़ें संग!!!

आप सभी को ढेर सारी शुभकामनाएँ!

हरदीप सिंह अहलूवालिया

प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी (प्रभारी)

improving low-cost deposit mobilisation and maintaining the highest standards of asset quality and governance. I urge each one of you to continue working with a customer-centric mindset, collaborate across teams, and proactively identify opportunities that contribute to sustainable growth. Your role is vital in translating our strategy into meaningful outcomes on the ground.

Together, with unity of purpose and shared responsibility, I am confident that we will successfully navigate the path ahead and further reinforce Canara Bank's position as a strong, trusted and progressive Public Sector Bank.

Keep the Bank's flag flying high.

Together We Can!!!

Wish you all the very best

Hardeep Singh Ahluwalia

Managing Director & CEO (I/C)

संपादकीय



Editorial

प्रिय साथियों,

केनरा बैंक में विकास का आकलन केवल तुलन पत्र व दिए गए कारोबारी लक्ष्य की प्राप्ति से ही नहीं की जाती है, अपितु यह उत्कृष्ट कार्य-संस्कृति के माध्यम से कर्मचारियों के सर्वांगीण विकास की जाती है। इसी की छाप हमारे साथियों द्वारा रचित रचनाओं के माध्यम से प्रदर्शित की गई है। श्रेयस प्रतियोगिता इस विकास की कहानी के परिचायक के रूप में कार्य करती है। यह कर्मचारियों को एक बेहतर और गतिशील मंच प्रदान करते हुए अपने पेशेवर पदनाम से ऊपर उठकर अपने वास्तविक, यथार्थ, रचनात्मक स्वरूप को प्रतिबिंबित करती है। हमारी श्रेयस पत्रिका उत्कृष्टता और सकारात्मकता के बेहतरीन समन्वय के साथ हमारी व्यक्तिगत प्रतिभाओं के अंतर्मन व संभावनाओं की तलाश करने का स्वर्णिम मंच है। समग्र भारतवर्ष के प्रत्येक संवर्ग से इस प्रतियोगिता में शामिल होना अपने आप में महत्वपूर्ण है। यह कर्मचारियों में चिंतन-मनन की एक शक्तिशाली उत्प्रेरक के रूप में भी कार्य करती है। कर्मचारीवृंद अपनी रचनाओं जैसे कविता, कहानियों या अपने अभिनव विचार के माध्यम से समरसता व समग्रता के साथ विविधता का भाव प्रेषित कर हमारी पत्रिका को उत्कृष्ट बनाते हैं। यही विविधता हमारी सबसे बड़ी ताकत है।

श्रेयस प्रतियोगिता विजेताओं को प्रशंसा प्रदान करने के साथ-साथ गहरी संस्थागत सोच पर भी ज़ोर देती है। हमारी संस्था की पहचान केवल एक बैंक के रूप में ही नहीं, बल्कि कर्मचारियों के समग्र विकास हेतु एक बेहतर कार्यस्थल के रूप में की जाती है। कार्यालय समय के पश्चात अपने हुनर, रुचि और शौक को अपनी रचनाओं में परिवर्तित कर अपने आप को आत्मसंतोष और प्रेरणा के भाव को जगृत करते हुए कार्यस्थल को सकारात्मक सोच में परिवर्तित करना अपने आप में महत्वपूर्ण उपलब्धि है। वे एक प्रकार से अन्य कार्मिकों के लिए आदर्श कर्मचारी के रूप में अपने आप को साबित करने में सक्षम होते हैं और एक प्रभावी पेशेवर वातावरण निर्माण में प्रेरक के रूप में कार्य करते हैं।

यह विशेष संस्करण पुरस्कार विजेताओं के लिए अभिलेख से अधिक आत्म-अभिव्यक्ति के आनंद से सराबोर सामूहिक उत्साह व प्रयास का उत्सव है जो हमारे वास्तविक उत्कृष्टता को परिभाषित करता है। जैसे-जैसे हम अपनी नैसर्गिक प्रतिभा के इन पृष्ठों को पलटते हैं, वैसे-वैसे हम अपने संस्थान की उस भावना से संपुष्टित जोश, उमंग और उत्साह से साक्षात्कार करते हैं।

मैं आशा करती हूँ कि आपको यह विशेषांक अवश्य पसंद आएगा। इस अंक में प्रकाशित रचनाओं के बारे में आपकी प्रतिक्रियाओं की हमें प्रतीक्षा रहेगी। आप अपनी प्रतिक्रियाएं हमें केननेट के एचएम एंड एल के वेबपेज पर जाकर या hohml@canarabank.com पर ईमेल कर या 080 - 22233480 पर दूरभाष के माध्यम से दे सकते हैं।

अगाध प्रशंसा तथा कृतज्ञता के साथ

प्रियदर्शिनि आर
संपादक

Dear Colleagues,

Growth at Canara Bank has never been a mere calculation of balance sheets or quarterly targets; it is a narrative written by the passion and possibilities of our people. The Shreyas Contest serves as the definitive chapter of this story, transforming the workplace into a dynamic stage where "Canarites" transcend their professional designations to reveal their true, creative selves. Named for excellence and positivity, Shreyas is an invitation to explore the "what ifs" and "could be-'s" of our individual talents. From every corner of India and across every cadre, this contest serves as a powerful equalizer, proving that whether through a brushstroke, a poem, or an innovative idea, our diversity is our greatest strength.

Beyond the applause for the winners, Shreyas highlights a deeper institutional philosophy: that a bank is not just a place to work, but a community designed for holistic growth. By celebrating the stories of passion pursued after office hours, we acknowledge that a motivated, seen and appreciated employee is the true engine of an effective professional environment.

This special edition is more than a record of prize-winning work; it is a celebration of the joy of self-expression and the collective energy that defines us. As we flip through these pages of talent, we celebrate the enduring Canara spirit—one that continues to spark, shine, and grow stronger, together.

Hope you enjoy reading this special edition. As we love to hear from you, please drop in your feedback/ comments by visiting our HM&L Webpage in Cannet / or as mail to hohml@canarabank.com / or you can always call us at 080 - 22233480.

With profound admiration and gratitude

Priyadarshini R
Editor

Farewell message of MD & CEO, Sri K. Satyanarayana Raju



Dear Canarites,

It is with a sense of immense professional fulfilment and deep gratitude that I announce the conclusion of my tenure as the Managing Director & Chief Executive Officer of Canara Bank.

Serving the bank in the esteemed capacity of Executive Director and Managing Director and Chief Executive Officer has been a singular honour. I extend my sincere appreciation to the Board of Directors, the Government of India, and every member of the staff for the unwavering support rendered throughout my term.

Our collective focus on robust governance and strategic growth has yielded significant dividends. I wish to formally recognize the key areas of institutional strengthening achieved during this period - We have successfully consolidated the Bank's position, ensuring enhanced capital adequacy and sustained asset quality, vital metrics for institutional stability. The successful integration and deployment of advanced digital platforms with the help of DnA have been pivotal in optimizing operational efficiencies and elevating service delivery standards. Our diligence in adhering to stringent regulatory frameworks has upheld the Bank's reputation for integrity and transparency in the

financial markets. The accomplishments recorded are a testament to the collective professionalism, discipline, and dedication demonstrated across all offices.

As I transit from this role, my utmost confidence resides in the capabilities and commitment of the entire workforce. The continued success of Canara Bank hinges upon the smooth transition and seamless support extended to the incoming leadership. I formally urge all staff members to maintain the momentum of performance and fully collaborate with the new incumbent to ensure the Bank continues its trajectory of strategic growth and fulfilment of its mandate to the nation.

Thank you, once again, for your trust, your enthusiasm, and the countless hours you have dedicated to the Bank. The memories of our shared success and camaraderie will forever remain etched in my heart. While I may be stepping down from my official role, I will always remain a well-wisher and a proud member of the Canara Bank family. I wish you and your families the very best of health, happiness, and continued success.

With Best wishes

K Satyanarayana Raju

श्रेयस की टीम आपके सुखद सेवानिवृत्त जीवन की कामना करती है।

Shreyas team wishes him a happy retirement,
"Let the Golden years be bright, happy and fulfilling".

I am honoured and humbled on being promoted to the position of Chief General Manager in our esteemed institution, Canara Bank. This important milestone in my professional journey brings with it a deep sense of gratitude and an enhanced responsibility to contribute more effectively to the Bank's performance and growth. My association with the Bank over the past three decades has been a journey shaped by discipline, consistency, learning, unlearning, relearning and collaboration.



Serving the Bank across diverse regions and functions has provided me with a comprehensive understanding of operational realities, risk management and performance delivery in a dynamic banking environment. Each assignment has reinforced my belief that sustained performance is driven by strong systems, prudent decision-making, customer focus and consistent adherence to the Bank's core values. Canara Bank's emphasis on accountability, transparency and teamwork has been the central theme to achieve stability and resilience even in challenging times.

I sincerely acknowledge the guidance, confidence and support extended by the Bank's leadership, seniors, mentors and colleagues. Their direction and trust have played a vital role in preparing me to assume higher responsibilities. I also place on record my appreciation for the dedication and commitment of my teams, whose focused efforts have been instrumental in delivering results.

In this role, I look forward to contributing towards strengthening performance parameters, improving operational efficiency, enhancing governance and supporting sustainable growth. I remain committed to working with clarity, discipline and purpose to further the Bank's objectives and long-term success.

With warm regards,

Kalyan Mukherjee
Chief General Manager

I deem it a privilege bestowed upon me and accept with all humility my elevation to General Manager in our esteemed organisation.

I take this opportunity to thank all my seniors, colleagues, family and friends who have played a crucial role in chiselling and shaping my professional skills to rise to this position.

In the past 3 decades major changes have happened in our Banking Industry and the future is slated to move further towards a hipper digital model Banking with AI playing an integral part.

At the same time, we should hold tight our founding principles, basic ethics and integrity in our day to day working, ensure customer satisfaction and follow the dictum of Banking with a smile.

Together we can make it happen from Better to Best.

Best wishes and regards

Y Shankar
General Manager



I am indebted to our great organization for elevating me to the position of General Manager. I thank my seniors who have encouraged and motivated me to take higher responsibilities and my colleagues for their valuable support. I joined Canara Bank in the year 1998 as an AEO. In my 27 years of service, our Bank has provided me with abundant opportunities to head Branches and Regional Office.



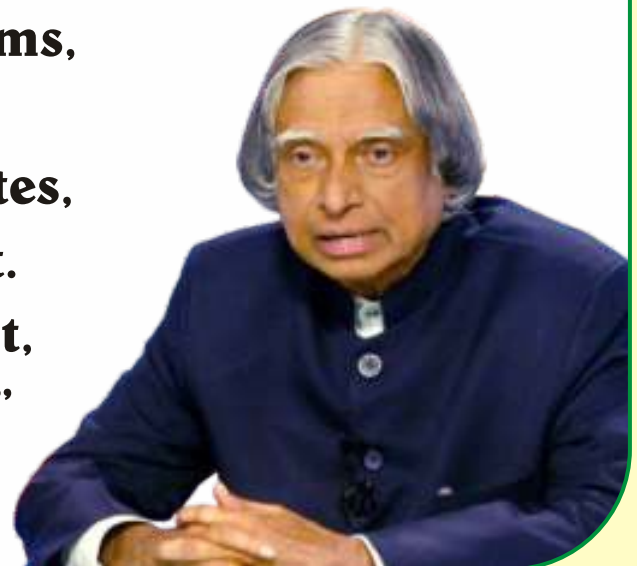
Our Bank has a rich legacy of trust, integrity and service. With continued efforts and innovative spirit, we will continue to thrive and achieve greater heights. Together let us ensure journey of excellence, commitment and achievement

Wishing all Canarites success and happiness

Warm regards,

Sheeba Sahajan
General Manager

**“When learning is purposeful,
creativity blossoms.
When creativity blossoms,
thinking emanates.
When thinking emanates,
knowledge is fully lit.
When knowledge is lit,
economy flourishes.”**
– A.P.J. Abdul Kalam





Shreyas Contest 2025
1st Prize
English Essay

The Vigilant Eye: How to Spot and Stop Fraud



Daita Ujwala
Officer
Tirupati CO

Working in banking for over a decade, I've witnessed first-hand how fraud has transformed from simple cheque forgeries to complex digital schemes that would make your head spin. What hasn't changed, though, is the power of human intuition combined with proper training. This essay draws from real experiences in the field to show how we can build that crucial "sixth sense" for spotting trouble before it costs us - and our customers - dearly. The numbers don't lie: fraud losses continue climbing year after year, but the institutions with the most vigilant staff consistently perform better at prevention. It's not just about following procedures anymore; It's about developing that alert eye (mechanism) that can spot what doesn't belong, even when everything looks perfectly normal on the surface.

Let me tell you something that might surprise you – most fraud doesn't happen because of sophisticated hacking or elaborate schemes you see in movies. It happens because someone wasn't paying attention at the right moment. That's both the bad news and the good news. The bad news? We're often our own worst enemy when it comes to fraud prevention. The good news? This means we have more control than we think. I've seen colleagues catch million-rupee frauds simply because they noticed a customer seemed "off" during a routine transaction. I've also seen obvious red flags get missed because someone was having a busy day and didn't take that extra moment to really look. The difference between these outcomes often comes down to one thing: vigilance. But here's what makes this challenging – fraud isn't what it used to be. Back in the day, you could spot a forged document pretty

easily. The paper felt wrong, the ink looked fresh, or the handwriting was shaky. Today's fraudsters have access to the same technology we do. They can create documents that look absolutely perfect, complete with watermarks and security features. What they can't fake, however, is human behaviour. And that's where our opportunity lies. The digital revolution has created new vulnerabilities we never had to worry about before. Customers can open accounts online, transfer money with a few clicks, and conduct complex transactions without ever setting foot in a branch. While this convenience is wonderful for legitimate customers, it's also opened doors for fraudsters that we're still learning how to close.

After years of dealing with customers, you develop an instinct for what normal looks like. A genuine customer walks in with confidence about their own account. They know their address, their phone number, their recent transactions. They might not remember their account number off the top of their head, but they don't panic when you ask for ID. Fraudsters, on the other hand, often give themselves away through their behaviour long before you even look at their documents. I remember one case where a "customer" came in to withdraw a large sum. Everything looked perfect on paper – the ID matched our records, even the signature looked right. But something felt wrong. The person kept checking their phone, seemed nervous about routine questions, and kept looking toward the exit. That nagging feeling made me take a second look at everything. Turns out, the account holder was sitting in a car outside, being forced to

provide the information under threat. We stopped a robbery in progress simply because someone seemed too anxious for a routine withdrawal.

This taught me that documents can lie, but behaviour rarely does. Now I pay attention to:

- ◆ How comfortable someone seems with basic questions about their account
- ◆ Whether they seem familiar with our normal procedures
- ◆ If they're pushing for unusual speed or trying to avoid standard verification steps
- ◆ Body language that doesn't match the situation

Digital Age Red Flags

Online and mobile banking have created entirely new categories of fraud to watch for. Customers' digital behaviour patterns are just as telling as their in-person behaviour, sometimes more so. I've noticed that legitimate customers develop habits with their digital banking. They typically access accounts from the same devices, at similar times, and perform transactions that fit their normal patterns. When these patterns suddenly change dramatically – especially combined with unusual transaction requests – it's worth investigating.

Phone calls requesting account information are particularly tricky. Fraudsters have become incredibly sophisticated at impersonating bank officials, government agencies, and even family members. The key is remembering that legitimate institutions already have your information and won't ask you to provide it over the phone.

When you suspect fraud but aren't certain, the response needs to be carefully balanced. You can't accuse an innocent customer of fraud, but you also can't let a real fraud proceed while you figure things out. I've developed a few techniques over the years for buying time when my instincts are telling me something's wrong: "Our system seems to be

running a bit slow today – let me just double-check this transaction for you." This gives me time to verify details without making the customer (or potential fraudster) suspicious. "For transactions of this size, I need my supervisor to review the paperwork – just bank policy, you understand." This brings another set of eyes into the situation and provides backup if things go wrong. "I want to make sure we process this correctly for you – let me just verify a few details." This allows for additional questioning that might reveal inconsistencies. The key is maintaining a helpful, professional demeanour while giving yourself the time and space to properly assess the situation.

Every fraud attempt teaches us something, whether we stop it or not. I've learned to document not just what happened, but what made me suspicious in the first place. This information helps train other staff and improves our overall detection capabilities.

The best documentation captures:

- ◆ Exactly what first raised suspicions.
- ◆ The sequence of events during the incident.
- ◆ Which verification steps were taken and their results.
- ◆ How the situation was resolved and what we learned that might help next time.

This isn't just paperwork – it's intelligence that helps protect against future attempts.

The skills we use at work apply to our personal lives too, and frankly, we need them more than ever.

I've started treating my personal financial security with the same vigilance I use at work. This means:

- ◆ Consciously reading those text messages about account activity instead of just dismissing them.
- ◆ Being suspicious of any unexpected contact asking for financial information.

- ♦ Paying attention to my surroundings when using ATMs or making transactions.
- ♦ Regularly checking account statements for anything unusual.

The romance scams particularly worry me because they're so psychologically sophisticated. I've seen intelligent, educated people lose their life savings to someone they never met in person. The emotional manipulation involved makes these schemes especially dangerous. My rule has become: if someone I've never met in person asks for money, no matter how compelling their story, the answer is no. No exceptions, no sob stories, no emergencies that can't wait for proper verification.

We're living through an interesting time where technology is both our greatest asset and our biggest vulnerability in fraud prevention. The automated systems we use can spot patterns and anomalies that humans might miss, but they can't read body language or sense when something just doesn't feel right. I've learned to work with our technology rather than rely on it completely. When the system flags something as suspicious, I take it seriously and investigate thoroughly. But I also trust my instincts when something seems wrong, even if the computers say everything's fine. The best outcomes happen when human intuition and technological analysis work together. The machines are excellent at processing large amounts of data and identifying statistical anomalies. Humans are better at understanding context, reading behaviour, and making judgment calls in ambiguous situations.

Fraud prevention is like an ongoing chess match – as soon as you figure out one strategy, your opponent's develop new ones. What worked last year might not work today, and what works today definitely won't work forever. I make it a point to stay current with new fraud trends, attend training sessions, and learn from colleagues' experiences. The fraudsters are constantly evolving their techniques, so we need to evolve ours too. Some of the most valuable learning comes from mistakes – both our own and others'. Every successful fraud teaches us something about our vulnerabilities. Every near-miss shows us what to watch for next time. The key is being honest about what went wrong and using that knowledge to improve.

After all these years in banking, I'm convinced that effective fraud prevention comes down to three things: staying alert, trusting your instincts, and having good procedures to back you up when something goes wrong. The "The Vigilant Eye" isn't something you're born with – it's a skill you develop through experience, training, and paying attention to what's happening around you. It's about noticing when something doesn't fit the pattern, even if you can't immediately put your finger on what's wrong. The technology will keep improving, the regulations will keep evolving, and the fraud schemes will keep getting more sophisticated. But the fundamentals won't change: stay alert, trust your instincts, and never forget that behind every transaction is a real person whose financial security depends on us doing our jobs well.

**“Imagination is the beginning of creation.
You imagine what you desire,
you will what you imagine, and at last,
you create what you will.”**

– George Bernard Shaw





Shreyas Contest 2025
1st Prize
Hindi Essay

सतर्क दृष्टिकोणः धोखाधड़ी की पहचान व रोकथाम।



प्रदीप राज एस

वरिष्ठ प्रबंधक
प्रधान कार्यालय

पृष्ठभूमि

भारतीय बैंकिंग क्षेत्र स्वतंत्र नियामक एजेंसियों की देखरेख में एक मज़बूत ढाँचे के अंतर्गत संचालित होता है। भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में सतर्कता वित्तीय अखंडता और स्थिरता बनाए रखने का एक आधारभूत स्तंभ है। कुछ नियामक प्राधिकरण इस प्रकार हैं:

भारतीय रिज़र्व बैंक (आरबीआई), भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (सेबी), भारतीय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (आईआरडीएआई), और पेंशन निधि विनियामक और विकास प्राधिकरण (पीएफआरडीए)।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि कोर बैंकिंग व्यवसाय – जैसे जमा स्वीकार करना, ऋण देना, विवेकपूर्ण मानदंड (जैसे पूंजी पर्याप्तता अनुपात, एनपीए प्रावधान) और समग्र वित्तीय स्थिरता के लिए प्राथमिक नियामक भारतीय रिज़र्व बैंक (आरबीआई) है।

सेबी, बैंक को एक सूचीबद्ध कंपनी के रूप में और प्रतिभूति बाज़ार में उसकी गतिविधियों को नियंत्रित करता है। एक बार जब किसी बैंक के शेयर स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध हो जाते हैं, तो उसे सेबी के सभी प्रासंगिक नियमों, विशेष रूप से लिस्टिंग ऑब्लिगेशन्स एंड डिस्क्लोजर रिक्वायरमेंट्स (LODR) रेगुलेशन, 2015 का पालन करना अनिवार्य हो जाता है।

बीमा क्षेत्र में, किसी बैंक को बीमा उत्पाद बेचने के लिए IRDAI से कॉर्पोरेट एजेंसी (CA) या बीमा ब्रोकर लाइसेंस प्राप्त करना आवश्यक है। कॉर्पोरेट एजेंट मॉडल के अंतर्गत, बैंकों को आम तौर पर ग्राहकों को अपने उत्पाद प्रदान करने

के लिए अधिकतम संख्या में बीमा कंपनियों (आमतौर पर तीन जीवन बीमा, तीन सामान्य बीमा और तीन स्वास्थ्य बीमा कंपनियाँ) के साथ साझेदारी करने की अनुमति होती है। इसलिए, बैंकिंग क्षेत्र भी IRDA के नियमों के अधीन है।

पेंशन निधि नियामक एवं विकास प्राधिकरण (पीएफआरडीए) भारत में मुख्य रूप से राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (एनपीएस) और अटल पेंशन योजना (एपीवाई) का विनियमन करता है। भारतीय बैंक जब एनपीएस संरचना के अंतर्गत मध्यस्थ के रूप में कार्य करते हैं, तो उनका विनियमन पीएफआरडीए द्वारा महत्वपूर्ण रूप से किया जाता है।

यहां हम कह सकते हैं कि सेबी, आरबीआई और आईआरडीए के विनियम स्वयं सीधे तौर पर सतर्कता प्रक्रिया का निर्माण नहीं करते हैं; बल्कि, ये विनियामक निकाय विनियम लागू करते हैं, जिसमें उनके द्वारा निगरानी किए जाने वाले बैंकों के भीतर सतर्कता तंत्र और आंतरिक नियंत्रण के प्रावधान शामिल होते हैं, इसलिए सतर्कता प्रक्रिया स्वयं ही विनियमित क्षेत्रों की अखंडता सुनिश्चित करने के लिए बैंकों के भीतर कदाचार, भ्रष्टाचार या गैर-अनुपालन को रोकने और संबोधित करने के लिए विनियमों द्वारा अनिवार्य या निर्देशित गतिविधियों और प्रक्रियाओं का एक विशिष्ट समूह बन जाती है।

सतर्कता की परिभाषाएँ।

केंद्रीय सतर्कता आयोग (सीवीसी) के अनुसार, "सतर्कता" सामान्यतः सतर्क और सजग रहने की क्रिया को संदर्भित करती है, विशेष रूप से सरकारी संगठनों और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में भ्रष्टाचार और कदाचारों को रोकने और उनका पता लगाने में। इसमें जाँच, निगरानी और संभावित

समस्याओं के समाधान हेतु प्रणालीगत सुधार सहित कई गतिविधियाँ शामिल हैं।

केंद्रीय सतर्कता आयोग (सीवीसी) की स्थापना

भ्रष्टाचार निवारण पर के. संथानम समिति की सिफारिशों के आधार पर 1964 में स्थापित सीवीसी को 2003 में सीवीसी अधिनियम के अधिनियमन के साथ वैधानिक दर्जा प्राप्त हुआ। यह भारत में सर्वोच्च सतर्कता संस्थान के रूप में कार्य करता है, कार्यकारी नियंत्रण से स्वतंत्र रूप से कार्य करता है, तथा सतर्कता मामलों पर केंद्र सरकार के लिए मुख्य सलाहकार और मार्गदर्शक की भूमिका निभाता है।

सीवीसी का अधिकार क्षेत्र बैंकिंग क्षेत्र में काफी विस्तृत है, जिसमें सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (पीएसबी) के स्केल चार और उससे ऊपर के अधिकारियों के साथ-साथ आरबीआई, नाबार्ड और सिडबी के ग्रेड डी और उससे ऊपर के अधिकारी भी शामिल हैं। इसके अलावा, यह भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 से संबंधित मामलों में केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) के कामकाज पर अधीक्षण भी करता है।

निबंध का दायरा ।

इस निबंध का उद्देश्य उन प्रणालियों और प्रक्रियाओं पर ध्यान केंद्रित करना है, जहां बैंक कदाचार, भ्रष्टाचार या गैर-अनुपालन क्षेत्रों का पता लगा सकते हैं और इन घटनाओं को रोकने के लिए निवारक सतर्कता उपायों की पहचान कर सकते हैं।

बैंकों में प्रणालियों और प्रक्रियाओं की खामियों की पहचान करने के प्रमुख क्षेत्र:

बैंकिंग क्षेत्र में भ्रष्टाचार और गैर-अनुपालन से ग्रस्त प्रमुख क्षेत्रों की पहचान इस प्रकार की गई है:

➤ **खरीद और अनुबंध:** सरकारी ई-मार्केटप्लेस (जीईएम पोर्टल) के साथ खरीद प्रक्रियाएँ सुव्यवस्थित होने के बावजूद, कई बैंकों में ई-बोली और रिवर्स ई-नीलामी, निविदा प्रणाली जैसी कई प्रक्रियाएँ अभी भी स्पष्ट नहीं हैं। गतिविधियों की आउटसोर्सिंग और अनुबंध प्रबंधन

कानूनी सहायता प्रणालियों में अभी भी उपयोगकर्ता समूहों, खरीद विभागों, विक्रेताओं और संगठन के भीतर शीर्ष प्रबंधन टीम समितियों के बीच एकीकृत तंत्र नहीं है।

➤ **कंसोर्टियम खाते:** प्रभावी निगरानी, विभिन्न ऋणदाताओं के बीच समन्वय और उधारकर्ताओं के कदाचार व धोखाधड़ी की उच्च संभावना जैसी चुनौतियाँ। इन मुद्दों ने ऐतिहासिक रूप से प्रणाली में गैर-निष्पादित आस्तियों (एनपीए) की वृद्धि में योगदान दिया है।

➤ **क्रेडिट सूचना कंपनियों की रिपोर्टिंग प्रक्रिया:** भारतीय बैंकों में क्रेडिट सूचना कंपनियाँ (सीआईसी) मुख्य रूप से क्रेडिट डेटा के हेरफेर, दुरुपयोग या गलत रिपोर्टिंग के इर्द-गिर्द घूमती हैं, जिससे महत्वपूर्ण वित्तीय अपराध या स्टाफ जवाबदेही के मुद्दे हो सकते हैं। उधारकर्ता डेटा जैसे खाता जानकारी, पुनर्भुगतान स्थिति, सीआईसी को राइट-ऑफ विवरण देना सतर्कता का मुद्दा हो सकता है। सभी कंसोर्टियम सदस्यों के बीच उधारकर्ता के बारे में प्रारंभिक चेतावनी संकेतों (ईडब्ल्यूएस) को समय पर साझा करने में लगातार विफलता रही है, जिससे उधारकर्ता विभिन्न बैंकों के बीच की कमियों का फायदा उठा पाते हैं।

➤ **एंटी मनी लॉन्ड्रिंग अलर्ट:** जब कोई धोखाधड़ी या उच्च-मूल्य वाले एनपीए का पता चलता है, तो बैंक को आंतरिक जाँच करानी चाहिए। यदि जाँच में कर्मचारियों की मिलीभगत, लापरवाही, या दुर्भावनापूर्ण इरादों का पता चलता है, जिसके कारण एएमएल विफल हुआ, तो मामले को सतर्कता मामले में बदल दिया जाता है।

➤ **अपवाद रिपोर्टिंग:** जब कोई लेनदेन या खाता गतिविधि पूर्वनिर्धारित या निर्धारित सीमा से विचलित होती है, तो बैंक के कोर बैंकिंग सिस्टम (CBS) या अन्य निगरानी सॉफ्टवेयर (जैसे एंटी-मनी लॉन्ड्रिंग/AML सिस्टम) द्वारा अपवाद रिपोर्ट स्वचालित रूप से तैयार की जाती हैं। इन अपवादों में थोक नकद लेनदेन, निष्क्रिय खातों का विवरण, ओवरड्राफ्ट संबंधी समस्याएँ, प्रसंस्करण शुल्क में छूट, ग्राहक द्वारा की गई जाँच में चूक, उदारीकृत धन प्रेषण योजना में अनियमितताएँ शामिल हो सकती हैं।

- **डिजिटल बैंकिंग:** बैंक कर्मचारियों की बाहरी धोखाधड़ियों के साथ मिलीभगत या डिजिटल रिकॉर्ड और सिस्टम में आंतरिक हेरफेर। उदाहरण: सिम स्वैप/ओटीपी धोखाधड़ी, फिशिंग और साइबर हमले, डिजिटल वॉलेट की राशि में कमी आदि।
 - **प्रबंधन सूचना प्रणाली और डेटा विश्लेषण:** वित्तीय संकट को छिपाने या तथ्य आधारित विवरण को छिपाने के लिए आंतरिक डेटा में हेरफेर, जैसे कि बैलेंस शीट, एनपीए डेटा, काल्पनिक ऋण सृजन और लक्ष्य प्राप्ति के लिए डेटा पैडिंग।
 - **निरीक्षण और लेखा परीक्षा:** सीमित जांच और संतुलन, अवलोकन समापन और पूर्व निर्धारित जांच सूची जैसे प्रश्न और उत्तर देने के पारंपरिक तरीके, सूचना प्रणाली लेखा परीक्षा के पुराने तरीके, प्रणालियों का दुरुपयोग, झूठे दस्तावेज, कर्मचारियों के प्रशिक्षण की कमी और कमजोर बाहरी लेखा परीक्षकों की भर्ती आदि।
 - **सचिवीय व्यवहार:** धोखाधड़ी में कंपनी सचिव द्वारा बोर्ड और समिति की बैठकों के कार्यवृत्त को गलत तरीके से प्रस्तुत करना या अनुचित तरीके से दस्तावेजित करना शामिल हो सकता है ताकि अवैध लेनदेन को छुपाया जा सके या यह दिखाया जा सके कि धोखाधड़ी वाले निर्णय को बोर्ड की उचित स्वीकृति प्राप्त थी। संबंधित लेनदेन का प्रकटीकरण और अनुमोदन न करना एक उदाहरण है।
 - **भर्ती और कैरियर विकास:** मानव संसाधन जीवनचक्र के प्रत्येक चरण में भाई-भतीजावाद, भ्रष्टाचार और विवेकाधिकार के दुरुपयोग को रोकने पर प्राथमिक ध्यान दिया जाएगा। प्रश्नपत्रों का लीक होना, अंकों में हेराफेरी, पक्षपातपूर्ण साक्षात्कार और अयोग्य कर्मचारियों की पदोन्नति को रोका जाएगा।
- सतर्कता के प्रणालीगत सुधार और निवारक उपाय**
- **कंसोर्टियम खातों से संबंधित उपाय:** बैंकों को संभावित धोखाधड़ी वाले खातों की वास्तविक समय पर निगरानी के लिए कोर बैंकिंग सॉल्यूशंस (सीबीएस) के साथ एकीकृत एक मज़बूत प्रारंभिक चेतावनी संकेत (ईडब्ल्यूएस) ढाँचा लागू करना होगा। संकटग्रस्त संपत्तियों के लिए एक अंतर-ऋणदाता समझौता यह सुनिश्चित करता है कि सभी कंसोर्टियम सदस्यों पर बाध्यकारी ऋणदाताओं के बहुमत द्वारा अनुमोदित एक समाधान योजना को लागू किया जा सके, जिससे व्यक्तिगत बैंकों द्वारा वसूली प्रक्रिया में बाधा डालने की गुंजाइश कम हो।
 - **सीआईसी से संबंधित उपाय:** बैंकों और सीआईसी पर रिपोर्टिंग में देरी या अशुद्धि के लिए जुर्माना लगाया जा सकता है और त्रुटियों को सुधारने के लिए एक स्पष्ट प्रक्रिया होनी चाहिए। आरबीआई का आदेश है कि सीआईसी और ऋणदाता संस्थानों के पास ग्राहक शिकायत निवारण के लिए मज़बूत तंत्र होना चाहिए, जिसमें एक निश्चित अवधि से अधिक समय तक अनसुलझी शिकायतों के लिए मुआवज़ा भी शामिल हो।
 - **एएमएल उपाय:** सीवीसी द्वारा गठित बैंकिंग और वित्तीय धोखाधड़ी सलाहकार बोर्ड (एबीबीएफएफ) अक्सर एक निश्चित सीमा (वर्तमान में 50 करोड़ रुपये) से ऊपर के संदिग्ध बैंक धोखाधड़ी के लिए पहले स्तर की जांच प्रदान करता है, जिससे वास्तविक वाणिज्यिक त्रुटियों और आपराधिक या सतर्कता दोष से जुड़े मामलों के बीच अंतर करने में मदद मिलती है।
 - **अपवाद रिपोर्टिंग उपाय:** आरबीआई नियमित रूप से जोखिम और अनुपालन प्रबंधन में प्रणालीगत विफलताओं के लिए बैंकों पर भारी मौद्रिक जुर्माना लगाता है, जिसमें देर से या गलत धोखाधड़ी रिपोर्टिंग भी शामिल है। ऐसी रिपोर्टों के उदाहरण हैं रेड फ्लैग्ड अकाउंट/फ्रॉड बॉरोअर्स रिटर्न (आरएफए/फ्रॉड), एफएमआर-1 (फ्रॉड मॉनिटरिंग रिटर्न (एफएमआर) – सीआईएमएस में एससीबी), एफएमआर-3 (फ्रॉड अपडेट एप्लीकेशन (एफयूए) – सीआईएमएस में एससीबी), एफएमआर-4 (सीआईएमएस में बैंक डकैती, चोरी आदि पर रिटर्न (आरबीआर)) आदि।

- **डिजिटल बैंकिंग उपाय:** डिजिटल भुगतान के लिए पूर्व चेतावनी प्रणाली का कार्यान्वयन, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि संदिग्ध गतिविधि को चिह्नित किया जाए और संबंधित कर्मचारी द्वारा समय पर कार्रवाई की जाए। उपयुक्त कार्रवाई और त्वरित समाधान के लिए शिक्षादायक निवारण टीम का विवरण प्रदान करना। ग्राहकों को धोखाधड़ी रोकने के लिए एसएमएस या ऐप सक्षम सुविधाएं प्रदान करना।
- **एमआईएस और डेटा एनालिटिक्स संबंधी उपाय:** उद्यम-व्यापी विश्लेषणात्मक अनुप्रयोगों का कार्यान्वयन, रिपोर्टिंग के लिए त्रुटि सीमाओं के साथ उचित जाँच और संतुलन सुनिश्चित करना। आरबीआई ने पर्यवेक्षी डेटा गुणवत्ता सूचकांक (एसडीक्यूआई) शुरू किया है। एसडीक्यूआई (SDQI), पर्यवेक्षी रिटर्न दाखिल करने के संबंध में आरबीआई के दिशानिर्देशों के बैंकों द्वारा पालन का आकलन करता है। बैंकों की वित्तीय स्थिति का सटीक आकलन करने के लिए आरबीआई की ऑफ-साइट निगरानी और जोखिम-केंद्रित पर्यवेक्षण के लिए उच्च-गुणवत्ता वाला डेटा आवश्यक है।
- **निरीक्षण और लेखापरीक्षा संबंधी उपाय:** जोखिम-आधारित आंतरिक लेखापरीक्षा (आरबीआईए) केवल लेन-देन परीक्षण से आगे बढ़कर, संगठन के आंतरिक नियंत्रण, प्रशासन और कार्य-प्रवाह प्रक्रियाओं में निहित जोखिमों का आकलन, मापन और शमन करने पर केंद्रित होगी। लेन-देन में विचलन, असामान्य पैटर्न और विसंगतियों की पहचान करने के लिए सतत लेखापरीक्षा और डेटा विश्लेषण/खनन उपकरणों का कार्यान्वयन।
- **सचिवीय प्रक्रिया उपाय:** लेखा परीक्षा समिति/बोर्ड को मजबूत करना और सेबी एलओडीआर अधिनियम 2015 और सेबी आईसीडीआर अधिनियम 2018 का सख्त अनुपालन और यह सुनिश्चित करना कि बोर्ड सचिव एक योग्य कंपनी सचिव हो।
- **भर्ती और कैरियर विकास के उपाय:** प्रमाणित उम्मीदवारों के लिए अवसर प्रदान करें, विशेषज्ञ और सामान्यज्ञ के लिए भूमिकाओं के विभिन्न कैडर बनाएं। उम्मीदवारों की

पदोन्नति पात्रता की बहु-रेटर प्रतिक्रिया के साथ अर्ध-वार्षिक समीक्षा का आकलन किया जा सकता है।

चुनौतियाँ और आगे का रास्ता

- सभी प्रकार के ऋण स्वीकृत करने के मामले में, आवेदन पत्र के साथ प्रस्तुत किए जाने वाले सभी दस्तावेजों की एक स्पष्ट हस्ताक्षरित चेकलिस्ट होनी चाहिए।
- संपर्क बिंदु सत्यापन को उन शाखाओं के लिए अनिवार्य बनाया जाना चाहिए जहां वित्तीय और उद्यम स्तर का नेटवर्क आसानी से स्थापित किया जा सकता है।
- **अल्प अवधि में बढ़ी संख्या में शाखाओं का लेखा -** परीक्षण करने के स्थान पर, क्षेत्रीय कार्यालयों के आधार पर जोखिमग्रस्त शाखाओं का लेखा-परीक्षण किया जाना चाहिए, जहां बार-बार धोखाधड़ी होती है।
- प्रणालियों, दिशा-निर्देशों या प्रथाओं में खामियों और कमजोरियों के कारण और प्रभाव का अध्ययन करने के लिए अनुसंधान एवं विकास विभाग की स्थापना की जा सकती है।
- सभी स्तरों पर धोखाधड़ी के प्रति शून्य सहिष्णुता की संस्कृति।

उपसंहार।

भारतीय बैंकिंग क्षेत्र का लचीलापन पिछली असफलताओं से सीखने, उभरते खतरों के प्रति अनुकूलन करने और यह सुनिश्चित करने की उसकी क्षमता पर निर्भर करता है कि सतर्कता केवल एक व्हिसलब्लोअर नीति न हो, बल्कि संगठन की परिचालन संस्कृति और नैतिक मूल्य प्रणालियों में गहराई से समाहित हो। निरीक्षण और लेखा परीक्षा प्रक्रियाएँ, सूचना प्रौद्योगिकी संबंधी प्रक्रियाएँ, मानव संसाधन कार्यप्रणालियाँ भी व्हिसलब्लोअर नीति के अंतर्गत शामिल होनी चाहिए। याद रखें, धोखाधड़ी को रोकना अपने आप में एक स्वचालित निषेधाज्ञा है जो ऐसी घटनाओं के घटित होने के बाद वित्तीय और प्रतिष्ठा संबंधी नुकसान को रोकती है।



Shreyas Contest 2025
2nd Prize
Hindi Article

कासा बढ़त: प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ने और सफलता पाने की रणनीतियाँ



धीरज जुनेजा

अधिकारी

सुरत क्षे.का.

बैंकों की कुल जमा में बचत खाता, चालू खाता, सावधि जमा और आवर्ती जमा जैसे विभिन्न स्रोत हैं। इनमें से बचत और चालू खाता मिलकर कासा (CASA- Current Account Savings Account) बनाते हैं, जो किसी बैंक के लिए सबसे मूल्यवान जमा स्रोत है, क्योंकि इनकी लागत सबसे कम होती है। कासा शब्द अंग्रेजी वर्णमाला के चार अक्षर क्रमशः सी, ए. एस एवं ए. से मिलकर बना एक शब्द है, जिसे समेकित तौर पर बैंकिंग जगत में कासा के नाम से जाना जाता है। करेंट अकाउंट (चालू खाता) एवं सेविंग अकाउंट (बचत खाता) के पहले अक्षर से मिलकर बने इस शब्द की बैंकिंग दुनिया में खासी अहमियत है। करेंट अकाउंट (चालू खाता) और सेविंग अकाउंट (बचत खाता) ये दो ऐसे अकाउंट हैं, जिनके जरिए बैंकों को नियमित और खासी आमदनी होती है। इन खातों पर बैंक द्वारा भुगतान की जाने वाली ब्याज दर न्यूनतम होती है। बचत खातों पर सीमित ब्याज दिया जाता है, जबकि चालू खातों पर कोई ब्याज नहीं दिया जाता। इसके परिणामस्वरूप बैंक की औसत जमा लागत घटती है और निवल ब्याज मार्जिन बढ़ता है। यही कारण है कि कासा अनुपात (बैंक की कुल जमा राशि में चालू व बचत खातों का प्रतिशत) जितना अधिक होगा, बैंक की लाभप्रदता उतनी ही बेहतर होगी। चालू खाते में जहां खाताधारी को बैंक में रकम रखने के एवज में कोई ब्याज नहीं दिया जाता है। यहीं, बचत खाता में दिया जाने वाला ब्याज बहुत मामूली होता है।

चालू खाते एवं बचत खाते से जितना फायदा ग्राहकों को होता है उससे कहीं ज्यादा फायदा बैंक को होता है। फिर चाहे शुद्ध मुनाफे की बात हो या नियमित पूंजी की या फिर कारोबार में बढ़ोतरी की या बैंक के ब्रांडिंग की। चूंकि बैंकों का मुख्य काम है कम ब्याज पर पैसा जमा करना और ज्यादा ब्याज पर कर्जा देना ऐसे में 'कासा' यानि चालू खाता और बचत खाता

की रकम बैंकों के मुनाफे को कई गुना तक बढ़ा देती है। वजह ये है कि चालू खाते में जहां रकम पर बैंक कोई ब्याज नहीं देता वहीं बचत खाते पर दिया जाने वाला ब्याज बहुत ही कम होता है। दोनों ही स्थिति में बैंक को बहुत सस्ते में पूंजी हासिल होती है। जिससे बैंक ऊंची दरों पर कर्ज देकर ज्यादा बड़ा और शुद्ध मुनाफा कमाते हैं। चालू खाता और बचत खाता में रकम के आने और जाने का वक्त ज्ञात रहता है। इसके जरिए बैंकों को नियमित व निश्चित वक्त पर निश्चित राशि मिलती रहती है, इस वजह से पूंजी का प्रवाह बना रहता है। जिस पूंजी का इस्तेमाल बैंक अपने व्यापार को बढ़ाने में बखूबी करते हैं।

कासा जमा बढ़ाने में बैंकों को आने वाली चुनौतियाँ

भारत में बैंकिंग परिदृश्य में आमूल-चूल परिवर्तन हो रहा है, और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के सामने आने वाली प्रमुख चुनौतियों में से एक है अपने चालू खाता और बचत खाता (CASA) आधार को बढ़ाने के लिए निरंतर संघर्ष। कासा बैंकों के लिए निधियों की लागत निर्धारित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि यह कुल जमा राशि के संबंध में कम लागत वाली जमाओं के अनुपात को दर्शाता है। कासा सिर्फ अंकों का एक आंकड़ा नहीं, बल्कि बैंक की नींव है। इसकी मजबूती से बैंक की लाभप्रदता, तरलता प्रबंधन, व्यवसाय वृद्धि और ग्राहक से जुड़ाव सुनिश्चित होता है। आज जब प्रतिस्पर्धा अधिक है और ग्राहक के पास कई विकल्प हैं, तब एकीकृत दृष्टिकोण, तकनीक और मानवीय संवेदना के समन्वय से ही कासा में बढ़ोत्तरी संभव है। वर्तमान बैंकिंग परिदृश्य में बैंकों की आपसी प्रतिस्पर्धा ने कासा क्षेत्र को बुरी तरह प्रभावित किया है। निम्न से लेकर उच्च प्रबंधन तक सभी कासा में हो रही गिरावट को लेकर चिंतित हैं। प्रतिस्पर्धात्मक दौर में बैंकों द्वारा ग्राहकों को लुभाने हेतु आकर्षक योजनाएँ

एवं सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं। सभी बैंक अपना कासा बढ़ाने हेतु डटे हुए हैं। अतः ग्राहक उसी वस्तु को खरीदेगा जो अच्छा हो और प्रतिस्पर्धात्मक बाजार में उसका मूल्य न्यूनतम तथा उसकी जेब के अनुरूप हो।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने सरकारी बैंकों के अधिकारियों को निर्देश दिया है कि वे अपनी वित्तीय जरूरतों को पूरा करने के लिए कम लागत वाले संसाधन जुटाने हेतु रचनात्मक जमा व्यवस्था पर ध्यान केंद्रित करें, क्योंकि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक चालू और बचत खातों में अपनी बाजार हिस्सेदारी खो रहे हैं। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के लिए समस्या इस बात से और बढ़ गई है कि उन्होंने बचत बैंक जमा पर ब्याज दर कम करने का फैसला ऐसे समय में लिया है जब कुछ निजी बैंकों ने इस कारोबार में बड़ी हिस्सेदारी हासिल करने के लिए ऊंची ब्याज दरें देने का विकल्प चुना है। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक हाल ही में प्रमुख निगमों के वेतन खातों पर अपने निजी क्षेत्र के प्रतिस्पर्धियों से पिछड़ गए हैं। सरकार द्वारा "समय पर" नकद जारी करने की नीति ने कासा के अनुपात में गिरावट में योगदान दिया है, और सरकारी बैंक मध्यम आकार की कंपनियों के चालू खाता शेष का लाभ उठाकर इसकी भरपाई करने की कोशिश कर रहे हैं।

कासा किसी भी बैंक के लिए जीवन रेखा है, क्योंकि इसमें चालू और बचत खातों में जमा राशि शामिल होती है, जो आमतौर पर सावधि जमा की तुलना में कम ब्याज दर प्राप्त करती है। भारत में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक अक्सर खुद को कम कासा अनुपात से जूझते हुए पाते हैं, जिससे फंड की लागत बढ़ जाती है। कासा चुनौती बहुआयामी है और इसे बैंकिंग क्षेत्र में भयंकर प्रतिस्पर्धा, ग्राहक प्राथमिकताओं में बदलाव और तकनीकी व्यवधान जैसे कारकों के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। बढ़ी हुई मुद्रास्फीति से प्रेरित जमा दरों में वृद्धि के कारण एससीबी के सावधि खाता जमा एक साल पहले की अवधि में 8.2% की तुलना में Q1FY24 में 17.4% सालाना बढ़े। (यह पिछले 5 वर्षों में देखी गई सबसे अधिक वृद्धि है) निरपेक्ष रूप से, यह जून 2022 से 20.6 लाख करोड़ रुपये बढ़ गया और 30 जून 2023 तक 185.3 रुपये पर पहुंच गया। बचत खाता जमा में Q1FY24 में

4.9% की मामूली वृद्धि देखी गई, जबकि एक साल पहले की अवधि में 10.5% थी। निरपेक्ष रूप से, यह Q1FY23 की तुलना में Q1FY24 में 2.8 लाख करोड़ रुपये बढ़ गया और 30 जून 2023 तक 59.6 लाख करोड़ रुपये पर पहुंच गया। इस सेगमेंट ने Q1FY24 में 240 बीपीएस वाईओवाई द्वारा बाजार हिस्सेदारी खो दी और 30 जून 2023 तक कुल जमा का 32.2% हिस्सा रखा। चालू और बचत खातों ने इसी अवधि में पिछले वर्ष की तुलना में कम वृद्धि दर्ज की। इसके अलावा, बचत खातों पर उच्च ब्याज दरों की पेशकश ने उन्हें पीएसबी (10.6%) से बेहतर प्रदर्शन करने में मदद की। Q4FY20 की तुलना में, पीवीबी ने विशेष रूप से कासा जमा पर दी जाने वाली आकर्षक ब्याज दरों के कारण बहुत बड़ा प्रदर्शन किया। जमा बाजार हिस्सेदारी के संदर्भ में, पीवीबी ने Q1FY24 में 122 बीपीएस वाईओवाई प्राप्त करते हुए 33.6% हिस्सेदारी हासिल की, जबकि पीएसबी ने 107 बीपीएस वाईओवाई खोते हुए 60.6% हिस्सेदारी रखी। ग्राहकों के आक्रामक अधिग्रहण और बेहतर सेवाओं की पेशकश के कारण पीवीबी लगातार बाजार हिस्सेदारी हासिल कर रहे हैं। निरपेक्ष रूप से, कासा Q1FY24 में 4.6 लाख करोड़ रुपये बढ़कर 30 जून 2023 तक 77.2 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच गया पीवीबी ने वित्त वर्ष 24 की पहली तिमाही में कासा वृद्धि दर 9.9% दर्ज की, जबकि पीएसबी ने 5.0% की धीमी वृद्धि दर्ज की, चालू खाते में 11.9% की मजबूत वृद्धि देखी गई, हालांकि बचत खाते में 4.9% की वृद्धि ने समग्र कासा वृद्धि को धीमा कर 6.4% कर दिया।

कारोबारी जटिलता में कमी तकनीक के तेजी से बदलते स्वरूप ने लोगों की जिंदगी और जरूरतों को भी बहुत प्रभावित किया है, जिसके असर से बैंकिंग उद्योग भी नहीं बचा है। बैंकिंग का वर्तमान स्वरूप हर गुजरते दिन के साथ जटिल से जटिल होता जा रहा है। ऐसे में पारंपरिक बैंकिंग की श्रृंखला में 'कासा' की भूमिका सबसे अहम है क्योंकि ये आज भी रकम जमा करने और रकम निकालने के सीधे समीकरण पर आधारित है। इन दो तरह के अकाउंट का प्रबन्धन भी तुलनात्मक रूप में आसान होता है।



कासा:प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ने और सफलता पाने की रणनीतियाँ ग्राहक-केंद्रित दृष्टिकोण: सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को खाताधारकों को आकर्षित करने और उन्हें बनाए रखने के लिए अधिक ग्राहक-केंद्रित दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। वैयक्तिकृत सेवाएँ, उपयोगकर्ता-अनुकूल डिजिटल बैंकिंग प्लेटफॉर्म और मूल्य-वर्धित उत्पाद प्रदान करके, समग्र बैंकिंग अनुभव को बेहतर बनाया जा सकता है और ग्राहकों को बैंक में अपना प्राथमिक खाता बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

तकनीकी एकीकरण: सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के लिए प्रतिस्पर्धा बने रहने हेतु अत्याधुनिक तकनीकों को अपनाना आवश्यक है। उन्नत डिजिटल बैंकिंग समाधान, कृत्रिम बुद्धिमत्ता-आधारित ग्राहक सेवा और निर्बाध ऑनलाइन खाता प्रबंधन तकनीक-प्रेमी ग्राहकों को आकर्षित कर सकते हैं, जिससे कासा अनुपात में वृद्धि हो सकती है।

- ग्राहकों को अपने खातों को डिजिटल रूप से प्रबंधित करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु उपयोगकर्ता-अनुकूल मोबाइल और इंटरनेट बैंकिंग ऐप विकसित करना।
- डिजिटल बैंकिंग को और अधिक आकर्षक बनाने के लिए आसान फंड ट्रांसफर, बिल भुगतान और वास्तविक समय खाता निगरानी जैसी सुविधाएं शुरू करें।

वित्तीय समावेशन पहल: सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक अपने ग्राहक आधार का विस्तार करने के लिए वित्तीय समावेशन पहलों में सक्रिय रूप से शामिल हो सकते हैं। मोबाइल

बैंकिंग और अन्य नवीन माध्यमों के माध्यम से बैंकिंग सेवाओं से वंचित या कम बैंकिंग सेवाओं का लाभ उठाने वाली आबादी तक पहुँचकर, बैंक नई जनसांख्यिकी का लाभ उठा सकते हैं और कासा जमा बढ़ा सकते हैं।

रणनीतिक विपणन अभियान: कासा खातों के लाभों, जैसे कम लेनदेन लागत, उच्च तरलता और व्यक्तिगत सेवाओं, पर प्रकाश डालने वाले प्रभावी विपणन अभियान, व्यापक दर्शकों को आकर्षित कर सकते हैं। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक में कासा खाता रखने के लाभों के बारे में जागरूकता पैदा करने से जमा राशि जुटाने में मदद मिल सकती है।

संबंध निर्माण: कॉर्पोरेट ग्राहकों, लघु एवं मध्यम उद्यमों (एसएमई) और खुदरा ग्राहकों के साथ मज़बूत संबंध बनाने से चालू खातों में भारी मात्रा में जमा राशि प्राप्त हो सकती है। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को विभिन्न ग्राहक वर्गों की विशिष्ट वित्तीय ज़रूरतों को समझने और उसके अनुसार अपनी सेवाएँ तैयार करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

(i) कॉर्पोरेट ग्राहकों के लिए विशेष सुविधाओं, प्रोत्साहनों और उच्च चालू खाता शेष बनाए रखने के लिए रियायती शुल्कों के साथ अनुकूलित पैकेज तैयार करें।

- व्यवसायिक ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए थोक भुगतान सुविधाएं और वेतन प्रबंधन जैसी अतिरिक्त सेवाएं प्रदान करें।

नकदी प्रबंधन सेवाएं: (i) व्यवसायों के लिए नकदी प्रबंधन की कुशल सेवाएं प्रदान करना, जिसमें नकदी उठाने और छोड़ने की सुविधा भी शामिल है, ताकि उनकी नकदी प्रबंधन प्रक्रिया को सुव्यवस्थित किया जा सके। (ii) चेक और अन्य भुगतान साधनों के तेजी से निपटान के लिए समाधान लागू करना।

कैशबैक और पुरस्कार कार्यक्रम: (i) उन व्यवसायों और व्यक्तियों के लिए कैशबैक या पुरस्कार कार्यक्रम शुरू करें जो अपने चालू खातों में एक निश्चित न्यूनतम शेष राशि बनाए रखते हैं।

(ii) खाताधारकों को छूट या विशेष ऑफर प्रदान करने के लिए व्यापारियों के साथ सहयोग करना।

फिनटेक के साथ सहयोग:

(i) ग्राहकों के लिए वित्तीय लेनदेन को सरल बनाने वाले नवीन समाधानों को एकीकृत करने के लिए फिनटेक कंपनियों के साथ साझेदारी करना।

(ii) व्यवसायों को डिजिटल इनवॉइसिंग, आपूर्ति श्रृंखला वित्तपोषण और अन्य मूल्यवर्धित सेवाएं प्रदान करने के लिए साझेदारी की संभावनाएं तलाशना।

संबंध आधारित बैंकिंग को बढ़ावा देना: बेहतर कासा अनुपात बैंक के लिए केवल एक कम लागत वाला स्रोत ही नहीं है, बल्कि यह तरलता प्रबंधन, ग्राहक संतुष्टि और दीर्घकालिक संबंधों की आधारशिला भी है। कासा जमा के माध्यम से प्राप्त पूंजी एक स्थिर व भरोसेमंद स्रोत है, जिससे बैंक अपनी तरलता आवश्यकताओं को कुशलता से प्रबंधित कर सकता है। ग्राहकों के लिए भी कासा खातों में धनराशि रखना लाभप्रद है, क्योंकि ये खाते उन्हें बिना दीर्घकालिक प्रतिबद्धता के स्वतंत्रता व लचीलापन प्रदान करते हैं। ये खाते न केवल व्यक्तिगत जरूरतों को पूरा करते हैं, बल्कि छोटे व्यवसायों के लिए भी नकदी प्रवाह बनाए रखने का आधार है। समय के साथ ग्राहकों की प्राथमिकताएं भी बदली हैं। आज ग्राहक लचीलापन, रिटर्न और डिजिटल अनुभव को प्राथमिकता दे रहे हैं। सावधि जमाओं पर बेहतर ब्याज दर मिलने से ग्राहकों का रुझान उनकी ओर बढ़ा है। वे अपनी बचत का बड़ा हिस्सा बचत खातों से निकालकर सावधि जमा में रख रहे हैं। ग्राहक कल्पिक निवेश उपायों जैसे म्यूचुअल फंड, एसआईपी, ईटीएफ जैसी योजनाओं से भी आकर्षित हैं, जो उन्हें अधिक लचीलापन और संभावित लाभ देती है। वित्तीय साक्षरता में वृद्धि से अब ग्राहक केवल बैंकिंग उत्पादों तक सीमित नहीं हैं, वे विविध निवेश विकल्पों की समझ विकसित कर रहे हैं। ग्राहकों के साथ दीर्घकालिक संबंध बनाना आज की आवश्यकता है। समाधान आधारित, सहानुभूतिपूर्ण और निरंतर संवाद वाले बैंकिंग अनुभव से ग्राहक का भरोसा

बढ़ेगा और वह अपनी जमा राशि बनाए रखेगा।

फ्रंटलाइन स्टाफ को सक्षम बनाना: फ्रंटलाइन कर्मचारियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्हें प्रशिक्षित कर उत्पाद की विशेषताओं, ग्राहक की जरूरतों की पूर्ति और संबंध प्रबंधन में निपुण बनाना होगा। फ्रंटलाइन कर्मचारी, जिन्हें फ्रंटलाइन वर्कर या फ्रंटलाइन स्टाफ भी कहा जाता है, वे व्यक्ति होते हैं जो ग्राहकों, क्लाइंट्स या जनता के साथ सीधे तौर पर संवाद करते हैं। ये वे कर्मचारी होते हैं जो संगठन के ग्राहकों या क्लाइंट्स का प्रत्यक्ष प्रतिनिधित्व और सेवा करते हैं, और अक्सर बैंक के चेहरे के रूप में कार्य करते हैं। फ्रंटलाइन कर्मचारी सकारात्मक ग्राहक अनुभव प्रदान करने, समस्याओं का समाधान करने, ग्राहक संतुष्टि सुनिश्चित करने और (अक्सर) बिक्री पूरी करने के लिए जिम्मेदार होते हैं। चूंकि उनका ग्राहकों के साथ सीधा संपर्क होता है, इसलिए उनके पास अक्सर ग्राहकों की प्राथमिकताओं, चिंताओं और फ्रीडबैक के बारे में बहुमूल्य जानकारी होती है, जो उत्पादों, सेवाओं और समग्र ग्राहक अनुभव को बेहतर बनाने में मदद कर सकती है।

डिजिटल प्लेटफॉर्म का स्मार्ट उपयोग: ऑटो स्वीप, डेडिकेटेड एसएमई पोर्टल जैसी सेवाओं को व्यापक रूप से प्रचारित और प्रोत्साहित करना होगा। एआई आधारित ग्राहक सुझाव, लोकेशन आधारित अभियान और डिजिटल रिलेशनशिप मैनेजमेंट टूल्स अत्यधिक प्रभावी साबित हो सकते हैं।

वर्तमान बैंकिंग परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए बैंक का कासा बढ़ाने हेतु निम्नलिखित सुझाव है:-

- बैंक को अपने मौजूदा ग्राहकों को अपना बनाए रखने की रणनीति पर कार्य करना चाहिए। मौजूदा ग्राहकों की शिकायतों एवं सुविधा-असुविधा पर विशेष ध्यान देना चाहिए। चालू खाता एवं बचत खाता खोलने हेतु मौजूदा ग्राहकों से हमें उनके परिवार के सदस्यों, रिश्तेदारों एवं आसपास के लोगों, स्कूल, कॉलेज एवं संस्था आदि का भी लिंक पता चलता है।
- बैंक अपनी ग्राहक सेवा रणनीति में सुधार कर अपने

मौजूदा एवं नए ग्राहकों को संतुष्ट कर सकता है। एक संतुष्ट ग्राहक, विज्ञापन का सबसे सस्ता एवं विश्वसनीय स्रोत होता है। ऐसे ग्राहक बैंक में प्रायः स्वयं आएं, उनकी संतुष्टी बाजार में भी बैंक की छवि निर्माण करने में अहम भूमिका निभाएगी। ग्राहक संतुष्टि कभी-कभी स्थान, समय और संबन्धित व्यक्ति पर भी निर्भर करती है। कार्मिकों के व्यक्तिगत उत्कृष्ट व्यवहार ग्राहकों को आह्लादित करते हैं तथा उनके द्वारा कार्यों का त्रुटिहीन एवं शीघ्र निपटान ग्राहकों को सुकून पहुंचाता है।

- बैंक को शिक्षण संस्थाओं में समय-समय पर कासा शिविर लगाना चाहिए। शिक्षण संस्थाओं में विद्यार्थियों के साथ संकाय सदस्य एवं अन्य कर्मचारियों के खाते मिलने की भी संभवाना रहती है। शिविर के दौरान बैंक को विद्यार्थियों हेतु वर्तमान में मौजूद सभी योजनाओं की विस्तृत जानकारी एवं भविष्य में होने वाले लाभ की जानकारी देनी चाहिए। शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ बैंक को अस्पताल, प्रशासनिक कार्यालयों एवं अन्य संस्थाओं को लक्षित कर समय-समय पर कासा शिविर आयोजित करने चाहिए।
- बैंक कर्मियों को अपने परिवार, रिश्तेदार एवं पहचान की संस्थाओं को चालू एवं बचत खाता खोलने हेतु बैंक का नाम प्रस्तावित करना चाहिए। साथ ही बैंक के अन्य उत्पादों की जानकारी भी प्रदान करनी चाहिए।
- बैंक को प्रति सप्ताह अपने कर्मियों के चालू एवं बचत खाता खोलने का लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए। बैंक को चालू खाता की प्राप्ति के उद्देश्य से बड़े-बड़े कारोबारी समूहों के साथ निश्चित अंतराल पर बैठक करते रहना चाहिए। बैंक को दिव्यांग एवं बुजुर्ग व्यक्तियों के खाते खोलने के लिए डोर टू डोर सुविधा पर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए।
- बैंक को ग्राहक सेवा समिति की बैठक नियमित रूप से प्रति माह आयोजित करनी चाहिए। बैठक में ग्राहकों की शिकायत एवं सुझाव पर विशेष ध्यान देना चाहिए एवं नियमानुसार तत्काल निस्तारण करना चाहिए। बैठक के

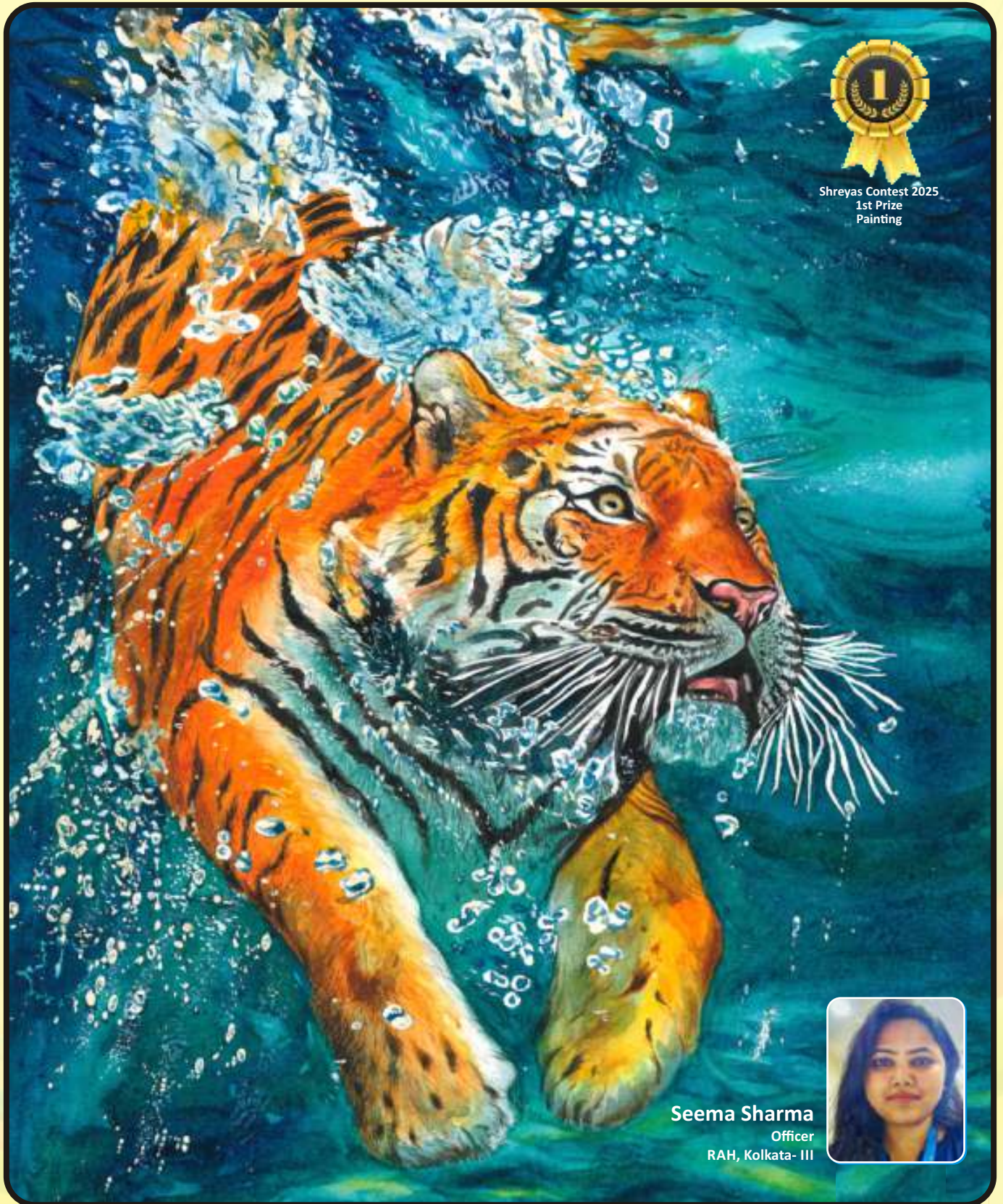
दौरान या शाखा/कासा शिविर में ग्राहकों को बचत एवं चालू खाता रखने की सुविधा तथा भविष्य में उसकी उपयोगिता की जानकारी प्रदान करनी चाहिए। जैसे-सुविधाओं के लिहाज से बैंक ने अपने बचत खाते को कई प्रकारों जैसे बेसिक, रेगुलर सेविंग प्लस आदि में बांटा है। बुनियादी बचत खाते की बात करें तो एटीएम कार्ड, आईबीआर आधारित बैंकिंग, माह में एक निश्चित वार मुक्त रकम निकासी की सुविधा मिलती है। बैंक बचत खातों में इन्टरनेशनल डेबिट कार्ड, एनईएफटी से फंड ट्रांसफर, सेफ डिपॉजिट, स्वीप इन सुविधा, मोबाइल बैंकिंग, बिल भुगतान आदि की सुविधा मिलती है तथा उच्च स्तर के बचत खातों में इन्टरनेशनल डेबिट कार्ड के अलावा, पर्सनलाइज्ड चेक, पेएबल ऐट पर चेकबुक, इंटरसिटी और मल्टी सिटी बैंकिंग, लॉकर किस्तो पर छूट, गोल्ड बार आदि खरीदने पर विशेष छूट की सुविधा मिलती है।

- राज्य/केंद्र सरकार द्वारा प्रायोजित विभिन्न योजनाओं के तहत भी खाता खोलना निश्चित रूप से कासा बढ़ाने में काफी मददगार साबित हो सकता है।

भारतीय सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के लिए कासा चुनौती एक सक्रिय और बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। अपनी रणनीतियों को ग्राहकों की अपेक्षाओं के अनुरूप ढालकर, प्रौद्योगिकी का लाभ उठाकर और वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देकर, ये बैंक कासा चुनौती को सतत विकास के अवसर में बदल सकते हैं। नवाचार को अपनाना, बाजार में बदलावों के साथ तालमेल बिठाने में तत्पर रहना और ग्राहक संतुष्टि को प्राथमिकता देना, उभरते बैंकिंग परिदृश्य में आगे बढ़ने और भविष्य के लिए कासा में एक मजबूत स्थिति सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। कासा बढ़ाना निश्चित रूप से बैंक की प्राथमिकताओं में से एक महत्वपूर्ण प्राथमिकता रही है। अब समय है कि हम कासा को सपोर्टिंग फंड' नहीं बल्कि स्ट्रैटेजिक फोकस एरिया' मानें और उसी अनुरूप कार्य-व्यवहार करें। उपरोक्त सुझाव निश्चित रूप से बैंक का कासा बढ़ाने में अहम भूमिका निभा सकते हैं।



Shreyas Contest 2025
1st Prize
Painting



Seema Sharma

Officer
RAH, Kolkata- III

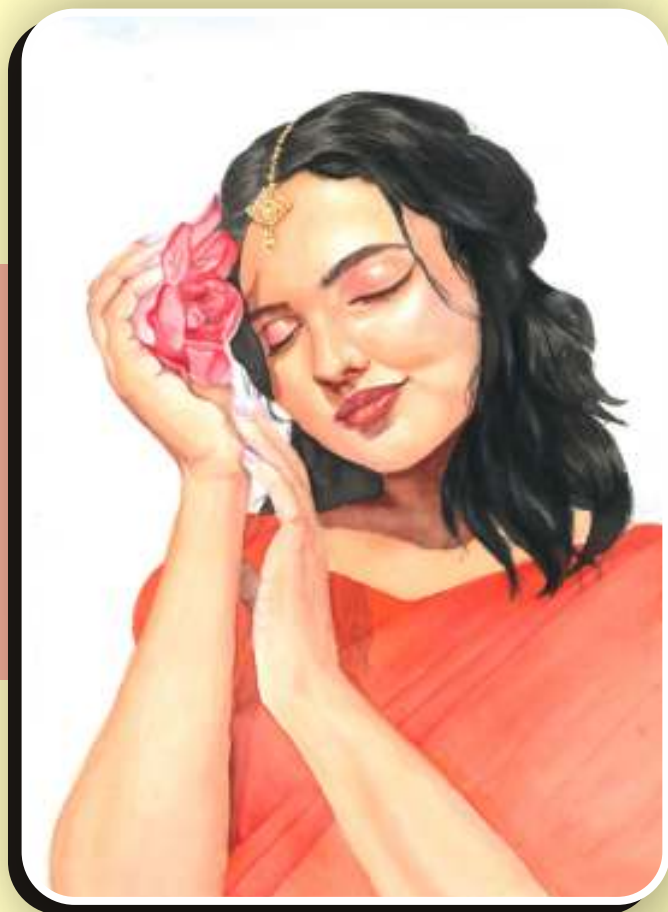




Shreyas Contest 2025
2nd Prize
Painting



Rasika N
Officer
Thiruppanjili



Shreyas Contest 2025
2nd Prize
Painting



Veena Devi K M
Officer
Kodakkad





Shreyas Contest 2025
1st Prize
Short Story English

Unplugged



Neha Chenani

Officer
Gola ka Mandir, Gwalior

The Mehta family sat around the dinner table like satellites orbiting different planets – close, but never colliding. Rhea, sixteen, scrolled through reels. Aryan, fourteen, had his tablet propped against the saltshaker, headphones clamped tight. Anjali, the mother, barely glanced at her plate, busy replying to comments on her new décor reel. Rajiv, the father, typed between mouthfuls, his phone buzzing with work emails. “Pass the salt,” Aryan muttered without looking up. Rhea shoved it over. It spilled. No one noticed. “School was boring,” Rhea said. “Same,” Aryan muttered. Silence returned. The AC hummed. Cutlery clinked. Dinner was just another task to get done.

The next afternoon, Rajiv sat hunched over his desk on a client call. Deadlines stacked. His laptop buzzed, phone buzzed, smartwatch buzzed. Coffee sat cold. He'd skipped lunch. Again. His eyes blurred for a second, but he blinked it away. “...yes, if we shift the shipment by Thursday...” He paused. His fingers trembled. “Rajiv?” the voice on the phone said. He opened his mouth. Nothing. The ground seemed to vanish beneath him. He slumped forward, body hitting the floor with a dull thud. Voices blurred, footsteps rushed in, icy hands pressed against his chest. Then nothing but heavy silence. Then, somewhere, a beeping began. And something dripped. He stirred. It felt like waking up after a long nap but still being too tired to move. His body, heavy. Thoughts, foggy. The clean, sharp, disinfectant smell told him he wasn't home. His fingers twitched. A light crossed

his eyelids. His brow furrowed. Slowly, he opened his eyes.

“You're awake.” A nurse stood at his side, adjusting the drip. She smiled. “You fainted at work. Stress and fatigue. Nothing critical.” Rajiv looked around. “My... family?” “They were here,” she said with a soft smile. “Your wife came in with your son. Your daughter joined soon after. All three were panicking, especially your son. He wouldn't let go of your hand.” Rajiv blinked, startled. “They waited until the doctor confirmed you were stable. We assured them you'd be fine. Then they went back home.” Rajiv tried to sit up, but the nurse pressed a hand on his shoulder. “You'll be here for a couple of days. Just rest.” “My phone...” he croaked, throat parched. “No phones allowed,” she replied. “Recovery wing. Doctor's orders. Stimulus-free.”

She pointed to a plastic locker. “We've kept it safe. You'll get it when you're discharged. Meanwhile, we will inform your family you're awake.” The nurse left. Rajiv stared at the ceiling, stunned by the unfamiliar sensation of being unreachable. No buzzes. None. Just a soft hum from the ceiling fan and the ticking of a wall clock. He turned his head. In the next bed lay a thin man with neatly combed silver hair and a half-buttoned sweater. A book rested on his chest. He looked up and smiled. “Welcome,” he said. “You're my first roommate in a while. Most people stay for less than a day these days. Seems no one has time to recover anymore.” “Rajiv Mehta,” he said, clearing his throat. “Albert

D'Mello," the man said warmly. "But everyone here calls me Mr. D. School teacher, retired." Rajiv smiled weakly. "First time you've fainted?" D'Mello asked. Rajiv nodded. "That's your body reminding that you're human. We tend to forget," he said. Then, after a pause, "So, what do you do when you're not fainting in public?" "Corporate logistics. Middle management. Deadlines. Clients. Meetings," Rajiv said, listing them like side effects on a prescription. D'Mello chuckled. "Sounds stressful." "It is." They didn't speak more that day. The next morning, however, Rajiv woke to the sound of quiet humming. D'Mello was peeling an orange, humming an old Hindi tune. "You have kids?" he asked casually. "Two," Rajiv said. "Teenagers." "Mine are grown up now. But when they were younger, we used to spend hours playing in the backyard. And carrom on rainy days. I once taught my daughter how to fake a leg injury so she could skip school." He laughed. Rajiv raised an eyebrow. "Just for a day. She was nervous about a test." Rajiv chuckled, then paused. "You remember it all." "I remember being there," D'Mello said simply.

Over the next two days, D'Mello shared stories: kites on rooftops, boardgames in winters, handwritten letters that carried more weight than any text. Rajiv listened. Really listened. And realized, with a dull ache, how few stories he had of his own children. Not because he didn't love them. But because he'd spent years watching them through the glow of his phone. He remembered every deadline he'd met, but not the last time Rhea had asked him something personal, or when Aryan had cried. He had provided schooling, gadgets, security. Everything except time. That night, D'Mello studied his silence. "You're a good father," he said gently. "But you look like a man who's been watching his family through a lens." Rajiv swallowed hard. "You still have time, son," D'Mello added. "Start collecting some stories again. It's not too late." On the day of

discharge, the nurse handed Rajiv his phone along with aftercare instructions. He stared at it too long. The device lay silent on the side table, but he could feel its weight, its demands. He didn't touch it.

Anjali arrived, finishing a call as she entered. "Yeah, yeah, I'll be home soon. Just picking him up." She ended it, glanced at him. "Hey, you look better. Rhea came later. Aryan was almost in tears. Poor boy held your hand the whole time." Rajiv's chest tightened. Before he could answer, Anjali was already scrolling. "You missed a wild two days. My balcony reel went viral. Thirty-four thousand views! I'm thinking of a new segment, small-space makeovers." Her face glowed in the screen's light. On the way home, his phone buzzed in his lap. He glanced at the stack of notifications, then placed it face-down, turning to the window instead. Children chased each other with melting ice creams. A man fed a stray dog. Everything was – offline, real. Beside him, Anjali dictated a voice note about thumbnails and colour palettes. Rajiv listened quietly. He wasn't angry or judgmental. Just distant.

Two days in a hospital bed had taught him how to be still, and now, surrounded by noise, he wasn't sure he wanted to be found. The car pulled into their driveway. The engine stopped, but the buzzing in his head didn't. He stared at the house he'd built a life in. It felt like a place he'd only ever visited, never truly lived in. Inside, the glow of screens hit him first. TV murmuring. Rhea laughing at her phone. Aryan on his console. Anjali already drafting her next vlog title. Rajiv stood in the middle of them, invisible. He cleared his throat. Rhea looked up. "Dad? You okay now?"

Aryan mumbled, "You scared us." Rajiv nodded. "Can we... all sit in the living room? Five minutes." They hesitated. "Now," he said, louder.

Soon they sat scattered across the room, phones tucked away but still buzzing, fingers twitching.

Rhea broke the silence. "Is this, like, a gratitude circle?" Aryan smirked. Anjali squeezed Rajiv's hand. "It's just the aftershock, Rajiv. You'll feel like yourself tomorrow." "I am feeling like myself," he said softly. That silenced them. "I spent two days without a phone," he continued. "I remembered what my childhood smelled like, what it meant to be seen, not pinged. I told a stranger more about my life than I've told you. That should scare us." Anjali folded her arms. "Every generation bonds differently. Screens are part of life now." "So is heart disease," he said.

Silence thickened. "No phones during meals. One hour a day—screens off. We sit. Talk. Walk. Cook. Anything. But together." Aryan frowned. "What if we're busy?" "You'll always be busy. But you don't get another childhood. Or another father." It landed. Uneasy nods followed. It wasn't agreement, but it was a beginning.

The next evening arrived quieter than usual. On the coffee table sat an old Ludo board, corners bent, untouched for years. Rhea slumped into an armchair, her smartwatch glowing every few seconds. Aryan rolled his eyes. Anjali placed her phone face down, reluctantly. Rajiv clapped his hands, forcing cheer. "Let's play." "Can't we do literally anything else?" Rhea muttered. "This is anything else," Rajiv said, gentle but unyielding. Dice rolled, tokens moved, silence lingered. Aryan reached for his phone once, caught Rajiv's look, and sighed. Rhea stared at her watch. Anjali muttered something about a reel idea. Nobody laughed. Nobody really spoke. When the hour ended, they scattered like birds released from a net. Rajiv stayed back, packing the board quietly. He didn't look disappointed. Just... patient.

The next night, the tantrum came early. "This is stupid!" Aryan shouted. "None of my friends do this. You can't just make up rules because you got emotional at a hospital!" "It's not punishment," Rajiv said calmly. "Feels like one." "Rhea sat curled up, arms crossed. Anjali looked tense, forcing herself still. "Then we'll just talk," Rajiv said. "No games. Just... be." "Be what?" Rhea mumbled.

"Together." No one responded. But they stayed. By the fourth evening, something shifted.

Rajiv told them about his childhood gully cricket days. "I once hit the ball so hard, it smashed Sharma Uncle's window. Tried to hide inside a washing machine." Rhea snorted. "You what?" "My bum stuck out." Aryan burst out laughing. "That's so dumb!" Anjali smiled despite herself. "Your mother must've killed you." "She didn't," Rajiv said softly. "She laughed. Said it was the first time she'd seen me run so fast."

The room warmed. Aryan asked if Rajiv still knew cricket. Rhea wanted to know who usually won. Anjali admitted her first vlog was a disaster. "Why didn't you post that?" Rhea teased. "Would've gone viral." They laughed. Not a forced, let's-humour-dad laugh. A real one. By the sixth night, things were different. Rhea baked cookies – burnt on the edges, gooey in the middle. Aryan drew a scoreboard. Anjali hadn't touched her phone in an hour, not because she forgot but because she didn't need to. They argued over trivia, whether Pluto was a planet or not. Rhea laughed so hard she fell sideways. Aryan challenged every answer like a lawyer. Anjali mock-pouted about unfair rules. Rajiv just watched, smiling at the sound of their laughter filling the house again.

Later that night, after the kids went to bed, Anjali walked into the kitchen. "Couldn't sleep?" Rajiv asked. "Too much sugar," she said, then hesitated.

“And... too many memories.” As she made tea, her voice softened. “When I came to pick you from the hospital... I was posting a reel in the car. I told people everything was fine before I even checked on you. It felt like PR. Not a moment.”

Rajiv rinsed the last cup. “Don't blame yourself,” he said. “I think I forgot how to be with you,” she whispered. “Without documenting it.” “You didn't forget,” he said quietly. “You paused. Like I did.” She shook her head. “No. You shut down. And I let you.” Rajiv's hands tightened on the towel. “I spoke to a stranger in the hospital more than I've spoken to you in years.” Anjali stepped closer and rested her forehead on his shoulder. The gesture startled him. It was so unfamiliar, yet so right. “Let's... start over,” she whispered. “Let's collect some stories again.” He didn't answer with words, only placed a steady hand on her back. It was a beginning.

A few days later, the evening began with the sound of four phones dropping into a ceramic bowl near the door. Aryan's came last. He held it longer than necessary, sighed, then let it go. Dinner was simple with Rhea's slightly burnt rotis. A mess. A

lovely mess. Rhea ranted about a classmate faking allergies in PE. Aryan did an exaggerated impression of the teacher's eyeroll. Rajiv listened intently. Anjali laughed, hair tied back, looking less camera-ready and more present. Afterward, Aryan dragged out the old carrom board. “Rematch?” he asked Rhea. “You're going down, drama king.” “I demand a referee.” “I'll keep score,” Anjali said, surprising herself. They played, teased, argued. For once, no one reached for the phones. Outside, notifications piled up. Inside, time stretched, easy and shared. Later that night, Rajiv passed the bowl of silent phones and smiled.

Months later, the “one hour” was no longer a rule. It was a rhythm. Calls went unanswered. Messages waited. Aryan's friends stopped asking why he disappeared at that time.

The phones still lived in the house. But they no longer ran it. The Mehta's had fewer posts now, fewer updates to share. But in the quiet corners of their home, around kitchen counters and carrom boards, something else had grown. “Stories”. The kind you don't need a filter for. The kind that stay.

“There's room for everybody on the planet to be creative and conscious if you are your own person. If you're trying to be like somebody else, then there isn't.”

– Tori Amos



Shreyas Contest 2025
1st Prize
Short Story Hindi

माँ



प्रमोद रंजन

प्रबंधक
प्रधान कार्यालय

सन् 2001 जुलाई महीने की बरसात। उन दिनों मेरे पिताजी चंपारण ज़िले में पोस्टेड थे। हमारी माँ भी कुछ दिनों के लिए पिताजी के पास गई हुई थी पर बूढ़ी गंडक नदी का जल स्तर लगातार बढ़ जाने की वजह से बाढ़ आ गई, जिससे माँ बताये हुए दिन पर वापस नहीं आ पा रही थी। पहलेजाघाट से महेन्द्रू घाट तक जहाज की सेवा ठप्प हो गई। अखबार में सूचना आई थी कि इक्का-दुक्का जहाज प्रतिदिन या एक-दो दिनों के अंतराल पर स्थिति देख कर आवाजाही करेगा।

मैं और मेरी बहन तो नाना-नानी के साथ थे पर माँ के बिना नाना-नानी का भरा-पूरा घर भी सूना लगता। अखबार और रेडियो में लगातार बाढ़ की विभीषिका की चर्चा होने से हमारा मन और भी घबराने लगा।

मैं और मेरी बहन ने चुपचाप तय किया कि रोज़ हम पटना के महेन्द्रूघाट जाकर तट से लगे रुके हुए जहाज से नदी के उस पार निहारा करेंगे और जैसे ही नदी की दूसरी तरफ यानी पहलेजाघाट की तरफ से कोई जहाज दिखाई देगा, समझ जायेंगे कि उसमें हमारी माँ आ रही है। माँ को सबसे पहले देख लेने और मिल लेने का सुख हम गँवाना नहीं चाहते थे।

नानाजी के घर से महेन्द्रूघाट की दूरी करीब पांच किलोमीटर होगी और चतुर्थ कक्षा के लड़के के लिए साइकिल से भी इतनी दूरी तय करना एक बड़ी दूरी थी। माँ से मिल लेने के सुख की कल्पना के आगे इस दूरी की क्या बिसात? इस सुख के लिए तो मैं नदी में छलांग लगाने के लिए भी तैयार था।

मैं अपने छोटी बहन को साइकिल पर बिठा कर महेन्द्रूघाट जाने लगा। महेन्द्रूघाट के बाहर स्थित एक पार्क के बाउन्ड्री में लगी ग्रिल के सहारे साइकिल टिका कर ताला लगाता और फिर दोनों भाई बहन घाट की सीढियाँ उतरते। तट पर पहले से पड़े एक बड़े जहाज पर चढ़कर पहलेजाघाट की तरफ घंटों टिकटिकी बाँधे रहते। यह बड़ा जहाज हमेशा वहीं पड़ा रहता और पहलेजाघाट से

आने वाला जहाज उसी से सट कर रुकता। आने वाले जहाज से मोटी-मोटी रस्सियाँ फेंकी जाती और उन रस्सियों को इस जहाज में बाँधा जाता जिससे जहाज रुक जाता। यात्रियों के आने-जाने के लिए दोनों जहाजों के बीच में लकड़ी का पुल लगाया जाता फिर भी रुके रहने पर भी नदी की तेज लहरों में जहाज हिचकोले खाता और यात्री सँभल-सँभल कर लकड़ी के पुल से आवाजाही करते।

जिस दिन कोई जहाज आता, हम टकटकी बाँधे एक-एक यात्रियों को देखते, शायद उसके पीछे बक्सा उठाए माँ हो। जब सारे यात्री घाट से निकल जाते तो हमारी निराशा हमें इतना विचलित करती कि हम घंटों एक दूसरे का हाथ थामे रहते।

उस दिन उस बड़े जहाज से सटा एक और जहाज था। वैसे ही लकड़ी के पुल से हम दोनों भाई बहन दूसरे जहाज पर भी चले गए। सीढियों से जहाज की ऊपरी मंजिल पर हम जा पहुँचे और दूसरी तरफ लगे रेलिंग पकड़ कर दूर-दूर तक हाहाकार करती गंगा के उस पार बिल्कुल क्षितिज के पास हमलोगों ने अपनी नज़रें टिका दीं। शायद कोई जहाज इधर आता दिख जाए। शायद माँ आ जाए।

नीचे लहरों का तेज प्रवाह, पेड़ों की डालियों, मलबों और पशुओं की लाशों को समेटे गंगा की चक्कर- खाती लहरें तेजी से पूरब की ओर बहती जा रही थीं जैसे उसे बंगाल की खाड़ी में गिरने की हड़बड़ी हो। इन लहरों को देखने से हमें भी चक्कर आने लगते और हम नज़रें फेर लेते।

तभी गंगा की दूसरी तरफ धुँआ दिखा, हमारा दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा।

‘भैया, वह देखो, लगता है कोई जहाज इधर ही आ रहा है’

‘नहीं रे पगली, यह तो कोई चीज़ जलाई जा रही है जिसका धुआँ दिख रहा है’

‘कहीं...’

नहीं, ऐसा नहीं हो सकता
और हम दोनों रो पड़े.

‘हे भगवान, हमलोगों ने जो सोचा वह कभी सच न हो, ईश्वर,
हमारी माँ की रक्षा करना

हम दोनों ने हाथ जोड़ कर ईश्वर से प्रार्थना की। और तभी ज़ोर से भोंपू बज उठा, हम दोनों चौंक पड़े। यह क्या? यह जहाज तो चल पड़ा। मैं बहन का हाथ पकड़ कर जितनी तेजी से हो सकता था, वापस नीचे दौड़ पड़ा। घबराहट में जहाज के निचले हिस्से में जा पहुँचा। बड़ी-बड़ी मशीनें ऊपर-नीचे घूम रही थीं और भट्टी में लहकता कोयला और उठती लपटें देख हमारा दिल डूबने लगा। दौड़ते हुए हम फिर ऊपर आए और जब जहाज के किनारे पहुँचे तो लकड़ी का पुल हटाया जा चुका था। किनारे लगे बड़े जहाज से इस जहाज की रस्सियाँ कब की खोली जा चुकी थीं और दोनों जहाजों के बीच की दूरी धीरे-धीरे बढ़ रही थी। नीचे झाँकने पर हरा-हरा पानी बह रहा था जिसमें जहाज के चलने से खलबली मची हुई थी। उसकी गहराई का अन्दाजा लगाना मुश्किल था।

अब क्या होगा? यह जहाज शायद कलकत्ता की ओर रवाना हो रहा था। क्या हम हमेशा के लिए अपने घर वालों से बिछड़ जायेंगे? क्या हम माँ से नहीं मिल पायेंगे? तभी बहन ने दिखाया कि जहाज का पिछला हिस्सा मुड़ने के कारण तट से लगे जहाज से करीब-करीब सटने जा रहा है। जहाज बीच नदी में जाने के लिए मुड़ रहा था। हम लोग जहाज के पीछे वाले हिस्से की तरफ भागे। जब हम पीछे पहुँचे तो जहाज का वह हिस्सा तट से लगे जहाज से लगभग सटने वाला था और सबसे कम दूरी पर था। कुछ ही पल में दूरी बढ़ने वाली थी। हमें उसी पल को पकड़ लेना था। इस एक पल को गंवाने से हमें सदियों का कष्ट भोगना होता। बस बिना विचारे हमलोगों ने छलाँग लगा दी। एक असम्भव कारनामा हमलोगों ने कर दिखाया। दोनों भाई बहन नीचे हाहाकार करती नदी के ऊपर छलाँग लगाते हुए तट से सटे जहाज पर जा गिरे। फिर हाथ पाँव झाड़ कर हम खड़े हो गए। यह जानने और देखने का हमें होश नहीं था कि कहीं चोट भी लगी है क्या? क्योंकि जब हमलोगों ने जाते हुए उस जहाज को देखा तो किनारे से उसकी दूरी देखकर अपना होश गँवा बैठे थे। लोग ‘अरे अरे’

करते जमा हो गए। किसी ने डांटा तो किसी ने कहा, ‘शुक्र है, बच गए, चलो जाओ यहां से’।

पाँच-दस मिनट तक हम लोग उस जहाज को देखते रहे और जब वह काफी दूर निकल कर एक छोटी चींटी के बराबर दिखने लगा तो हम वापस घर की तरफ चले।

मेरे पैर काँप रहे थे और साइकिल चलाने में बड़ी मुश्किल से मेरे कदम उठ रहे थे। ऐसा लगता था कि किसी ने मेरे पैर में पत्थर बाँध दिया हो। हम दोनों ने तय किया कि कल से हम घाट पर नहीं जायेंगे और आज की घटना घर में किसी को नहीं बतायेंगे।

घर में घुसते ही हमलोगों ने देखा कि नानी किसी से बात कर रही है। हम चौंक पड़े। माँ बैठी हुई थी। वह उसी जहाज से आई थी जिसपर किनारे रेलिंग पकड़कर हमलोगों ने उसके आने की बात देखी थी।

हम दौड़ कर माँ से लिपट गए और बहन ने धीरे से महेन्द्रघाट जाने की कहानी माँ को बता दी। माँ ने हम दोनों को गले लगाया और हम तीनों रोने लगे। मेरे पैर का दर्द उसी वक्त गायब हो गया। फिर हम दोनों खेलने भागे जैसे अब कोई चिंता नहीं, कोई समस्या नहीं और जैसे माँ कभी छोड़कर हमें कहीं गई ही नहीं थी। सभी चकित थे कि जब माँ नहीं थी तो रोज़ बेचैन रहा करते थे और बार-बार महेन्द्रघाट जाकर उसकी राह देखते और अब जब माँ आ गई है तो बस एक पल के लिए मिले और खेलने भागे, जैसे माँ से कोई मतलब ही नहीं।

कोई हमसे पूछे तब तो हम कहें कि हमारी खुशियों का अन्दाजा लगा पाना मुमकिन नहीं। हम आज इतना खेलेंगे, इतना खेलेंगे जितना पहले कभी न खेले हों। हमारे उत्साह की कोई सीमा ही नहीं। अब हमें किस बात की चिंता और किस बात का डर? दुनिया की सारी चुनौतियों का सामना करने की क्षमता हमारे अन्दर आ गई थी।

इस उम्र में मैंने जो सीखा वह यह था कि माँ का घर में होना, मतलब दुनिया के सारे सुखों का होना।



Shreyas Contest 2025
2nd Prize
Short Story English

The Ledger of Forgotten Dreams



Abrar UI Mustafa
Manager
Awantipora

It began with a ledger. A thick, leather-bound book lying on the corner of an old iron shelf in the branch record room. The dust on its spine carried years of silence. Its pages, yellowed at the edges, bore numbers once alive but now long settled. Dormant accounts. Closed chapters. Balances written in ink that had faded but not disappeared. As I ran my fingers across the forgotten book, I felt a strange tug. It was not just a ledger of money. It was a ledger of dreams. Each entry, each number, was once someone's hope. A man saving for his daughter's education. A woman building her small shop coin by coin. A youth putting aside his first salary to buy a motorbike. Somewhere in those lines of credit and debit, whole worlds once breathed.

And I thought – how different are we humans from these accounts? Don't we, too, open small ledgers in our hearts? Accounts where we deposit childhood dreams. Adolescent ambitions. And youthful passions. Singing. Writing. Teaching. Travelling. Inventing. Building. Yet life comes like a stern auditor. Bills to pay. Responsibilities to meet. Careers chosen out of compulsion rather than calling. Slowly, almost unnoticed, those vibrant accounts fall dormant. Dreams, like money lying untouched, lose their shine. And one day, when we finally turn the pages, we realise how much lies locked in our own ledger of forgotten dreams.

I. The Dormant Account of the Heart

When I was young, my ledger was full. I had an account called Speaking. I dreamt of standing before audiences, voice steady, words carrying

like a river. Another was called Writing. I imagined my words on paper, in books, reaching places I had never been. And there was Teaching, where I would light spark in young minds. But the ledger of life added a new entry. Banking. It was not that I disliked banking. It gave me stability, respect, livelihood. But slowly, deposits into my other accounts stopped. Speaking, Writing, Teaching – once vibrant – were left dormant. At first, I told myself it was temporary. “Someday I'll return to them.” But someday is a tricky word. It stretches like elastic until it snaps. And then, one afternoon, holding that dusty ledger in the branch store, I realised: I was not the custodian of forgotten money. I was the custodian of forgotten dreams – my own included.

II. Anecdotes from Other Ledgers

I began noticing stories around me. There was Bashir, one of my colleagues. A quiet man with spectacles always slipping down his nose. Over lunch one day, he confessed, almost shyly, that he once trained in Hindustani classical music. His dream was to sing at the All-India Radio. But marriage, transfers, loans, children – life balanced his books differently. Today, his tanpura lies in a corner, strings rusting. “Someday,” he says, “I'll play again.”

There was Mrs. Rukhsana, a long-time customer. She often came to deposit small savings. One winter morning, while signing her slip, I noticed the elegance of her handwriting.

Flourishes, loops, curves—art on paper. She smiled when I admired it. “In my college,” she whispered, “I wanted to be a calligrapher. But after marriage, pens became instruments of grocery lists, not art.”

And then, a young boy named Sameer. He came with his father to open a student account. While filling the form, he doodled a mountain range so detailed it looked alive. When I praised him, his father cut in: “Drawing is a waste. He must prepare for competitive exams.” The boy fell silent, his mountain ranges buried under parental ledgers.

Different faces. Different ages. Same story. Dreams once opened, now lying dormant.

III. Life as a Bank of Dreams

The more I thought, the more the metaphor deepened. Dreams are like savings. You must deposit in them regularly, even if the amount is small. Otherwise, the account grows idle. Some dreams, like recurring deposits, need discipline – practice, effort, commitment. Others, like current accounts, need flexibility, quick withdrawals, immediate attention. And some, like fixed deposits, mature only after years of silent growth. But unlike money, dreams don't earn compound interest if left untouched. They decay. They rust. They lose value with time. And yet – here lies the miracle – unlike money, dreams never fully vanish. A dormant dream can still be revived. A ledger once silent can still be reopened. All it takes is a first deposit. A little act. A small attempt. Write a page. Speak at a small gathering. Sketch a flower. Sing a note. Teach one child. Dreams wait patiently. They only ask for breath.

IV. My Own Revival

For years, I told myself my talents were

luxuries. That “real life” was banking, EMIs, responsibilities. But holding that old ledger, I felt a quiet rebellion rise inside me. Why should speaking, writing, teaching remain dormant? Why not reactivate those accounts? So, I began small. I wrote articles for newspapers. I spoke at college seminars when invited. I started a YouTube channel, awkward at first, but slowly steady. Each action was like depositing a small amount into my dream ledger. And slowly, the passbook of my soul began printing again. Balance growing. Confidence compounding. A different kind of wealth.

V. The Larger Truth

We live in a world obsessed with financial accounts. Balance sheets. Profit and loss. CASA growth. GDP. But what about the economy of human dreams? How many painters became clerks? How many poets became accountants? How many singers now manage spreadsheets? How many travellers now stamp attendance registers? We measure progress in money, but not in meaning. In transactions, but not in transformations. Perhaps every branch, every office, every street is full of ledgers of forgotten dreams. Silent books waiting for someone to blow the dust off.

VI. An Encounter

One evening, while leaving office, I saw an old man sketching on the pavement. He drew with a piece of charcoal on cardboard. People hurried past. I stopped. His lines were rough but alive. I asked him, “Baba, you draw beautifully. Did you always sketch?” He chuckled, showing his toothless smile. “I was once a school art teacher. Retired long back. Children grown, gone away. Now I draw for myself. It keeps me alive.” That moment struck me like a signature on a cheque. Here was a man who had not let his dream fully die. Even in

old age, he kept depositing. Small amounts. Enough to keep the account alive.

Someday is not a date on the calendar. It is an excuse. Make a deposit today.

VII. The Call

The ledger in my hand that day was just paper and ink. But the metaphor it gifted me was priceless. I realised: every one of us is both banker and customer in the bank of life. We decide which accounts to keep alive. Which dreams to deposit in. Which ledgers to reopen. Perhaps the saddest obituary is not death itself but the line: “Here lies a man whose dreams fell dormant.” So, I ask you—dear reader—open your ledger tonight. Look at your forgotten accounts. The guitar gathering dust. The half-written manuscript. The travel bucket list. The dance lessons you postponed. The exam you wanted to attempt. Don't wait for someday.

VIII. Closing Balance

As a banker, I have closed many accounts. As a human, I have nearly closed my own. But I have learnt this: Money, once gone, can sometimes be earned back. Dreams, once gone, rarely return. So, keep your dream accounts alive. Balance them with responsibilities. But do not abandon them. For, in the final audit of life, it is not your bank statement that will matter, but your dream statement. And when my last ledger is tallied, I want it to show not just numbers, but narratives. Not just deposits of rupees, but deposits of meaning. That is the true wealth. That is the real prize.

“There is no doubt that creativity is the most important human resource of all. Without creativity, there would be no progress and we would be forever repeating the same patterns.”
— Edward de Bono



Shreyas Contest 2025
2nd Prize
Short Story Hindi

मिठी



पुलक चक्रवर्ती

वरिष्ठ प्रबंधक
बिशालगढ़

“अरे, फिर एक महीना!”

प्रधानमंत्री का भाषण चल ही रहा था। सिद्धेश्वर ने सोफ़े पर धम्म से शरीर गिरा दिया। मोबाइल लगातार बज रहा था। उन्हें पता था किस-किस का फ़ोन आ रहा है सुब्रत, मल्लिक बाबू, रसिक दा, अमल बाबू, बिनाय के पिता, शतरूप का मामा सभी एक ही बात पूछ रहे थे: काका, अब क्या होगा? फ़ोन किसका है?

“हेलो!”

“काका, मैं राखाला।”

“यह किसका फ़ोन नम्बर है?”

“पत्नी का। मेरे फ़ोन में पैसे नहीं हैं। लगता है अब चला नहीं पाऊँगा।”

“क्यों? मैं तो तुझे दे रहा हूँ।”

“नहीं काका, और कितनी बार देंगे? सुना न भाषण?”

“और एक महीना। - अस्पष्ट स्वर में बोले सिद्धेश्वर।”

“पहले एक महीना। अब और एक महीना। मैं खत्म हो जाऊँगा काका। अब तो खाना भी नसीब नहीं होगा।”

“हम तो हैं, देख न क्या होता है। - भीतर से टूट जाने पर भी सिद्धेश्वर राखाल को यह एहसास नहीं होने देते।”

“दुकान बंद रहे तो हम भूखे मर जाएँगे, काका। पिछले एक महीने में ही पूँजी का बड़ा हिस्सा खत्म हो गया।”

कोरोना की भीषण पकड़ से पूरी दुनिया त्रस्त। मौत का मंजर धरती के इस छोर से उस छोर तक फैला हुआ। सरकार ने एक महीने का लॉकडाउन कर यह सोचा था कि सब ठीक हो

जाएगा, लेकिन उलटे और अधिक तेजी से कोरोना फैलने लगा। मजबूरी में एक और महीने का लॉकडाउन। ऐसे जीना अब संभव नहीं। सिद्धेश्वर टूट-से जाते हैं। दिन में तीन-तीन बार गपशप करने वाले इंसान के लिए पूरा दिन घर में बैठे-बैठे बिताना—यह कैसे संभव हो!

पास वाले कमरे से मिठी पूछती है -

“क्या हुआ बाबा? अड्डे पर नहीं जाओगे?”

सिद्धेश्वर उठकर मिठी के पास आकर चिड़चिड़े स्वर में कहते हैं -

“नहीं, अब बाहर जाना मुमकिन नहीं। मैं खत्म हो चुका हूँ।”

पिछले एक महीने के लॉकडाउन में सिद्धेश्वर की तो साँसें ही अटक गई थीं। उम्मीद थी कि इस बार पीएम के भाषण में लॉकडाउन हटाने की बात होगी। लेकिन हुआ ठीक उल्टा।

सिद्धेश्वर एक निःसंग, अकेला इंसान। बेटी की शादी ने ही उसे कुछ हद तक अकेला कर दिया था। उसके बाद पत्नी के निधन ने उसे पूरी तरह अकेला बना दिया। इस बीच घर में मिठी का आना-जाना उसे कुछ सुकून देने लगा। अकेलेपन को पार करने में मदद मिली।

मिठी एक मैना पंछी है। एक तूफ़ानी, बरसाती रात को घर के आँगन में गिरी थी यह चिड़िया। सिद्धेश्वर ने बाक्रायदा डॉक्टर को दिखाकर उसके पंख ठीक कराए। पाला-पोसा। शायद किसी घर में तूफ़ान की मार से पिंजरे का दरवाज़ा खुल गया था। हैरत की बात यह है कि यह पंछी सब समझती है, ठीक-ठीक बोल भी लेती है। ज़रूरत पड़ने पर डाँटती भी है। बात न मानो तो चीख-चिल्लाहट शुरू कर देती है। उस वक़्त कौन घर

में ठहर जाए! सिद्धेश्वर को 'बाबा' कहकर पुकारती है। शायद उस घर में किसी को वह बाबा कहा करती थी।

पिछला एक महीना सिद्धेश्वर के लिए बहुत कष्ट में बीता। अकेले-अकेले घर में रहते-रहते वे बेहद ऊब गए थे। जो व्यक्ति दिन में तीन बार दोस्तों के साथ बैठकर बातें करता था, वह पिंजरे के पंछी की तरह छटपटा रहा था बाहर निकलने के लिए। दो-एक बार निकले भी थे, लेकिन पुलिस की दौड़-धूप से पीछा छुड़ाकर लौट आना पड़ा। इस उम्र में इतनी भाग-दौड़ भला कैसे की जा सकती है।

और पुलिस की मार भी कोई मज़ाक नहीं है। अभी उस दिन ही प्रमोद के पिता के हाथ पर डंडा पड़ा। हाथ पर पट्टी बंधी और अब पूरे छह हफ्तों का इंतज़ार। सिद्धेश्वर अकेले आदमी हैं, इतनी झंझटें वे नहीं झेल सकते। इसके अलावा अस्पताल और डॉक्टर से तो उन्हें बचपन से ही डर लगता है।

सिद्धेश्वर का दो मंज़िला मकान बिल्कुल मार्केट एरिया में है। इसलिए पिछले एक महीने में कुछ राहत उन्हें इस बात से मिली कि वे ऊपर की बालकनी में बैठकर सड़क की ओर देखते रहते थे। इस समय सड़क भी उनकी तरह अकेली और सुनसान है। बस इधर-उधर कुछ पुलिस वाले झूटी करते नज़र आते हैं। बीच-बीच में तेज़ सायरन बजाते हुए एंबुलेंस सीने को हिला देती है। इन्हें देखकर भी सिद्धेश्वर को बड़ी घबराहट होती है।

इतने अकेलेपन के बीच भी सिद्धेश्वर ने अपना एक अलग रूटीन बनाकर खुद को काफ़ी चुस्त-दुरुस्त रखा था। सुबह सबसे पहले पार्क में टहलना और तीन घंटों तक दोस्तों के साथ बातें करना- सुबह छह बजे निकलते और नौ बजे लौटते। उसी समय सुबह की चाय भी निपटा लेते। साथ में होता खेलों का शौकीन सुब्रत, जो तरह-तरह के व्यायाम करवा-करवा कर सिद्धेश्वर को ताज़गी देता।

नहाकर, खाकर थोड़ा आराम करके दोपहर एक बजे फिर सिद्धेश्वर पहुँच जाते adda (बैठकी) में। उनके घर के सामने ही चाय की दुकान के लंबे बेंच पर आ जुटते मल्लिक बाबू, रसिक दा, अमल बाबू, बिनाय के पिता, शतरूप का मामा।

सबके सब नौकरी से रिटायर हो चुके लोग। चाय, गप्प और बहस-बितर्क में कब दोपहर ढल जाती, पता ही नहीं चलता। शाम को फिर मोहल्ले के कालीबाड़ी के चौतरे पर बड़ी बैठक होती। यहाँ लोगों की संख्या और भी ज़्यादा होती। सिद्धेश्वर के अलावा और भी कई लोग रोज़ाना शामिल होते।

पिछले एक महीने में इस रूटीन की लय पूरी तरह बिगड़ गई थी। सिद्धेश्वर जैसे किसी पिंजरे के पंछी की तरह घर में क़ैद हो गए थे। फिर भी मिठी (तोता) के होने से उनका बोझ कुछ हल्का होता। कम से कम किसी से बातें तो की जा सकती थीं। मिठी की देखभाल भी करनी होती- सुबह पानी देना, दोपहर में कभी-कभी नहलाना, शाम से पहले खाना दे देना। हर दिन पिंजरा साफ़ करना। इन कामों में समय कट जाता।

कमला की माँ रोज़ आकर झाड़ू-पोंछा, खाना, कपड़े धोना सब कर देती थी। इसलिए स्नान, खाना और सोने के अलावा सिद्धेश्वर के पास कोई काम नहीं बचता था। घर के बगल में ही बाज़ार था, सो कह देने पर सब घर पहुँच जाता। मिठी उन्हें बहुत हद तक अपनी बेटी मिनी की याद दिलाती। मिनी की शादी के बाद जब भी वह बाहर से घर लौटते, सबसे पहले उसी को ढूँढ़ते। अब वही हाल मिठी का था।

एक दिन कमला की माँ ने मिठी का पिंजरा हटाकर पीछे के कमरे में रख दिया था। सिद्धेश्वर जब घर लौटे और मिठी को नहीं देखा, तो बिल्कुल बीमार हो पड़े। उनका ब्लड प्रेशर बढ़ गया, पसीना-पसीना हो गए। उन्हें लगा जैसे अब उनका कोई अपना नहीं रहा—जैसा पत्नी राधा की मृत्यु के बाद हुआ था।

इधर कमला की माँ फोन भी नहीं उठा रही थी। बहुत ढूँढ़ने के बाद धूप-गर्मी में निढाल मिठी को उन्होंने पीछे पाया। उन्होंने उसे ओ.आर.एस. की बूँद-बूँद पिलाकर ठीक किया। दिन-रात उसकी देखभाल की, तब जाकर पाँच दिन बाद वह पूरी तरह स्वस्थ हुआ। तभी से सिद्धेश्वर ने तय कर लिया कि मिठी की देखभाल वे खुद ही करेंगे। मिनी ने भी फ़ोन पर कहा था— "बाबा, मिठी को किसी और के हवाले मत करना। बिना जाने-समझे उल्टा-सीधा कुछ कर देंगे, तो दिक्कत तुम्हीं को होगी।"

सिद्धेश्वर ने अब ग़लती नहीं की। रात को मिठी का पिंजरा अपने ही सोने के कमरे में रखते। बिल्लियों और नेवले का डर था। गर्मी में एसी की ठंडी हवा में रखते ताकि उसे कोई तकलीफ़ न हो। बाहर से आने में देर हो जाए तो मिठी बेचैन होकर ज़ोर से पुकारती—“बाबा आओ, बाबा आओ” दिनभर की बैठकों के बाद भी सिर्फ़ मिठी के खिंचाव से ही सिद्धेश्वर घर भागे आते—जैसे पहले मिनी और उसकी माँ के लिए आते थे।

इस एक महीने के लॉकडाउन में दोनों का रिश्ता और गहरा हो गया था। फ़ोन पर कितनी ही बातें हो सकती हैं? वही एक जैसी बातें—किसे कोरोना हुआ, कितने लोग मरे, किसके क्या लक्षण हैं, और कितनी मौतें होंगी। ये सब अब सिद्धेश्वर को अच्छा नहीं लगता। टीवी पर वही ख़बर, अख़बार में वही बातें। कई बार उनका सिर गरम हो जाता। इसलिए अब ज़्यादातर समय वे मिठी के साथ ही बिताते, उसे रेडियो पर गाने सुनाते। आश्चर्य तो तब हुआ जब मिठी भी अब गुनगुनाना शुरू कर चुकी थी।

बेचैनी में सिद्धेश्वर घरभर टहलते रहते। सोचते— अब और एक महीना पिंजरे के पंछी की तरह कैसे रह पाऊँगा? किसी तरह एक महीना तो काट लिया, लेकिन दिक्कतें बढ़ रही हैं। हमेशा सिरदर्द, खाना पचता नहीं, रातभर नींद गायब। करवटें बदलते

रहते। भूख ही मर गई। लगता जैसे डूब रहे हों। पूरे महीने उन्होंने सबको पूछा था— लॉकडाउन कब हटेगा? ज़्यादातर लोग कहते— एक महीने बाद सब ठीक हो जाएगा। कुछ ने तो पक्का भरोसा भी दिलाया। उसी उम्मीद के सहारे वे अब तक जी रहे थे।

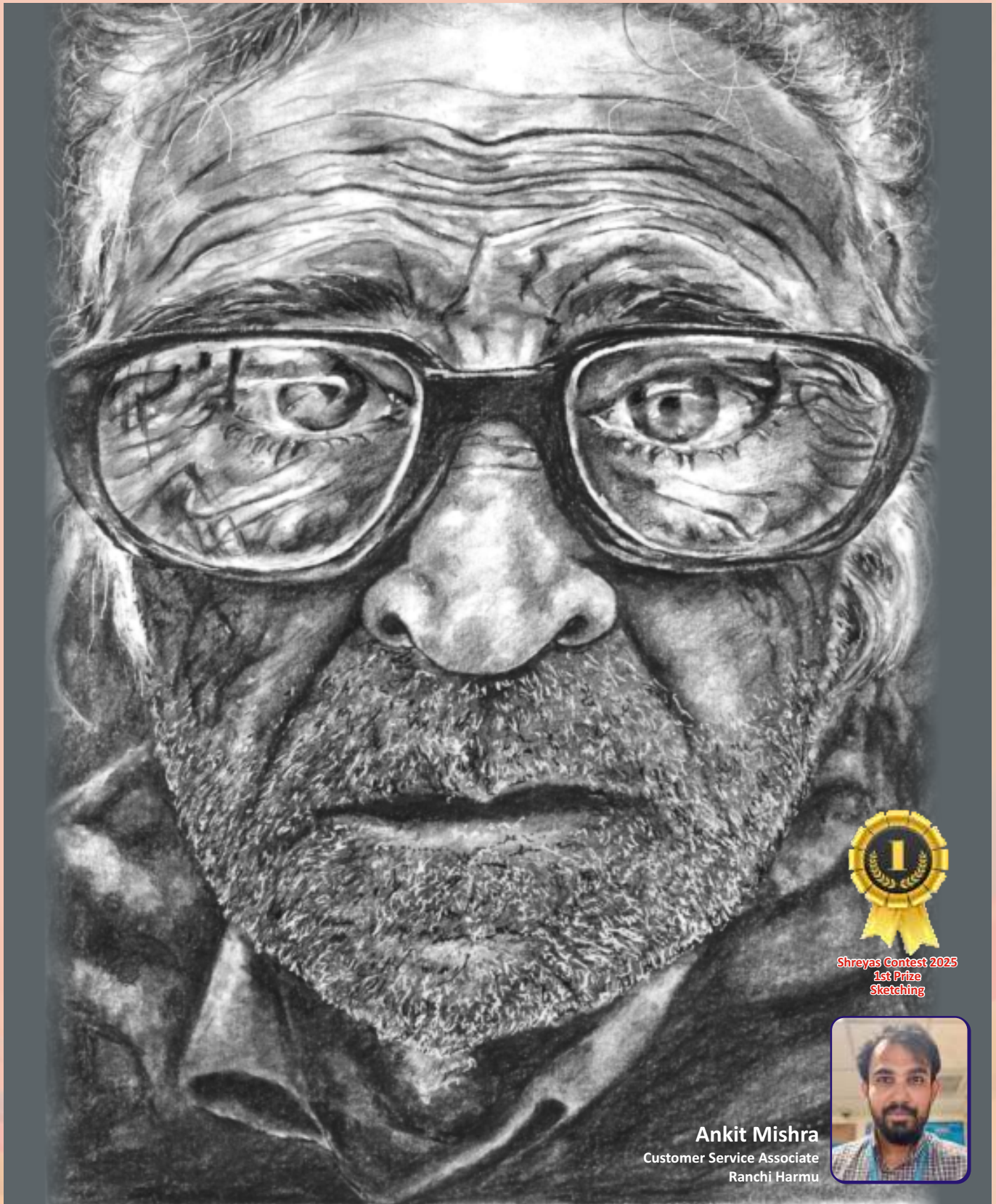
इधर मिठी बेचैनी से पंख फड़फड़ा रही थी। पिंजरे में इधर—उधर उड़ते हुए टाँगों से सरियों को काटने की कोशिश कर रही थी। अक्सर करती थी, पर आज उसकी फड़फड़ाहट सिद्धेश्वर का दिल हिला रही थी।

सिद्धेश्वर अब देर नहीं करते। पिंजरे का ताला खोलकर सीधे छत पर जा पहुँचे। इस समय बाहर जाने की आदत न होने पर भी मिठी आश्चर्य से उन्हें देख रही थी। छत पर जाकर उन्होंने पिंजरा रखा और दरवाज़ा खोल दिया। मिठी थोड़ा हैरान होकर एक—एक कदम दरवाज़े पर आयी। फिर बाहर झाँककर हल्की उड़ान भरते हुए आधी बनी दीवार पर जा बैठी।

सिद्धेश्वर को बहुत हल्कापन महसूस हुआ। हाथ हिलाकर बोले—“जाओ मिठी, जाओ।”

मिठी अवाक होकर एकटक सिद्धेश्वर की ओर देखती रह गई।

**“Creativity can solve almost any problem.
The creative act,
the defeat of habit by originality,
overcomes everything.”
— George Lois**



Shreyas Contest 2025
1st Prize
Sketching



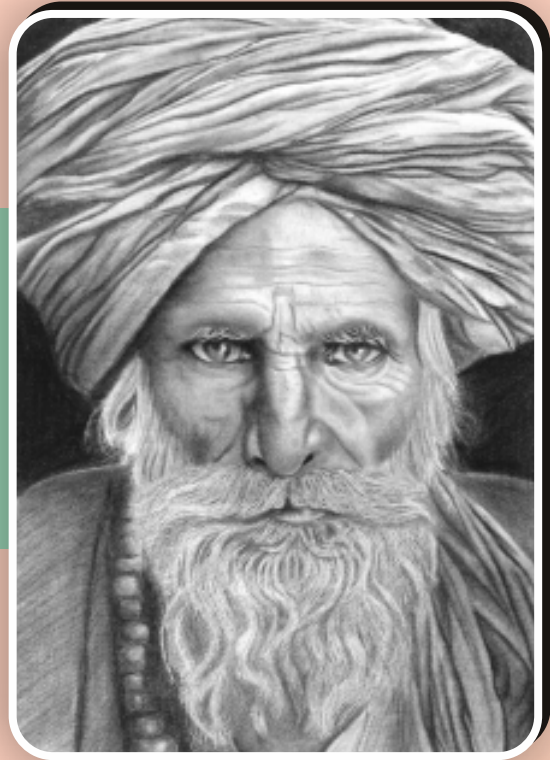
Ankit Mishra
Customer Service Associate
Ranchi Harmu



Rasika N
Officer
Thiruppanjili



Shreyas Contest 2025
2nd Prize
Sketching



Shreyas Contest 2025
2nd Prize
Sketching

Moniranjana Samanta
Customer Service Associate
Bhangamora





Shreyas Contest 2025
1st Prize
Humourous Article

The Curious Case of a Bachelor Banker



Raghavendra B Kyadad
Officer
Dharwar Subhas RD Main

The Initiation

It all began innocently enough. Praveen, a 29-year-old banker with a perpetual dark circle portfolio and a liability of withering youth, decided to shoot off an email to his HR team. His request wasn't about promotion, arrears, or even transfer to his home state. He simply asked for "assistance in finding a suitable match". Between his mounting workload, shrinking salary (adjusted for inflation), and declining "market demand" for bankers, he was running a serious deficit in the matrimonial index. "Kindly consider this as a long-term investment in employee welfare," he concluded with the tragic optimism of a banker. (It has been proposed to declare Optimism of Banker as a Gold Standard in Being Hopeful - considering their track record of being very optimistic about 5-day work week since ages).

The reply arrived faster than a cheque return. HR politely wrote back: "There are no such initiatives from the bank at present. However, you may raise the issue under the Employee Suggestion Scheme or take it up with the Marketing or any other Dept or your Union for further support. And as a starter, we urge you to upload a decent photograph in HRMS package with white background"

What HR thought was a routine brush-off soon turned into history's costliest reply. Praveen, being a man of procedure (and having zero weekend plans anyway), dutifully raised the issue through the Employee suggestion scheme, to the Union, in his social media account and all the possible departmental mail IDs that could fit in the vast

vacuum of CC field in the mailbox. But this was no ordinary suggestion box – it was an institutional Pandora's box.

The Learning and Development section saw an opportunity and designed a 10-module course for transforming Bachelors into Eligible Bachelor Bankers. It was mandatory for all the Bachelor employees to complete all the 10 modules with detailed assessment. The insurance department launched a new product exclusively for Bachelors. If the insured remains unmarried till 40, he will get all the maturity benefits and the premium was launched with a 30% discount for bank employees. "Arrange brides for bankers...!" All the bachelor Bankers started coming out in support of Praveen (in support of themselves is silent). Soon they formed a union and other major union fearing their existence also decided to go on strike for the holy cause of the Bride hunt for Bankers. Soon, in joint meetings, the slogan was loud and clear: "Shaadi aur Samman – Bachelor Bankers ka Adhikaar!" (Marriage and Respect – The Right of the Bachelor Banker!)

The Inflation

Social media soon caught fire. Memes spread faster than rumours of a DA hike. A photo of Praveen staring blankly at a passbook went viral with the caption: "Credit Nil, Bride Nil." Influencers posted: "Normalize bankers leaving at 5 for dates." Meanwhile there was another round of talks held between Union and Management with no fruitful outcome.

News panels debated the burning issue, touching highest possible decibels: “What is the need for a banker to get married, when he has chosen the service industry he should sacrifice his personal life and contribute to society?” someone said. “If a Banker burns inside, economy burns outside” another replied. The angry audience in the room threw eggs at the panel. Mistakenly the egg hit the anchor. “Curse of a Banker is very dangerous..!” announced an astrologer in the following program. And then there was another round of talk between union and Management with no outcome. “Old leaders cannot decide for us”, shouted minority bachelor unions.

Studies started showing how being single has contributed to the fall of Japan's economy. And a Netflix documentary showcasing the pathetic condition of Bachelor Bankers got released and was nominated for Oscars - “This is absolute Cinema..!” commented Martin Scorsese. Even Greta Thunberg tweeted: “It's not just about liquidity, it's about lovequidity! Save the Bankers, save the planet!”, it was retweeted a million times. #SaveBachelor Bankers became a trend.

As the international pressure mounted, the Finance Ministry announced emergency relief measures: Bankers to be released from work by 5 PM sharp, so they can “liquidate assets of loneliness.” All Saturdays and Sundays were declared holidays: one for housework, one for heart-work. Bachelors Allowance was added to the salary – officially earmarked for “dinner dates and Uber fares.” 15 days of Bachelor's Leave annually to “explore mergers and acquisitions of the heart” was finalised.

Markets responded positively. Stocks of PSBs and matrimonials soared to historic highs. Govt set up a committee to nationalise matrimonial companies. Analysts dubbed it “The Great Romantic Stimulus Package.”

The World Bank, not wanting to miss the trend, created a special wing: Department of Bachelor Bankers (DoBB), aiming to counsel them and facilitate cross border alliances. World leaders convened a summit where serious faces debated: “Should we amend global labour laws for evening liberty?” “Is speed dating to be classified as a financial instrument?” “Do derivatives of heart break count as NPAs?” The IMF floated soft loans for struggling bachelors. The UN added “To end bachelorhood of all eligible Bankers” as Sustainable Development Goal 18.

The Realisation

Suddenly, Praveen's face was everywhere, except on wedding invitation cards. His brand value soared higher than ECS return charges. Women tried their shot, but his fans cried, “Our leader must stay single!”. Marketing gurus warned him: “Marriage will dilute your equity.” Praveen, drowning in the pool of fame but starving for affection, felt cornered. He was under such pressure; he was ready to file a claim for emotional bankruptcy. The dichotomy of fame had hit Praveen very strongly, staring into the ceiling fan (the only thing that revolved steadily in his life), Praveen pondered: Was remaining unmarried the greatest investment blunder of his career?

Suddenly, a thunderous sound shook him. Was it divine intervention? Is God sending me an angel with a Ringtone? No. It was his 9 AM alarm. The bachelor crusade vanished like yesterday's overdrawn dreams. Praveen rushed to iron his crumpled shirt, cursing his crazy imagination. He had no World Bank conferences to attend, only the humble task of verifying signatures, clearing cheques, and praying to close the batch by 8 PM. Thus, the butterfly flapped its wings, and nothing changed – except his TDS (Tired, Depressed and Single).

बार धमकी दी घर छोड़कर जाने की। अब समझ में नहीं आ रहा कि भागी कौन है।”

हवलदार “आपकी स्थिति विकट है, ऐसा करो दोनों को फोन करो, जो नहीं भागी है कम से कम उस से तो बात होगी।”

गुप्ता जी का मुँह लटक गया, फोन दिलवाना तो गुप्ता जी के संविधान में था ही नहीं। डरते डरते बोले “फोन तो दोनों के पास ही नहीं है।” पहली बार गुप्ता को एहसास हुआ कि फोन दिलवा देते, तो शायद ये मुसीबत नहीं आती।

“हवलदार ने कहा ऐसा करो, बेटी के कॉलेज जाकर पता करो कि वो कॉलेज आई है कि नहीं।”

गुप्ता को ये सुझाव पसंद आया। थाने से बाहर निकले, तो बदन को जला देने वाली तेज़ धूप गुप्ता पर बरस रही थी। ऑटो पकड़कर कॉलेज पहुँचे। पूछते-पाछते बेटी की कक्षा तक पहुँचे, तो पाया कि बेटी कॉलेज आई ही नहीं। गुप्ता का कलेजा बैठ गया। अपनी बेटी का जीवन और अपनी इज़्जत की बर्बादी के ख्याल में गुप्ता बेहोश होते-होते बचे। वापस थाने भागे और कहा “बेटी कॉलेज में नहीं है। वो ही भागी है, उस बदमाश राजू के साथ।”

हवलदार “आपके पास बेटी की कोई फोटो हो तो दे दो, हम तलाशी शुरू करते हैं।”

गुप्ता जी “फोटो तो घर पर है, मैं लेकर आता हूँ।”

गुप्ता घर पहुँचे, तो पाया कि बेटी तो घर में मौजूद है।

बेटी ने पूछा “आप कहाँ थे, घर का दरवाज़ा खुला पड़ा था, दुकान भी नहीं खोली आपने?”

चौबे- “पहले तुम बताओ तुम कहाँ थी, मैं तुम्हारे कॉलेज गया था।”

बेटी “मेरी दोस्त दीप्ति का जन्मदिन था। हम सिनेमा देखने गए थे, मैंने माँ को बताया था कल रात को ही।”

गुप्ता गुस्सा होते हुए बोले “तुम्हारी माँ मेरी पिक्चर रिलीज कर के चली गई और तुम्हें सिनेमा की पड़ी है।”

गुप्ता उलटे पैर वापस थाने भागे और बोले “बेटी घर आ गई है, पक्का मेरी बीवी ही भागी है।”

“हवलदार का सर चकराने लग गया, उसने कहा महाराज तो बीवी की फोटो दे दो, उसी की तलाश शुरू करते हैं और क्या।”

गुप्ता ने वापस सर पकड़ लिया, जल्दबाज़ी में बीवी की तस्वीर लाना भूल गया। फिर से घर को दौड़ लगाई और मन ही मन सोचा “काश एक स्कूटर होता, तो ही ठीक था।”

बीवी की फोटो लेकर वापस थाने गया, भूख प्यास से बेहाल गुप्ता अपने जीवन में एक दिन में इतना तो कभी सपने में भी नहीं भागा, जितना आज भागना पड़ा। एफ आई आर तैयार हो गई, तलाश शुरू होते-होते शाम हो गई। हवलदार ने भरोसा दिलवाया कि वो उसकी बीवी को ढूँढ देंगे, वो चाहे तो घर जा सकते हैं।

भूखे प्यासे गुप्ता ने दिल पर पत्थर रखकर रास्ते में दो कचौरी, दो समोसे और पाव भर जलेबी खाई। थकते हाँफते घर पहुँचे, तो एक और बार कलेजा मुँह को आ गया, बीवी और बेटी आँगन में बैठी चाय पी रही थी। ये क्या माजरा था। गुप्ता की समझ में ही नहीं आया। और ये दोनों घर में है। तो वो चिट्ठी! गुप्ता जी की पत्नी बोली “मैं आपकी कौन-सी पिक्चर रिलीज कर के गई? ऐसा क्या किया मैंने?”

गुप्ता के पास कोई जवाब नहीं था। वो कोई जवाब दिए बिना वापस थाने भागा।

हवलदार ने देखते ही पूछा “अब क्या हो गया महाराज?”

गुप्ता जी “साहब बीवी भी लौट आई है।”

हवलदार का मन हुआ कि गुप्ता जी को रात भर हवालात में लेकर सुतवाई करे, पर वो ऐसा नहीं कर सकते थे। उन्होंने गुप्ता जी से कहा “कल बीवी के साथ कोर्ट में आकर मामले का निस्तारण करना देना, नहीं तो हमें आपकी बीवी को कोर्ट में पेश करना पड़ेगा।”

गुप्ता सर लटकाकर घर की तरफ चल दिए और सोचते रहे कि आखिर वो चिट्ठी आई कहाँ से।

दो दिन बाद राजू आया गुप्ता की दुकान पर और बोला “अगली बार मेरे खिलाफ कोई कदम मत उठाना, वरना जो मैंने चिट्ठी में लिखकर फेंका वो कर भी सकता हूँ।”

गुप्ता अपनी भूल पर पछताने लगे और साथ ही उन्होंने निर्णय लिया कि अब कंजूसी में नहीं जीएँगे।

घर में छोटी-सी कार आ गई, तीन नए मोबाइल आ गए और हां, गुप्ता जी की पत्नी अब पेट से है।



Shreyas Contest 2025
2nd Prize
Humorous Article

The Round Roti Conspiracy



Sakshi Jain
Officer
Faridabad MSME Sulabh

Turning twenty-eight as an unmarried woman in India is not a birthday, it's a national crisis. The moment the cake candles go out, aunties light their own torches. At 25 you're "still young." At 26 you're "still have time." At 27 you're "better hurry." But at 28? Oh no, at 28 you become a national emergency. Suddenly your life is not your life anymore, it's a community project. If the government had a Ministry of Marriage Affairs, my face would be on the warning posters.

Parents, who previously celebrated your independence, now act like you are a ticking time bomb. Every phone call from relatives becomes a trigger. Their eyes suddenly carried the weight of "log kya kahenge," their voices developed a tremor every time they heard about someone's cousin's daughter getting engaged and our family Whatsapp group was now 90% wedding photos of strangers, with captions like "See beta, she is your age only."

Neighbours who've never spoken to me feel entitled to whisper, "Arre, she's 28 already... what is the problem?"

The problem, dear society, is 'You'.

My parents have entered what I call the "Shaadi Emergency Zone. They, who once proudly introduced me as "our daughter, the banker," now introduce me as "our daughter, the..still single." It's the verbal equivalent of clearing your throat awkwardly. My mother has developed the habit of sighing deeply whenever she sees me watching Netflix, "Beta, if only you invested this much time in Shaadi.com profiles, you would have been married by now."

My father, on the other hand, has turned into a

stockbroker for rishtas. He pitches boys like mutual funds:

- ♦ "Stable, low risk, fixed returns. IT job in Bangalore."
- ♦ "High package, foreign posting, long-term growth potential. Some hair fall, but overall promising."
- ♦ "Entrepreneur type. Risky investment, but could give high returns..if the startup survives."

When parental pressure meets technology, the result is online matrimony sites where you scroll through profiles like a hungry shopper in a supermarket aisle. I sometimes wonder if these sites were designed by a committee that hates happiness.

The biodata circus:

The bio-data is India's weirdest invention. It's like a glorified resume, but instead of highlighting your achievements, it highlights your face, weight, height, cooking ability. And these hobbies, oh my God. In real life, my hobbies are binge-watching crime thrillers, napping, scrolling reels, and stress-eating chips. But on the bio data? Suddenly I am a "avid reader, excellent cook, enjoys yoga." Because it sounds better than "Scrolls Instagram till sunrise." Basically, my biodata version of me could marry a prince. My real version of me shouldn't be trusted with a pressure cooker.

Arranged marriage is less about love and more about sales pitches. Girls are listed as: "Fair, convent educated, homely, knows embroidery." Embroidery? I haven't embroidered anything since 7th grade craft class, and that project still looks like a spider had a seizure on the cloth. The biodata is where reality bends to fantasy. For girls, the biggest detail is "knows

how to make round rotis.” Round rotis are not food, they are a geometry test. The complexion column is my favourite. “Fair, wheatish, dusky.” Excuse me, am I a marriage candidate or a new shade of Lakme foundation? Round rotis, complexion shades, cooking ability – these are given more importance than opinions, dreams, or sense of humour.

The boys are paraded like cars on OLX: “US return, slightly balding, but great mileage.” “Software engineer, family owns SUV, very decent condition, only first-hand use.” And don't get me started on the “salary expectations” column for boys. Apparently, his package is a bigger deal than his personality. And the vocabulary! Boys are always “handsome, ambitious, modern yet traditional.” Girls are “simple, fair, adaptable.”

The Family Interview: Kaun Banegi Dulhan?

Once the bio data passes the screening, it's time for the Family Interview. Picture me sitting on one side like a nervous contestant, and five strangers staring at me like museum visitors staring at an artifact. The questions come at you rapid-fire:

- ◆ “Do you know how to make round rotis?” (No aunty, but I can order perfect round pizzas in 30 minutes or less.)
- ◆ “Would you be okay living in a joint family?” (Yes, provided you also provide noise-cancelling headphones and personal Wi-Fi.)
- ◆ “Are you religious?” (Of course. I religiously follow Bigg Boss every season.)

Meanwhile, the boy, the so-called “groom,” usually sits silently like a malfunctioning Alexa. Occasionally, he'll look up from his phone to ask, “So..what are your hobbies?” Bro, my hobby right now is surviving this panel without crying. And the cherry on top? Parents turn into marketing managers. My mother once cut me off mid-sentence to proudly declare, “She's very homely.” Homely? I wanted to shout, “No, Mom, tell them I'm witty, resilient, and great at handling toxic relatives.” But apparently, being “homely” sells better than having a personality.

Now let's talk about the boys. Oh, the boys. There's the IIT-IIM robot who talks only in PowerPoint slides.

“In five years, I see us..in a duplex with two kids. Pie chart here.” There's the Gym Bro whose bio-data says “fitness enthusiast” but his arms look like inflated balloons and his personality is protein powder. There's the NRI package who only comes to India to shop for brides like we're duty free items. “Yes, I'm looking for something homely, fair, not too ambitious, travel-friendly. Do you have in beige?”

Relatives: The self acclaimed Seema Aunty

As if this wasn't enough, relatives join the party. Aunties turn into human Tinder algorithms. “Beta, my cousin's neighbour's nephew's friend is perfect for you.” If you reject, they gasp like you just rejected the Nobel Prize. One aunty even said, “Don't be too choosy, beta, girls of your age are already moms of two.” Thanks aunty, now please go choke on your Whatsapp forwards.

The Emotional Blackmail:

At some point, parents stop reasoning and start emotional blackmail. “Do you want us to die without seeing your wedding?”, “Your younger cousin is engaged already.”, “Your biological clock is ticking.” I'm sorry, but my uterus is not an alarm clock. Stop treating it like one. Here's the grand twist: whether you marry or not, society will never shut up. If you marry, they'll gossip about your husband's salary. If you don't, they'll gossip about your “attitude.” Basically, the reality show never ends.

So, what's my conclusion?

At 28, I've realized I'm not some rejected stock in the Rishta Exchange. I'm the premium IPO society can't afford. The truth is, no matter what I do, someone will always have an opinion. Too picky, too late, too ambitious, too something. But here's my little plot twist: I'd rather be “too much” than “settle for less.” So while aunties keep whispering and my parents keep sighing, I'll be out here living, laughing, binge-watching crime thrillers, practicing fake round rotis for fun and maybe even learning embroidery again, not for marriage, but to stitch a giant banner that says: “Mind Your Own Rishta”.

सेवा की स्वर्णिम विरासत : श्री के सत्यनारायण राजु, प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी A Legacy Retires: Shri. K Satyanarayana Raju, MD and CEO- bids farewell



“अरे जब खुद ही करना है तो इस्तरी बाहर जा कर क्यूँ करनी है, घर में ही न कर लें भाई” चौबे जी आँखें फाड़े बोले

“अरे चौबे जी, आप जैसे लोगों के लिए नहीं है अमेरिका, वहाँ कपड़े धोने सुखाने इस्तरी करने तक के लिए बाहर जाना पड़ता है”

“अरे नहीं, हर जगह ऐसा नहीं होता है।” दूसरे लड़के ने बत्तख का सा मुंह बिचकाते हुए कहा, “वो सब केवल बड़े शहरों में होता है, अगर आप वहाँ के गाँव में जा कर रहिएगा न, तो घर के पीछे ही बड़ा सा आँगन दिया रहता है, वहीं कपड़े धोये, सुखाये, यहाँ तक की अपनी सब्जी, फल-फ्रूट भी सब आप खुद ही उगा सकते हैं, माने एकदम ओरगैनिक जीवना”

“हाँ तब तो चौबे जी आप गाँव में ही रहिएगा, कचौरी तो वहाँ के गाँव में भी नहीं होगी लेकिन कम से कम अपनी पसंद के आम, अमरूद तो खा ही सकते हैं ना आप” पहला लड़का कुछ सात्वना सा देता हुआ बोला।

“हाँ सही बात है, हमको तो वैसे भी बड़े शहर की आबो-हवा ज्यादा पसंद नहीं आती और फिर अपनी सब्जी-तरकारी उगाने का अपना ही मज़ा है।”

“हाँ है तो सही चौबे जी, लेकिन बाकी काम का क्या कीजिएगा, रोटी, कपड़ा और मकान वो सब कौन करेगा जी, आपको तो झाड़ू भी नहीं लगानी आती, रोटी की जगह तो चलिये आप खिचड़ी खा लेंगे लेकिन बर्तन कैसे धोएंगे”

“हाँ तो चौबे जी पत्ते में खा लेंगे उसमें क्या, पीछे आँगन में कुछ केले के पेड़ भी लगा लीजिएगा, चौबे जी”

चौबे जी ने भी साथ में खुले मुंह से हामी भर दी।

“अरे जब रोज़ खिचड़ी खाएँगे तो जो पीछे बरामदे में सब्जी उगी हुई है उसका क्या आचार डालेंगे फिर चौबे जी” तीसरे लड़के ने अपनी चौथी कचौरी खत्म करते हुए कहा।

“हाँ तो क्या चौबे जी, बेच ही दीजिएगा, कम से कम दो पैसे तो हाथ आएंगे, अब अमेरिका में रहना कोई अपने शहर में रहने

जैसा सस्ता थोड़ी है, कम से कम स्कूटर के पेट्रोल का खर्चा तो निकल ही आएगा।”

“अच्छा हाँ ये तो सोचा ही नहीं” चौबे जी बोले।

“अरे चौबे जी वो तो आप सोचिए भी मत, ये बैंगनी स्कूटर तो आप ले जा भी नहीं सकते वहाँ, जितना काला धुआँ ये छोड़ता है न ये आपका बैंगन, पूरा अमेरिका एक दिन में वायु प्रदूषित हो जाएगा, तो ये तो नहीं जा सकता चौबे जी, जाना तो आपको अकेले ही पड़ेगा”

“अरे ऐसे कैसे नहीं जा सकता, यह स्कूटर कॉलेज के समय से हमारे साथ है, लगभग दो दशक समझ लो, और हम इसको छोड़ कर चले जाएँ, हमारा स्कूटर नहीं जाएगा तो हम भी नहीं जाएंगे। तुम्हारा अमेरिका तुम्हें मुबारक।” चौबे जी की छठी और आखिरी कचौरी थी, जिसे खत्म किया हल्की मूँछों पर ताव दिया और चलते बने।

लेकिन इस संवाद से चौबे जी के मन में भी अमेरिका में बसने की थोड़ी सी लालसा तो जाग गयी, खिड़की से बाहर झाँकते, हाथ पर गाल टिकाये सोचने लगे, “कैसा हो कि हम वहाँ जायें और वहाँ के सरकारी दफ्तर वाले हमारी ईमानदारी और होशियारी देख कर वही रख लें! फिर कचौरी के ठेले पर हमारी भी मिसालें दी जाएंगी कि एक चौबे जी हुआ करते थे, ट्रेनिंग के लिए गए थे लेकिन फिर अमेरिका के हो कर रह गए, दफ्तर वाले तो जलकर राख हो जाएंगे, घर कि रखवाली के लिए किसी न किसी का बंदोबस्त करके जाना पड़ेगा, आसान भी तो नहीं है दूसरे देश में रह कर यहाँ सब चीजों का ध्यान रखना, अकेला आदमी क्या-क्या करेगा, वहाँ तो काम भी खुद करना पड़ेगा, लेकिन काम तो हमें आता ही नहीं है!” झटके से गाल हाथ से सरका और चौबे जी जागे।

लिहाज़ा अगले ही दिन चौबे जी अमेरिका में बसने की तैयारी शुरू कर दी, पहले दिन झाड़ू उठाई। दूसरे दिन बर्तन मांजे। तीसरे दिन कपड़े धो डाले। चौथे दिन तो उन्होंने इस्तरी भी कर डाली। रातों में जाग कर कम्प्यूटर भी सीखा।

फिर किसी मित्र ने समझाया कि वहाँ तो हर काम मशीन से होता है। चौबे जी अगले ही दिन बाज़ार से मिक्सी और वॉशिंग मशीन का मैनुअल ले आए और उसे ऐसे पढ़ने लगे जैसे वेदों

का रहस्य हो। कपड़े आधे भीगे रह जाएँ, मिक्सी जल जाए—पर चौबे जी को विश्वास था कि यह अभ्यास उन्हें अमेरिका का टिकट दिलाएगा।

धीरे-धीरे सपना फैलता गया। चौबे जी अब अंग्रेज़ी अखबार पढ़ने लगे। हफ्ते भर में “हैलो”, “थैंक्यू” और “आई एम सो सॉरी” जैसे तीन वाक्य रट लिए। मोहल्ले और दफ्तर में किसी से मिलते तो इम्प्रेस करने को नमस्ते के साथ “हैलो” ज़रूर ठोकते। बीच-बीच में कभी अपने स्कूटर को छोड़ कर जाने के गम में मायूस हो कर हल्के से “विल मिस यू” भी बोल देते।

शहर में गर्मी में भी सर्दी के कपड़े बेचने वाली दुकान ढूँढकर वहाँ से गरम जैकेटें भी ले ली गईं। घर से वो साज-ओ-सामान निकाल दिया गया जो इतने समय से “कभी काम आ जाएगा” सोचकर रखा हुआ था।

अंततः वह दिन आया, जब चौबे जी के दफ्तर में औपचारिक पत्राचार आया, सभी कर्मचारियों को एकत्रित किया गया, सबसे पहले वरिष्ठ अधिकारी ने चौबे जी को बधाई दी, सुनते ही चौबे जी पुनः बादलों की सैर करने लगे, कुछ ही समय में दफ्तर का माहौल उत्सवनुमा हो गया, चूंकि अमेरिका जाने कि बात थी तो छाछ और कचौरी की जगह सबने पैटिज और कोला खा कर चौबे जी को बधाई दी, मालाएँ इतनी पड़ीं कि चौबे जी का चेहरा दिखे न दिखे, फूलों में से उनकी हिचकिचाती आवाज़ आती रही “धन्यवाद... धन्यवाद...”। अंदर से उनका कलेजा धक-धक कर रहा था कि अभी अमेरिका जा कर अपनी छाप भी छोड़नी है कि अंग्रेज़ तुरंत उनको अपने यहाँ नौकरी को मना लें।

फिर अधिकारी ने धीरे-धीरे आगे की सभा को संबोधित किया, “यह बताते हुए बड़ी ही खुशी हो रही है कि हमारे दफ्तर से एकमात्र अति योग्य चौबे जी को अमेरिका” से “ट्रेनिंग हेतु नामित किया गया है, पहले जिस ट्रेनिंग के लिए हमें लोगों को अमेरिका भेजना पड़ता था, सरकार को इतना खर्चा उठाना पड़ता था, उस सबको बचाते हुए चौबे जी ने रेकॉर्ड एक माह में ही अंग्रेज़ी व कम्प्यूटर में निपुण हो कर यह सम्पूर्ण खर्च खत्म कर दिया व यह राशि जल्द ही आप लोगों के दफ्तर को पूर्ण रूप से डिजिटल बनाने में प्रयोग होगी तो समस्त कार्यालय से आशा है कि वे सभी चौबे जी के जैसे लगन दिखाएँ व उनके पद-चिन्हों पर चलें।”

सभी कर्मचारियों ने मिश्रित भाव से चौबे जी को देखा जो यह खबर सुन कर सन्न से बैठे हुए थे, अधिकारी ने अपना भाषण जारी रखा, “यह चौबे जी की अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठा ही है कि उन्होंने पूरे एक महीने तक अमेरिका के समयानुसार दफ्तर में रह कर रात-रात जाग कर ‘ऑनलाइन’ ट्रेनिंग लेने के लिए अपनी सहमति एक दिन में ही दे दी किन्तु चौबे जी आप यह न सोचें कि विभाग को आपकी चिंता नहीं है, आप के विभाग को केवल आप के लिए अमेरिका के समयानुसार ही खोला जाएगा व बंद किया जाएगा ताकि आपको किसी तरह की परेशानी न हो, नए कम्प्यूटर इंटरनेट कनेक्शन के साथ आपके दफ्तर में दो चपरासियों को बारी-बारी से रोज़ तैनात किया जाएगा व ट्रेनिंग पूरी होने पर आपको एक परीक्षा में सफल होना होगा जो कि हमें नहीं लगता इतने होनहार कर्मचारी किसी भी कारणवश असफल होंगे अन्यथा सम्पूर्ण प्रक्रिया आपको पुनः पूरी करनी होगी, आपको सम्पूर्ण विभाग की तरफ से शुभ कामनाएँ।”

हालांकि वरिष्ठ अधिकारी ने धीरे-धीरे और साफ-साफ शब्दों में सम्पूर्ण सूचना दी थी फिर भी चौबे जी को पूरी बात समझने में कुछ मिनट लगे व सपनों के विमान से अचानक धम्म से असलियत की ज़मीन पर आ कर गिरे, चेहरा तो मानो सूखा आम हो गया। किसी साथी ने दबी आवाज़ में कहा, “यह तो व्याकरण की गलती हो गयी खबर में, खबर तो पक्की ही थी वैसे”

चौबे जी ने तो अपनी दुनिया इस डॉलर देश में ही बसा ली थी, दिल बैठा जा रहा था, आँखों से आँसू निकलना चाह रहे थे लेकिन हिचक हुई कि बना बनाया रौब छिन जाएगा, सो “इक्सक्यूज मी” बोल कर तुरंत दफ्तर से घर जाने को निकले और जैसे ही अपने स्कूटर पर बैठे तुरंत एक हल्की सी मुस्कान आयी कि चलो कम से कम अपने बैंगनी एरावत को छोड़ कर तो कहीं नहीं जाना पड़ेगा।

अगला एक महीना तो चौबे जी दिन में सो कर रात में जागे सो किसी से न बात की न किसी को कोई जवाब दिया, मोहल्ले वालों को लगा चौबे जी का दिमाग पलट गया है, लेकिन धीरे धीरे हैलो से नमस्ते और राम राम वापस आ ही गयी और धीरे धीरे मोहल्ले की यह स्थायी सजावट जिसका नाम चौबे जी है वापस अपने स्कूटर पर आती जाती दिखने लगी।



CANARA BANK PROUDLY CELEBRATES



Canara Bank proudly celebrates its remarkable achievement of securing **Second Runner-Up** position at the prestigious **Banking Chanakya Quiz 2026 National Finals**, conducted by IIBF, competing among over 5,000 teams nationwide.

This proud moment was made possible by the outstanding performance of **Mr. B.V. Ravi Kumar**, Associate Party Products Vertical, HO) and **Mr. Riyas Rehman**, Manager (Karaikudi Branch, Theni RO, Madurai CO).

Their exceptional knowledge, dedication, and professional excellence have brought great honor to the Bank and pride to every Canarite.

Heartiest congratulations and best wishes for many more milestones ahead.

CIBM MANIPAL

A four-day inter-bank training program titled NARI (Nurturing Aspiring Role Models in Inclusive Banking) was held from January 6 - 9th, for women Executives (Scale IV and V) from various PSBs and RRBs. The program was inaugurated by Sri. Shreenath Joshi, GM and CLO. Smt. R Anuradha, CGM, Retail Credit and General Administration, delivered the inaugural address highlighting the growing influence of women in the financial sector. The programme focused on emerging trends in banking and digital transformation, leadership and decision-making skills, work-life balance and stress management.



of the campaign. Sri. Ranjeet Kumar Jha, GM and Circle Head, Sri. Amarjit Singh, DGM along with all the Executives and Circle Office Staffs participated in the event.

BENGALURU

Sri. K Satyanarayana Raju, MD and CEO, along with Sri. Bhavendra Kumar, ED visited Bengaluru Circle Office on 20th December to inaugurate the digital display board showcasing the Bank's flagship products and initiatives. Sri. Mahesh M Pai, CGM and Circle Head, and other Circle Executives received the dignitaries.



AHMEDABAD

As part of Digital Lending Process awareness campaign, a mobile van publicity drive was conducted across Motera, Chandkheda, Gandhinagar and Sabarmati regions on 16th December, 2025. A walkathon was also organised on the same day as part



CHENNAI

As part of CSR-Rural Development Initiative, a CSR fund of ₹ 22.50 Lakh was sanctioned to Subiksha Rural



Development Society supporting rural upliftment, based in Perambalur District, Tamil Nadu. Sri. Loka Krishna Kumar, AGM, Namakkal RO, presided over the function. Sri. Naveen Babu Nalli, CM, Perambalur branch, and other RO Executives were present in the event.

commitment to community service. As a part of the Horekanike festival, over 15 Canara Bank branded vehicles carrying grains, pulses and vegetables were offered. The ceremonial Pooja and yatra was inaugurated by Sri. H K Gangadhar, GM and Circle Head, Sri. Krishnaprasad, GM, GTPC and other executives.

HUBBALLI

A review meeting, covering all Regional Offices, RAHs, MSME Sulabhs, ACCs and MCB, was held on 22nd December. Smt. T.P. Jyothilekshmi, GM, Gold loan Vertical, HO, chaired the meeting. Sri. Veerendra Babu K, GM and Circle Head, Sri Jagdish Swamy, DGM, CO, and other executives were present in the meeting. The Circle's performance was reviewed and suitable strategies for CASA mobilisation, retail and agriculture advances, gold loans, recovery, compliance and improvement in monthly rankings were discussed during the meeting.



MANIPAL

Canara Bank, participated in the Udupi Paryaya Horekanike Festival, reaffirming the Bank's legacy and



MUMBAI

A Branch review meet for Q3 FY 2025-26 for Navi Mumbai RO, was held on January 9th at Circle Office, Mumbai. Sri. Ranjeev Kumar, CGM and Circle Head chaired the meeting. Sri. P Saravanan, DGM, Sri. Rajnish Kumar, DGM, Sri. Deepesh Dedhia, DGM, CO, Mumbai and Sri. Deepak Saxena, DGM and RO Head Navi Mumbai, Executives from Circle Office, Regional Office, RAH and MSME Sulabh heads along with Branch Heads and Section Heads were present in the meeting. Business performance, key focus areas and campaign initiatives were reviewed. Emphasis was given on CASA growth and advances target achievement within March 2026.



PUNE

Sri. Hardeep Singh Ahluwalia, ED, along with Sri. Anant Jalonha, Overseeing GM and Retail Asset Vertical Head, HO, visited Pune Circle on 20th December, to attend the Business review meet. Sri. Pramod Kumar Singh, GM and Circle Head, along with Circle Executives, Regional Heads, Branch Heads, and Heads of RAHs, MSME Sulabhs, ARMs, LCB and MCBs, were present during the meet. The Circle's performance

was reviewed in detail and suitable suggestions were provided to have effective business growth, CASA mobilisation, asset quality improvement, strict compliance and customer-centric growth.



THIRUVANANTHAPURAM

A E-Hundi cum Self Pooja Booking Kiosk was officially inaugurated on 9th January, at the historic Sree Padmanabha Swamy Temple, Thiruvananthapuram. The first-of- its-kind initiative in Kerala, enabled seamless UPI-based donations and digital pooja bookings. This facility was inaugurated by, His Highness Avittam Thirunal Adithya Varma. Sri. Sunil Kumar S, GM and Circle Head, Sri. Ashok Kumar, DGM, Trivandrum South Regional Head, Sri. R V Sreekanth, AGM, CO, and other Circle Executives attended the event. As part of CSR activities, two Kiosks were also provided by the Bank which were placed at the East and North Nadas of the temple.



TIRUPATI

Sri. K Satyanarayana Raju, MD and CEO, visited the Tirupati Circle on 6th December to review the Circle's performance. Sri. I Panduranga Mithanthaya, GM and

Circle Head, RO Heads of all 6 regions, MSME Sulabh Heads and Branch Heads of VLB branches of Tirupati RO along with the Executives of Tirupati Circle Office, ARM, LDCs were present during the review. The Circle's continuous top performance was appreciated and the Bank's latest strategic and technological developments were discussed during the meeting.



As part of CSR Activity, advanced scanner machines were donated to the Tirumala Tirupati Devasthanams (TTD) at Saptagiri check point, Alipiri. Sri. K Satyanarayana Raju, MD & CEO, inaugurated the function. Sri. K.V Murali Krishna, IPS and Chief Vigilance and Security Officer also participated in the event and appreciated the Bank' timely support. The initiative aimed to enhance efficiency, speed of service delivery and administrative processes at TTD.



आगरा

दिनांक 27.11.2025 को अंचल कार्यालय, आगरा में माननीय अंचल प्रमुख एवं महाप्रबंधक श्री रजनी कांत की अध्यक्षता में प्रधान कार्यालय द्वारा प्रदत्त विषय "सरकारी योजनाओं के प्रचार-प्रसार में हिंदी व क्षेत्रीय भाषाओं की भूमिका" पर दिसंबर - 2025 तिमाही के लिए हिंदी परिचर्चा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। परिचर्चा में उप महाप्रबंधक श्री सुबोध कुमार मल्लिक, उप महाप्रबंधक श्री पी वी हरि सहित अन्य कार्यपालकगण एवं स्टाफ सदस्यों द्वारा सक्रिय रूप से प्रतिभागिता की गई। परिचर्चा के दौरान माननीय अंचल प्रमुख श्री रजनी कांत ने बताया कि हिंदी भाषा हमारे देश में आसानी से बोली और समझी जाती है। यह आम जन एवं ग्राहक की भाषा है। हिंदी भाषा के साथ - साथ क्षेत्रीय भाषाएं भी बहुत महत्वपूर्ण हैं। क्षेत्रीय भाषा और स्थानीय भाषा में बातचीत और संवाद करने में सहजता और आत्मीयता का अनुभव होता है।



अहमदाबाद

अंचल कार्यालय अहमदाबाद द्वारा दिनांक 05.12.2025 को अंचल प्रमुख, श्री रणजीत कुमार झा, महा प्रबंधक महोदय के मार्गदर्शन व अध्यक्षता में अंचल कार्यालय, अहमदाबाद के सम्मेलन कक्ष में प्रदर्शन सह योजना: एक महत्वपूर्ण कदम जो एक कर्मचारी उठाए जिससे कि हम अपनी सेवा को दस गुना बेहतर बना सकें (Performance Plus Plan : One key step that an employee can take that enables us to improve our service tenfold)" नामक विषय पर एक विचार मंथन सत्र का आयोजन किया गया। इस उपलक्ष में अंचल कार्यालय के उप महाप्रबंधक तथा मानव संसाधन व

जन संपर्क अनुभाग के पर्यवेक्षी कार्यपालक, श्री स्वरूप सिंह चौहान, सहायक महाप्रबंधक भी उपस्थित रहे। इस विचार मंथन सत्र में अंचल कार्यालय अहमदाबाद के विभिन्न अनुभागों के कर्मचारियों ने प्रतिभागिता सुनिश्चित की।



चंडीगढ़

दिनांक 24.12.2025 को श्री कुमार पाल शर्मा, संयुक्त निदेशक, राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, नई दिल्ली द्वारा अंचल कार्यालय चंडीगढ़ का राजभाषा निरीक्षण किया गया इस अवसर पर उन्होंने सभी स्टाफ सदस्यों को राजभाषा नियमों के बारे में अवगत करवाया जिसमें सभी स्टाफ सदस्य एवं कार्यपालकगण उपस्थित रहे।



दिल्ली

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, दिल्ली में कार्यपालकों के लिए हिंदी शब्द बनाओ प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य

अंचल कार्यालय जयपुर के अधिकार क्षेत्र में आने वाले क्षेत्रीय कार्यालय, आरएएच, एलसीबी, एमसीबी, एमएसएमई सुलभ, एआरएम, ईएलबी और वीएलबी के कार्यनिष्पादन की समीक्षा तथा अंचल के एचएनआई ग्राहकों से कारोबार संवृद्धि को लेकर विचार-विमर्श किया।



करनाल

अंचल प्रमुख व महाप्रबन्धक महोदय श्री जी ए अनुपम के प्रभावशाली नेतृत्व में क्षेत्रीय कार्यालय गुडगांव द्वारा दिनांक 11.12.2025 को सेक्टर 46 में एक नई शाखा का उद्घाटन किया गया। उद्घाटन समारोह में अंचल प्रमुख व महाप्रबन्धक श्री जी ए अनुपम, सहित क्षेत्रीय प्रमुख श्री चंदर सिंह तोमर जी मौजूद थे। इस आयोजन में स्थानीय जाने-माने कई एचएनआई (HNIs) ग्राहक मौजूद थे, जिससे एक सामाजिक उत्सव का एहसास हुआ। श्री जी ए अनुपम जी ने डोर स्टेप बैंकिंग जैसी सरकारी योजनाओं तथा रिटेल व एमएसएमई एक्सपो के बारे में जानकारी दी। महोदय ने गोल्ड लोन बिज़नेस शुरू करने तथा एचएनआई ग्राहकों के लिए अधिक-से-अधिक लॉकर आंबटित करने पर जोर दिया। इसके अतिरिक्त ग्राहकों को हमारे बैंक की फ्लैगशिप योजनाओं जैसे केनरा एंजेल, केनरा एसबी सेलेक्ट, चालू खातों तथा भारत सरकार की जन सुरक्षा योजनाओं के बारे में भी जानकारी दी।



कोलकाता

श्री भवेन्द्र कुमार, कार्यपालक निदेशक, ने 19 जनवरी, 2026 को अंचल कार्यालय, कोलकाता का दौरा किया। बैठक में अंचल के आरएएच, एमएसएमई सुलभ, ईएलबी, वीएलबी शाखाएं, वर्टिकल प्रमुखों के कार्यनिष्पादन की गहन समीक्षा की गई। कोलकाता अंचल के उप महाप्रबंधक श्री अमृत घोष ने श्री भवेन्द्र कुमार, कार्यपालक निदेशक और बैठक में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। श्री भवेन्द्र कुमार, कार्यपालक निदेशक ने विभिन्न कारोबार मापदंडों के तहत अंचल की व्यवसायिक स्थिति पर प्रकाश डाला। अपने मुख्य भाषण में वित्तीय वर्ष के इस महत्वपूर्ण चरण में देयता मापदंडों के तहत सुधार की आवश्यकता पर जोर दिया। श्री अरुण कुमार मिश्रा, महाप्रबंधक व अंचल प्रमुख, कोलकाता अंचल, आदिश यादव, महाप्रबंधक, प्रधान कार्यालय ने समीक्षा बैठक के प्रतिभागियों को संबोधित किया।



कोषिकोड

माननीय कार्यपालक निदेशक, श्री भवेन्द्र कुमार ने दिनांक 9.01.2026 को कोषिकोड अंचल कार्यालय का दौरा किया। एमएसएमई वर्टिकल के महा प्रबंधक श्री सुनिल कुमार यादव भी कार्यपालक निदेशक के साथ उपस्थित थे। अंचल के कर्मचारियों के साथ बातचीत के दौरान उन्होंने आस्ति गुणवत्ता, ग्राहक सेवा और अनुपालन पर केंद्रित करने के साथ संतुलित विकास की ज़रूरत पर जोर दिया। उन्होंने सलाह दी कि सभी अनुभाग और शाखा को अपनी रणनीतियों को बैंक के दीर्घकालिक दृष्टिकोण के साथ जोड़ना चाहिए और स्थायी विकास और स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए इन मापदंडों पर लगातार नज़र रखनी चाहिए। उसी दौरान अंचल कार्यालय कोषिकोड के कार्यपालक प्रमुख शाखाएं, आस्ति वसूली

प्रबंधन (एआरएम), मिड कॉर्पोरेट शाखा (एमसीबी), खुदरा आस्ति केंद्र (आरएएच), एमएसएमई सुलभ और क्षेत्रीय कार्यालयों के लिए समीक्षा बैठक आयोजित की गई। अंचल प्रमुख व महाप्रबंधक डॉ रश्मि त्रिपाठी ने वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए अंचल और क्षेत्रीय इकाइयों का व्यापक प्रदर्शन अवलोकन प्रस्तुत किया, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धियों और चुनौतियों को रेखांकित किया गया। समीक्षा के दौरान, कार्यपालक निदेशक ने कई शाखाओं और इकाइयों के सराहनीय प्रदर्शन की सराहना की। साथ ही, उन्होंने उन शाखाओं को भी दिशा-निर्देश दिए, जिनका प्रदर्शन अपेक्षा से कम रहा था और उन्हें तत्काल सुधारात्मक कार्रवाई के निर्देश भी दिए गए।



पटना

दिनांक 24 दिसंबर 2025 को माँ सीता की नगरी सीतामढ़ी में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति सीतामढ़ी की छमाही बैठक आयोजित की गई जिसकी अध्यक्षता अग्रणी जिला प्रबंधक सह अध्यक्ष (नराकास) श्री अनिल सिंह ने की। इस बैठक में



सभी सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुख उपस्थित हुए। केनरा बैंक का प्रतिनिधित्व मुख्य शाखा के मुख्य प्रबंधक श्री कुमार संतोष ने किया। इस बैठक में वर्ष 2024-25 के दौरान राजभाषा के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ कार्यान्वयन हेतु सदस्यों को प्रमाणपत्र दिया गया। अत्यंत हर्ष के साथ सूचित करने है कि केनरा बैंक को शील्ड योजना में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

पुणे

राजभाषा अनुभाग, प्रधान कार्यालय के निदेशानुसार दिनांक 11.12.2025 को पुणे अंचल के स्टाफ सदस्यों के लिए अध्ययन एवं विकास केन्द्र, पुणे में डिजिटल रुपी - वर्तमान एवं भविष्य विषय पर एक राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में अंचल के कुल 45 स्टाफ-सदस्यों ने भाग लिया। संगोष्ठी के लिए निर्धारित डिजिटल रुपी - वर्तमान एवं भविष्य विषय पर कार्यक्रम में उपस्थित सदस्यों के प्रमुख विचार कुछ इस प्रकार रहे। वर्तमान में देश में कुछ अध्ययनों के रूप में ई३ के उपयोग का पायलट परीक्षण कार्य किया जा रहा है। पायलट परीक्षण खुदरा (सार्वजनिक) और थोक (बैंक और अन्य संस्थान) खंडों में किया जा रहा है।



रांची

रांची अंचल के महाप्रबंधक श्री सुजीत कुमार साहू के नेतृत्व में दिनांक 12.01.2026 को अंचल कार्यालय, रांची ने एक अभूतपूर्व उपलब्धि हासिल की है। रांची अंचल ने कुल व्यवसाय में ₹50,000 करोड़ का आँकड़ा सफलतापूर्वक पार कर लिया है। इस अवसर पर महाप्रबंधक श्री सुजीत कुमार साहू सर ने अपने सम्बोधन में यह अवगत कराया कि यह

उपलब्धि रांची अंचल के प्रत्येक कर्मचारी द्वारा दिखाए गए समर्पण, लगन, सहयोग और अटूट प्रतिबद्धता का प्रतिफल है। हर प्रयास - चाहे वह छोटा हो या बड़ा - इस सफलता में योगदान प्रदान किया गया है। प्रत्येक कर्मचारी का जुनून, ईमानदारी और टीमवर्क ने इसे संभव बनाया है।



तिरुवनंतपुरम

अंचल कार्यालय, तिरुवनंतपुरम द्वारा 77वें गणतंत्र दिवस समारोह का भव्य आयोजन किया गया। श्री सुनिलकुमार एस., महाप्रबंधक व अंचल प्रमुख ने दिनांक 26 जनवरी, 2026 को अंचल कार्यालय में झंडा फहराकर गणतंत्र दिवस का संदेश दिया। श्री अजय कुमार सिंह, उप महाप्रबंधक व

श्री अशोक कुमार, उप महाप्रबंधक, तिरुवनंतपुरम दक्षिण क्षेत्रीय कार्यालय ने भी कार्यक्रम में उपस्थित रहकर सभा को संबोधित किया। बैंक के कर्मचारी सदस्यों और उनके परिवारजनों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम में सक्रियरूप से भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान श्री सुनिलकुमार एस., महाप्रबंधक व अंचल प्रमुख एवं अन्य उपस्थित कार्यपालकों ने सुरक्षा गार्ड एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम के प्रतिभागियों को सम्मानित किया। कार्यक्रम का समन्वयन कार्य श्री अनीष कुमार एस., सुरक्षा प्रबंधक एवं कार्यक्रम को एक सूत्र में बाँधने का कार्य श्री षोजो लोबो, वरिष्ठ राजभाषा प्रबंधक द्वारा किया गया। अंचल कार्यालय एवं स्थानीय शाखाओं / कार्यालयों के कर्मचारीगण एवं परिवार के सदस्य भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।



**“When discipline guides effort,
focus strengthens.
When focus strengthens,
skills sharpen.
When skills sharpen,
confidence grows.
When confidence grows,
success follows.”**
– Swami Vivekananda





Shreyas Contest 2025
1st Prize
English Poetry

SHALL I LEAVE THEN ? (A Soldier's Final Letter)



Raghavendra B Kyadad

Officer
Dharwar Subhas RD Main

I still owe my wife a song,
my son a bedtime story,
my mother a gentle rub on her tired feet
my father the comfort of
leaning on my shoulder
But the king keeps stealing my tomorrows,
mortgaging them to his battles
I am a ledger of unfinished debts
And he wants to balance me in blood

I looked into the broken mirror
my reflection fractured
a piece soldier, a piece son,
a piece husband, another piece a father
None of them complete,
All broken, all betrayed

Let me end this,
not as a hero sculpted on their medals,
but as a man unhooking
himself from their hooks
No trumpet will sound, no banner will wave
I'll fold my own flag, lower my own shadow
Let my last act be mine,
not their script for another martyr's tale

And when I return in a box,
Tell my boy I was not a coward,
Who died without sacrifice
Tell him I died,
as a strong protest
against vultures who wait
to glorify my death and call me martyr
and fool a thousand other needy lives
into trading their tomorrows
for someone else's throne
I shall return again, not as a ghost,
but as a story of protest, a legend
to warn the next sons
not to be lured into the trap of martyrdom

And I shall be complete at last,
Gathering every fragment of my fractured self,
Joining all the broken pieces of the mirror
And holding it before the King,
To show him his true demon face.

*(Dedicated to over 500 PSB officers
who have died by suicide in the last decade)*



Shreyas Contest 2025
1st Prize
Hindi Poetry

शाश्वत सत्य है वर्तमान



दिव्या प्रजापति

अधिकारी

हर्ष नगर शाखा, कानपुर

युद्ध प्रारंभ हुआ है पार्थ,
पर मन ही मन है तू उलस,
कुछ रह गए हैं प्रश्न शेष,
कुछ सामान्य और कुछ विशेष।

हे पृथापुत्र! क्या संशय है?
यह युद्ध धर्म का निश्चय है।
तुम देखते स्वजन के घाव
जो बन गये संताप भाव।

हे माधव! युद्ध विध्वंस है,
सम्पूर्ण समाज का अंत है।
मानवता का होगा विनाश,
फिर अनाचार का होगा वास।
जिस समर में सब हो अनर्थ,
ऐसी विजय का फिर क्या है अर्थ?

अट्टहास कर तब बोले केशव,
"क्यों चिंतन है तुझको पार्थ?"

जब बना हूँ मैं तुम्हारा 'देशक',
तुम अपना धर्म करो चरितार्थ।

यह संहार निश्चित है अर्जुन,
तुम सिर्फ एक निमित्त हो,
शस्त्र उठाओ और संघर्ष करो,
मोह-माया से ना भ्रमित हो।

युद्ध ही तुम्हारा कर्म है,
और यह कर्म तुम्हारा धर्म है।
यह परमात्मा की इच्छा है,
उस पर तुम करो विश्वास।
हे अर्जुन! तुम कर्म करो,
ना करो फल की कोई आस।

नियति नहीं बदलती है,
समय की धारा बहती है।
भूत-भविष्य सब स्वप्न समान,
शाश्वत सत्य है वर्तमान।
शाश्वत सत्य है वर्तमान।



Shreyas Contest 2025
2nd Prize
English Poetry

The River Remembers

I am the river.
 Older than your cities,
 younger than your dreams.
 I have carved my name through mountains,
 not with fury—
 but with patience sharper than any blade,
 a patience that outlasts kingdoms.
 I have tasted the salt of empires' tears,
 heard prayers dissolve into rain,
 seen lovers carve promises into my banks,
 only for the seasons to wash them away.
 Footprints fade, bridges crumble,
 yet my current carries on—
 steady, unstoppable, certain.
 The tallest trees bow in time.
 Even stone forgets its hardness
 when I decide to stay.
 And I will stay.
 Winning?
 It is not the frantic rush to the shore.
 It is the courage to keep moving
 when the world turns its back,
 when silence is the only applause,
 when the night is long and the moon is thin.
 I laugh with the moon,
 not for where I have been—
 but for the horizon still waiting.
 Because I am the river.
 And the river remembers.



Basavraj Kulali
Officer
Head Office



Shreyas Contest 2025
2nd Prize
Hindi Poetry

ए! वक्रत मुझे मेरा बचपन लौटा दे



मोहम्मद इमरान अंसारी
अधिकारी
मुगदाबाद क्षे.का.

जिंदगी का वो हसीं दौर लौटा दे
ए! वक्रत मुझे मेरा बचपन लौटा दे.....

जब माँ के आँचल में छुप जाता था
जब न किसी गम से मेरा नाता था,
जब आगे निकल जाने की होड़ न थी
जब दुनिया की ये पागल दौड़ न थी,

जब पल में रूठना और पल में मनाना था
जब दोस्ती का खूबसूरत वो ज़माना था,
जब मोहल्ले से आती शिकायतें थी
जब हुआ करती मासूम शरारतें थी,

जब पेड़ों से तोड़ते बेर और आम थे
जब रखते एक दूसरे के कैसे-कैसे नाम थे,
जब धूप, बारिश, आँधी सब झेला करते थे
जब सुबह से शाम तक बस खेला करते थे,

जब हर सुबह होता नया सवेरा था
जब पत्थर में भी दिखता हीरा था,
जब दिल में न मेरा-तुम्हारा था
दुनिया में जो भी था, सब हमारा था,

जिंदगी का वो हसीं दौर लौटा दे
ए! वक्रत मुझे मेरा बचपन लौटा दे.....



Shreyas Contest 2025
1st Prize
Colour Photography



Ramakrishna
Customer Service Associate
Hospet Main Bazar



Shreyas Contest 2025
2nd Prize
Colour Photography



Nandu A
Customer Service Associate
Mukkali



SIGNING OF MEMORANDUM OF UNDERSTANDING (MoU) WITH NBCC (INDIA) LTD

For construction of New Head Office Annex Building at Manyatha Tech Park, Bengaluru

Estate Policy & Control Section, General Administration Vertical.Retail Credit & General Administration Wing

We are pleased to inform all staff members that Bank has initiated the construction of a State of the Art Head Office Annex Building at our own plot measuring 1.24 acres, located inside the iconic Tech Park. The building is planned as an iconic multi-storey construction with Triple Basement + 11 Floors, with futuristic design standards.

A Memorandum of Understanding (MoU) has been signed with National Building Construction Corporation (India) Ltd, a Government of India Navaratna PSU on 30.12.2025 for the development of this prestigious project. NBCC (India) Ltd with its extensive expertise in project management and execution of large-scale institutional projects, will be the implementation partner for this landmark development.

The building is proposed to house various Verticals / Wings of Head Office upon completion, targeted by 30.06.2028.



From Left to Right Sri. Manmohan Singh (AGM, GA Vertical), Sri. Naveen Krishna (Project Executive, NBCC), Sri. Veerappa F P (DM, GA Vertical), Smt Ramya AS (GM, NBCC), Smt R Anuradha (CGM, RC&GA Wing), Sri. Rama Naik K (GM, GA Vertical), Sri. Mohan Kumar DC (DGM, GA Vertical), Sri. Sarath Krishnan S (Manager TFO, GA Vertical)



Shreyas Contest 2025
1st Prize
Travelogue

Pahalgam Reflections: A Journey of Healing



Daita Ujwala

Officer
Tirupati CO

The morning mist clung to the Lidder River like memories we cannot quite shake off. As I stood on the balcony of my modest guesthouse in Pahalgam, sipping the traditional noon chai that had become my morning ritual, I could not help but think how different this trip felt from any other I had taken before. Working at the bank for the past eight years, I had grown accustomed to the sterile predictability of spreadsheets and customer inquiries. But this journey to Kashmir's crown jewel was not about vacation days or Instagram photos - it was about finding something I had lost a few months ago.

The incident still haunts me during quiet moments. It was a Tuesday afternoon when Mrs. Uma, an elderly pensioner, came to our branch in tears. Due to a system error that I should have caught earlier, her monthly pension had not been credited for two months running. She broke down at my desk, explaining how she had been surviving on borrowed rice from neighbours, too proud to ask her children for help. The weight of that moment - seeing how a simple oversight could unravel someone's dignity - had been eating away at me ever since. My manager assured me it was not entirely my fault, that these things happen, but the guilt had settled in my chest like a stone.

Kashmir, my colleague Mohan had suggested, was where people went to find peace. The mountains have a way of putting things in perspective, he had said, and though I had initially dismissed it as travel brochure wisdom, here I was, three days into what was supposed to be a week-long soul-searching expedition.

Pahalgam revealed itself slowly, like a shy child warming up to a stranger. The first day, I had been too caught up in the mechanics of travel - checking into the

guesthouse, figuring out local transport, negotiating with taxi drivers who quoted prices that made my banker's brain wince. But by the second morning, the Valley of Shepherds began to work its quiet magic.

I decided to trek to Baisaran, the Mini-Switzerland that every local insisted I could not miss. The path wound through dense pine forests where the air was so clean it almost hurt to breathe after months of Delhi pollution. Halfway up, I encountered Akram Ali, a local shepherd in his sixties, resting with his flock of sheep. Something about his weathered face and patient eyes made me strike up a conversation.

Haji, you look like you carry the weight of the world, he said in broken Hindi, offering me some of his simple lunch - rotis and salted tea. There was no judgment in his voice, just observation.

As we sat there, watching his sheep graze peacefully against the backdrop of snow-capped peaks, I found myself telling him about Mrs. Uma, about the sleepless nights, about feeling like I had failed at the one thing that should have been straightforward - helping people manage their money safely. Akram Ali listened without interruption, occasionally nodding. In the mountains, he finally said, we learn that avalanches happen. Sometimes a single pebble starts it, sometimes it is just the weight of too much snow. But the mountain does not blame itself for the avalanche. It grieves, it heals, and then it stands strong again for the next winter.

The simplicity of his metaphor hit me harder than any corporate training session ever had. We parted ways at sunset, and I never saw him again, but his words followed me down the mountain.

The next day brought me to Aru Valley, a pristine meadow that stretched endlessly toward the Kolahoi Glacier. I had hired a local guide, Azmal Bhai, a young man studying to become a teacher. He was full of stories about the valley's history, but what struck me most was his resilience. He spoke casually about the challenges his community faced - tourism disruptions, harsh winters, limited opportunities - yet there was no bitterness in his voice.

Every season teaches us something different, he said as we walked through fields dotted with wildflowers. Winter teaches patience, spring teaches hope, summer teaches gratitude, and autumn teaches letting go.

I thought about Mrs. Uma again, but this time with less self-recrimination. She had called me the week before I left for Kashmir to thank me for personally following up on her case and ensuring she received her pending amounts with interest. The damage was repaired, but I had been so focused on the initial failure that I had barely registered the successful resolution.

On my fourth day, I took the famous pony ride to Chandanwari, the starting point for the Amarnath pilgrimage. The pony-wallah, a chatty man named Sandhani, shared stories of pilgrims he had guided over the years. Some came seeking blessings, others running from troubles, and many, he said with a knowing smile, came to understand that both seeking and running were part of the same journey.

The landscape around Chandanwari was stark and beautiful - a moonscape of rocky terrain punctuated by patches of snow even in late summer. Standing there, surrounded by pilgrims and tourists from across the country, I realized how small my troubles were in the grand scheme of things, yet simultaneously how valid my feelings of responsibility were. Both could be true.

The evenings in Pahalgam became my favourite time. The main market would come alive with vendors selling everything from dried fruits to woollen shawls. I had found a small chai shop run by an elderly couple, Haji Mastan and his wife, who treated every customer like family. Their own son worked in Srinagar, and they

spoke of him with pride mixed with longing.

Children must fly to find their own sky, Haji Mastan told me one evening. But we old ones, we stay to tend the nest. There was wisdom in their acceptance, a peace that came from understanding their role in the larger story.

My last morning in Pahalgam, I returned to the Lidder River where I had started this journey. The mist was lifting, revealing the crystal-clear water rushing over smooth stones. I thought about Mrs. Uma one more time, but now the memory came with a different texture. Yes, I had made an error that caused her temporary hardship. But I had also been the one to personally ensure it was fixed, to stay late that evening calling different departments, to follow up daily until her dignity was restored.

The mountains had taught me what Akram Ali meant about grieving and healing. I grieved for the pain I had inadvertently caused, but I could also acknowledge the care with which I had worked to repair it. The guilt would always be there, a reminder to be more careful, but it no longer had to define my entire sense of professional worth.

As the taxi wound its way back toward Srinagar airport, I carried with me more than just photographs and souvenirs. I brought back the shepherd's wisdom about mountains and avalanches, the guide's understanding of seasons and their lessons, and the chai-wallah's acceptance of life's complexities.

Returning to Delhi, to the familiar rhythm of the bank, I felt different. Mrs. Uma visited our branch the following week for a routine transaction, and when she smiled and asked if I had had a good trip, I realized that healing - both hers and mine - had indeed taken place.

Kashmir had not erased my mistake or my responsibility, but it had shown me how to carry both with grace. In the Valley of Shepherds, I had learned to be gentle with myself while remaining committed to doing better. And sometimes, that is the most profound journey of all.



Shreyas Contest 2025
1st Prize
Travelogue - Hindi

उत्तर भारत की सुनहरी गलियों में: एक पारिवारिक यात्रा का सफरनामा

दीपक ओझा

वरिष्ठ प्रबंधक
प्रधान कार्यालय



उत्तर भारत की सुनहरी गलियों में: एक पारिवारिक नवंबर की सर्द सुबह थी। इंदौर की हवा में हल्की सी ठंडक घुली हुई थी, जिसने हमारी पाँच वयस्कों और एक नन्ही परी की टीम को कंबल से बाहर निकलने पर मजबूर कर दिया। परिवार में मैं, मेरे माता-पिता, मेरी बहन, मेरी पत्नी और मेरी 3 साल की बेटी थी। हमारे पास एक प्राइवेट कार थी और बैंक की एलएफसी (Leave Fare Concession) योजना के तहत, हमने इस यात्रा को एक सपने से हकीकत बनाने का फैसला किया था। लक्ष्य था भारत के स्वर्णिम त्रिकोण यानी जयपुर, आगरा और दिल्ली को अपनी आंखों में बसाना, साथ ही बीच में भगवान कृष्ण की नगरी मथुरा के दर्शन करना।

कार में सामान पैक हुआ, बेटी के लिए उसके पसंदीदा खिलौने और स्नैक्स रखे गए। माँ ने घर के बने पूड़ी-आलू और ठेले पर मिलने वाले गर्मा-गर्म समोसे पैक कर दिए थे, जो रास्ते में हमारी भूख शांत करने के लिए बिल्कुल सही थे। पिताजी ने गाड़ी की चाबी घुमाई और हम इंदौर से जयपुर के लिए निकल पड़े।

पहला पड़ाव: रंगीला जयपुर (The Pink City)

इंदौर से जयपुर की 600 किलोमीटर की यात्रा एक सुखद अनुभव थी। सड़कें अच्छी थीं और सुबह की धुंध में खिड़की से बाहर के नजारे बेहद मनमोहक लग रहे थे। जैसे-जैसे हम राजस्थान की सीमा में दाखिल हुए, परिदृश्य बदलता गया। हरियाली की जगह सूखी, सुनहरी मिट्टी और दूर-दूर तक फैले हुए खेत नजर आने लगे। रास्ते में छोटे-छोटे ढाबों पर हमने राजस्थानी चाय और परांठे का स्वाद लिया। हमारी नन्ही बेटी कार की खिड़की से बाहर दौड़ते जानवरों को देखकर खूब हँस रही थी। खासकर ऊंट उसके लिए एक विस्मित कर देने वाला जीव था।

दोपहर होते-होते हम जयपुर पहुँच चुके थे। शहर में कदम रखते ही गुलाबी रंग की भव्य इमारतें हमारा स्वागत करने लगीं। हमने एक होटल में चेक-इन किया और ताजगी महसूस करने के बाद सबसे पहले हम हवा महल देखने गए।



यह पाँच-मंजिला महल अपनी 953 छोटी खिड़कियों (झरोखों) के लिए जाना जाता है। इसे सन् 1799 में महाराजा सवाई प्रताप सिंह ने बनवाया था। हवा महल महाराजा जय सिंह का विश्राम करने का पसन्दीदा स्थान था क्योंकि इसकी आन्तरिक साज-सज्जा बेहद खूबसूरत है। इसके सभी कक्षों में, सामने के हिस्से में स्थित झरोखों से सदा ही ठण्डी हवा बहती रहती थी, जिसकी ठण्डक का प्रभाव गर्मियों में और बढ़ाने के लिए सभी कक्षों के सामने के दालान में फव्वारों की व्यवस्था भी है। माँ ने बताया कि इन झरोखों को इसलिए बनाया गया था ताकि रनियाँ बिना किसी को देखे बाहर के जुलूस देख सकें। यह जानकर बेटी ने भी उत्सुकता से उन झरोखों को अपनी छोटी-छोटी उंगलियों से छुआ। वह खिड़कियों को कौतुहल से देखती की आखिर इनके अंदर क्या है?

अगले दिन, हमने आमेर का किला देखा। अरावली पहाड़ियों पर बना यह किला अपनी भव्य वास्तुकला, शाही विरासत और

सुंदर दृश्यों के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है और किसी राजा के भव्य स्वप्न जैसा लगता है। किले की नींव 1592 में राजा मान सिंह प्रथम ने रखी थी, जो मुगल सम्राट अकबर के नवरत्नों में से एक थे। बाद में उनके उत्तराधिकारियों ने इसमें सुधार और विस्तार का काम किया। आमेर का किला कछवाहा वंश के गौरव का प्रतीक है और इसे यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल के रूप में भी मान्यता मिली हुई है। किले के अंदर दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास और शीश महल की खूबसूरती अविस्मरणीय थी। शीश महल में लगे छोटे-छोटे शीशों को देखकर पत्नी ने कहा, यह सच में जादू जैसा है! वहाँ हमने हाथी की सवारी भी की, जो बेटी के लिए सबसे रोमांचक अनुभव था।

इसके बाद हमने सिटी पैलेस का रुख किया, जो मुगल और राजपूत स्थापत्य कला का एक ज्ञानदार नमूना है। महल के अंदर मुबारक महल में रखी शाही पोशाकें हमें इतिहास के पन्नों में ले गईं।



शाम को हमने जंतर मंतर देखा, जहाँ पत्थरों से बने विशाल खगोलीय उपकरण थे और इसे महाराजा सवाई जय सिंह द्वितीय ने 1728 से 1734 के बीच बनवाया था। यह दुनिया की सबसे बड़ी और सबसे अच्छी तरह से संरक्षित वेधशालाओं में से एक है। खगोल विज्ञान के इतिहास में इसके योगदान को देखते हुए, इसे 2010 में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था। पिताजी ने बेटी को समझाया कि कैसे ये उपकरण समय और तारों की गणना करते हैं।

शहर के व्यस्त बाजारों में हमने राजस्थानी पारंपरिक गहने और कपड़े खरीदे और दाल-बाटी चूरमा का स्वाद लिया।

इसके अलावा हमने जयपुर की मशहूर प्याज की कचौड़ी और घेवर का भी लुत्फ उठाया।

कम ज्ञात जगहों में हमने गलता जी मंदिर का दौरा किया, जिसे 'बंदर मंदिर' भी कहा जाता है, जहाँ बड़ी संख्या में बंदर देखने को मिलते हैं। यहाँ के तालाब और शांत वातावरण ने हमें बहुत सुकून दिया।

इसके अलावा हमने बिरला मंदिर, सिसोदिया रानी का बाग, नाहरगढ़ का किला एवं वैक्स म्यूजियम भी देखा। पूरा परिवार इन जगहों की खूबसूरती एवं स्थापत्य कला से मंत्रमुग्ध हो चुका था।

सबसे बड़ा अजूबा जो की विश्व की सबसे बड़ी तोप यानि की जयबाण तोप थी, जिसने हमें असमंजस एवं आश्चर्य में डाल दिया की आखिर इसका इस्तेमाल कैसे होता होगा। एक गाइड द्वारा हमें समझाया गया कि यह तोप 1720 में जयपुर किले के प्रशासक जयसिंह द्वितीय द्वारा मुगल सम्राट मोहम्मद शाह के शासनकाल में जयगढ़ किले में बनवाई गई थी। तोप को एक विशाल पहिंदार गाड़ी पर रखा गया है, जो उस समय के इंजीनियरिंग कौशल का एक उत्कृष्ट नमूना है। यह अपनी विशालता के बावजूद मोड़ने और संभालने की क्षमता रखती है। इस तोप को सिर्फ एक बार परीक्षण के लिए चलाया गया था, क्योंकि जयपुर पर कभी हमला नहीं हुआ। कहा जाता है कि जब इसे दागा गया था, तो इसका गोला जयपुर से करीब 35 किलोमीटर दूर चाकसू में गिरा, जहाँ एक विशाल तालाब बन गया था।

दूसरा पड़ाव: प्यार और इतिहास का शहर आगरा (City of Love and History)

जयपुर से आगरा की हमारी यात्रा तीन घंटे से थोड़ी ज्यादा थी। यमुना एक्सप्रेस-वे के किनारे की यात्रा बेहद सहज और तेज थी। जैसे ही हम आगरा पहुँचे, हवा में एक अलग ही एहसास था – प्यार और इतिहास का एहसास।

हमारी यात्रा का मुख्य आकर्षण, ताजमहल सुबह के समय सबसे खूबसूरत लगता है। इसलिए हमने अगली सुबह सूर्योदय के समय इसे देखने का फैसला किया। सुबह की पहली किरणों जब सफेद संगमरमर पर पड़ीं, तो ताजमहल



गुलाबी और नारंगी रंग में चमक उठा। अपनी आंखों के सामने यह भव्य संरचना देखकर हम सब भावुक हो गए। बेटी के लिए यह एक जादुई महल जैसा था।

मैंने अपनी पत्नी को बताया कि यह प्यार का एक अद्भुत प्रतीक है, जिसका निर्माण मुगल बादशाह शाहजहाँ ने अपनी प्रिय पत्नी मुमताज महल की याद में करवाया था। इसका निर्माण 1632 में शुरू हुआ और लगभग 1648 में पूरा हो गया, जिसमें लगभग 22 साल का समय लगा। यह मुगल वास्तुकला का एक बेहतरीन उदाहरण है, जिसमें फारसी, भारतीय और इस्लामी शैलियों का मिश्रण देखने को मिलता है। यह पूरी तरह से सफेद संगमरमर से बना है, जिसमें खूबसूरत नक्काशी और अर्ध-कीमती पत्थरों की कारीगरी है। माँ और पिताजी ने भी इस भव्यता को देखकर अपनी खुशी व्यक्त की।

ताजमहल को 1983 में यूनेस्को द्वारा "विश्व धरोहर स्थल" घोषित किया गया था। इसे दुनिया के सात अजूबों में से एक भी माना जाता है।

ताजमहल के बाद हमने आगरा का किला देखा, जो लाल बलुआ पत्थर से बना एक विशाल किला है। किले का निर्माण 1565 में तीसरे मुगल सम्राट अकबर ने शुरू करवाया था। यह किला कई पीढ़ियों तक मुगल सम्राटों का मुख्य निवास स्थान रहा। अकबर ने इसे एक सैन्य गढ़ और शाही निवास के रूप में बनवाया था। यह किला मुगलों की ताकत और ज्ञान का प्रतीक है। किले के अंदर मोती मस्जिद, दीवान-ए-आम और

दीवान-ए-खास जैसे कई ऐतिहासिक स्थल थे। हमने जहाँगीर का महल और खास महल भी देखा, जिनकी वास्तुकला अद्भुत थी।



आगरा में हमने फतेहपुर सीकरी भी देखा, जो कभी मुगलों की राजधानी हुआ करती थी। यहाँ बुलंद दरवाजा (यह 1601 में गुजरात पर अकबर की जीत के उपलक्ष्य में बनाया गया एक विशाल और दुनिया का सबसे ऊँचा प्रवेश द्वार है), पंच महल (यह पाँच मंजिला महल है, जिसका उपयोग मनोरंजन और विश्राम के लिए किया जाता था), और सलीम चिश्ती की दरगाह (यह दरगाह मुगल वास्तुकला का एक बेहतरीन उदाहरण है, जो कि सफेद संगमरमर की बनी है और जामा मस्जिद के चतुर्भुज के अंदर स्थित है), जैसी इमारतें हैं।

यहाँ की भव्यता और इतिहास ने हमें मंत्रमुग्ध कर दिया। शाम को हमने आगरा का प्रसिद्ध पेठा खरीदा और रामबाग में घूमते हुए अपनी यात्रा की थकान मिटाई। रामबाग, जिसे बाबर ने बनवाया था, एक बहुत ही शांत और सुंदर मुगल उद्यान है। आगरा की गलियों में हमने आलू टिक्की, भेलपुरी और दालमोट का भी स्वाद लिया।

तीसरा पड़ाव: कृष्ण की नगरी मथुरा (The City of Krishna)

आगरा से मथुरा सिर्फ 60 किलोमीटर दूर है। यह यात्रा बहुत कम समय में पूरी हो गई। मथुरा में प्रवेश करते ही वातावरण में एक अलग ही आध्यात्मिक शांति महसूस होने लगी। शहर की हवा में कृष्ण भजनों और घंटियों की मधुर ध्वनि घुली हुई थी। सबसे पहले हम श्री कृष्ण जन्मभूमि मंदिर गए, जो उस स्थान पर बना है जहाँ भगवान कृष्ण का जन्म हुआ था। मंदिर में

प्रवेश करते ही एक दिव्य ऊर्जा का एहसास हुआ। हमने पूजा की और आरती में भाग लिया। माँ ने बताया कि इस जगह का इतिहास बहुत गहरा है और इसका धार्मिक महत्व अतुलनीय है। बेटी ने भगवान कृष्ण की सुंदर मूर्तियों को देखकर खुशी से तालियाँ बजाईं।

इसके बाद हम वृंदावन के **प्रेम मंदिर** गए। यह मंदिर अपनी सफेद संगमरमर की भव्यता, जटिल नक्काशी और खूबसूरत लाइट शो के लिए जाना जाता है। शाम के समय जब यहाँ की लाइट्स जलती हैं, तो यह मंदिर किसी स्वर्ग जैसा लगता है। बेटी तो जैसे मंत्रमुग्ध हो गई थी और अपनी उंगलियों से उस भव्यता को छूने की कोशिश कर रही थी।

मथुरा में हमने विश्राम घाट पर यमुना नदी की शाम की आरती देखी। यह एक अविस्मरणीय अनुभव था। हजारों दीयों की रोशनी और मंत्रों की गूँज ने वातावरण को पूरी तरह से आध्यात्मिक बना दिया था। यहाँ हमने मथुरा के प्रसिद्ध पेड़े, रबड़ी और माखन मिश्री का स्वाद लिया, जो हर तरफ मिलते हैं। मथुरा के ये व्यंजन हमें इतने पसंद आए कि हमने पूरे परिवार के लिए पैक करवा लिए। यहाँ की आलू-पूरी और जलेबी का स्वाद भी लाजवाब था, जिसे हमने सुबह के नाश्ते में खाया।

अंतिम पड़ाव: भारत का दिल, दिल्ली (The Heart of India)

मथुरा से दिल्ली की यात्रा करीब 3-4 घंटे की थी। जैसे ही हम दिल्ली पहुँचे, हमें एक अलग ही ऊर्जा महसूस हुई। यह शहर इतिहास और आधुनिकता का अद्भुत संगम है।

सबसे पहले हम **इंडिया गेट** गए, जो प्रथम विश्व युद्ध में शहीद हुए सैनिकों की याद में बना है। शाम के समय यहाँ की लाइटिंग और फव्वारे बहुत सुंदर लगते हैं। बेटी ने यहाँ खूब दौड़-भाग की और हम सबने एक परिवार की तस्वीर ली।

अगले दिन, हमने **लाल किला** देखा, जिसे शाहजहाँ ने बनवाया था। दिल्ली का लाल किला एक ऐतिहासिक किला है, जो पुरानी दिल्ली में स्थित है। इसका निर्माण पाँचवें मुगल बादशाह शाहजहाँ ने 17वीं शताब्दी में करवाया था, जब उन्होंने अपनी राजधानी आगरा से दिल्ली स्थानांतरित की थी। इसकी लाल बलुआ पत्थर की दीवारें और भव्य वास्तुकला



मुगलों की शक्ति का प्रतीक हैं। किले के अंदर हमने कई संग्रहालय देखे, जिन्होंने हमें भारत के स्वतंत्रता संग्राम के बारे में बहुत कुछ सिखाया। इसके ठीक सामने जामा मस्जिद की भव्यता भी देखने लायक थी।

फिर हम **कुतुब मीनार** गए, जो भारत की सबसे ऊँची ईंटों से बनी मीनार है। यह 73 मीटर ऊँची है और अपने आसपास के ऐतिहासिक स्मारकों के साथ मिलकर एक अद्भुत दृश्य प्रस्तुत करती है। हमने हुमायूँ का मकबरा भी देखा, जिसे ताजमहल का पूर्ववर्ती माना जाता है। यहाँ की शांत और हरी-भरी जगह हमें बहुत अच्छी लगी।

शाम को हम दिल्ली के प्रसिद्ध चांदनी चौक गए। यहाँ की गलियाँ खाने-पीने और खरीदारी के शौकीनों के लिए स्वर्ग हैं। हमने यहाँ की मशहूर 'दौलत की चाट', परांठे वाली गली के परांठे और पुरानी जलेबी वाले की जलेबियों का स्वाद लिया। दिल्ली की इस यात्रा ने हमें एक अलग ही स्वाद से रूबरू कराया। यह अनुभव था भारत के इतिहास, संस्कृति और आधुनिक जीवनशैली को एक साथ जीने का।

हमारी यह यात्रा केवल घूमने-फिरने की नहीं थी, बल्कि यह परिवार के साथ बिताए गए अनमोल पलों का एक संग्रह थी। हर शहर में हमने एक-दूसरे के साथ समय बिताया, हँसे, खाया-पिया और नई चीजें सीखीं। हमारी नन्ही बेटी के लिए यह एक सीखने और खुशियों से भरी यात्रा थी। जब हम वापस इंदौर लौट रहे थे, तो कार में चारों तरफ शांति थी, क्योंकि हम सभी सुनहरी यादों में खोए हुए थे। यह यात्रा हमारे दिलों में हमेशा के लिए बसी रहेगी।



----- WORD QUEST -----

Find the hidden words and enjoy a quick brain break.

T	T	S	D	R	H	A	P	P	Y
K	L	H	U	S	T	L	E	R	A
C	O	O	L	P	L	A	Y	E	C
A	T	U	V	I	B	E	D	E	H
L	O	W	P	E	A	C	E	L	T
M	C	H	I	L	L	P	F	K	L
S	M	I	L	E	T	Y	U	I	I
T	R	E	N	D	Y	A	N	N	K
W	I	N	D	H	O	P	E	D	E
S	T	R	E	N	G	T	H	I	T

----- Finish the Lines -----

Let's see how creative you are! Simply read the sentences below and complete the lines. Answers may vary: a few sample responses are provided for reference:

1. A good day at work begins
2. Success feels better when
3. Happiness is finding time
4. Coffee tastes better when
5. Mondays feel easier when
6. Every challenge teaches us
7. A small act of kindness can
8. Progress begins the moment
9. My favourite way to relax is
10. At the end of the day, work feels meaningful when

1. ...with a positive mindset
 2. ...it is shared
 3. ...to pause and smile
 4. ...the day starts early
 5. ...the plan is ready
 6. ...to be more patient
 7. ...change someone's day
 8. ...we take the first step
 9. ...a quiet evening at home
 10. ...it makes a difference

ANSWERS



Shreyas Contest 2025
2nd Prize
Travelogue

Breezing Through Japan's Gentle Autumn Breeze

Reveling in Tokyo's Frenzy, Seeking Serenity in Fuji's calm



Safin Ahmed S

Customer Service Associate
Trichy Collectorate

After a 16-hour flight from Chennai, we arrived at Narita International Airport. The tiredness of the long journey instantly faded away as we entered the calm, tranquil atmosphere of the airport. Its minimalistic design – with warm whites and soft beiges – created a soothing environment. Immigration was seamless. The sticker-type Japanese visa with our photo felt like a souvenir in itself to cherish. With our passports stamped, our journey through autumnal Japan began – a blend of Tokyo's vibrant energy and Mount Fuji's serene beauty.

Autumn's welcome

We timed our trip during November to witness Japan's spectacular autumn foliage. November is the peak fall season in Japan, with temperatures in Tokyo ranging from 8 to 15 degrees Celsius. When we entered Tokyo, we were welcomed by a gentle cold breeze and trees painted in various hues of brown, green, and yellow amidst towering skyscrapers. Despite being one of the busiest megacities in the world, Tokyo has well-integrated green spaces in its urban planning, throughout every district.

Settling in

We stayed at APA Hotels in Roppongi, with a bird's eye view of the city from our room on the 15th floor. The floor space was considerably small, focusing on utility and comfort. In Japan, designs are usually compact and minimalistic yet functional and aesthetic, prioritizing efficiency over luxury. This is due to several factors, including culture, geography, and functionality. Japan is a mountainous country

with only one third of its land flat, which makes cities densely populated. The Japanese follow the cultural principle of 'Ma', emphasizing intentional and efficient use of open spaces. Moreover, compact designs allow for efficient public transportation and more open green spaces around the city. Another notable feature that caught our attention was the 'smart toilet' which is a standard in most places. These washlets have built-in water sprays, heated automated toilet seats and air dryers. Its widespread adoption depicts Japanese emphasis on hygiene and their largely aging population, demonstrating how technology can improve the lives of common people.



Shinjuku

After a short, refreshing nap, we went to Shinjuku, one of Tokyo's liveliest districts. The entire area was uniquely Asian, filled with neon-lit vibrant colors and huge digital boards flashing advertisements. The neighborhood buzzed with energy as locals unwound after long office hours in the bars of Kabukicho streets, while tourists explored the karaoke joints and eateries along the aroma-filled Sakura Dori Street. Next to Shinjuku Station is a narrow alley from the post-World War II period

called Omoide Yokochō (literally “Memory Lane”). This area, tucked amid Tokyo's modern skyscrapers, belongs to another era. It remains the nightlife hub of the post-war period and still preserves its nostalgic charm. The alley is very narrow—barely enough space for two people to walk side by side—with numerous stalls serving drinks and yakitori (grilled chicken skewers). One can experience old Tokyo by dining in this alley of stacked narrow stalls. We had our dinner there before winding down the day.



Shibuya

The next day, we decided to explore places in and around Shibuya. We started with the Meiji Shrine Inner Garden and Yoyogi Park. As mentioned earlier, Tokyo's urban landscape embraces large open green spaces for recreational and environmental purposes, making it a well-planned city that coexists with nature. The Meiji Shrine garden is a serene, calm green space leading to the shrine. In contrast, Yoyogi Park, located right next to Meiji Shrine, is more free-spirited and buzzing with social life. People lounge on walks, jog, and walk their pets. It is also a casual social spot for leisurely chats. On weekends, local bands can be found jamming or practicing dance or martial arts. It feels like a live symphony when the ginkgo trees shed their golden autumn leaves in the gentle November breeze.

Next, we headed to **Shibuya Crossing**, one of Tokyo's most iconic scenes, often featured in movies. It is a heavily crowded intersection where, once the light turns red for cars, thousands of people stream in from all directions across the crosswalks – diagonal, straight, and sideways – making the scene look like waves of people moving in harmony, then scattering like ripples when the lights change again. You can get a clear aerial view of this chaotic yet organised flow of humanity from nearby vantage points. Many tourists gather here to watch the spectacle unfold, along with hundreds of office workers, students, and locals. It is a fantastic experience, especially after the neon lights of the city come alive. Near the crossing stands the **Hachiko statue**, erected in honour of the dog who, even after his owner's death, waited for nearly ten years at the station, returning there at the same time daily. It is an iconic symbol of loyalty and devotion in the city.

As we walked around the city at night, we saw the trees and streets illuminated magnificently. It was around Christmas time, and beautifully decorated illuminated spots were scattered all around the city, adding magic to Japan's unique autumn scene.

Tokyo Skytree

On day three, we began our exploration with the Tokyo Skytree in Sumida City, which is an icon of Japan's modern architecture. Standing at 634 meters, it is the tallest tower of its kind and currently the third tallest structure in the world. The Skytree serves not only as an aesthetic landmark but also has a utilitarian purpose - broadcasting for the entire Kanto region (Tokyo and the surrounding areas). Public access is allowed up to 450 meters, where floor-to-ceiling glass panels offer an unobstructed view of the city and beyond. The highlight of this viewing gallery is the spiral ramp, which gives you the sensation of walking in the sky. It is truly a surreal experience to see the city's ocean of lights from such a height. The tall skyscrapers appear as densely packed sparkling stars, speeding

cars become shooting stars, and illuminated river pathways and bridges transform into rainbows, stretching from above the sky to below. Afterward, we took a leisurely stroll along the banks of the Sumida River. The Sumida-gawa river cuts through the city and drains into Tokyo Bay. It



has been an important inland waterway since ancient times. Numerous bridges span the river, each shining with a unique combination of lights at night, which, along with the gentle rhythm of the water, create a serene and calming atmosphere.

Sensoji Temple

We then crossed the river and reached the other side, Asakusa. At the heart of Asakusa is Sensoji Temple, the oldest and most revered Buddhist temple in Tokyo. As we approached the temple, the traditional Buddhist culture and heritage filled the air. The entrance to the temple is marked by a huge gate called Kaminarimon (Thunder Gate), with a giant red lantern hanging from it. This is one of the most photographed places in Tokyo. On either side of the gate stand two fierce guardian statues: the thunder god Raijin and the wind god Fujin. Next to the gate is Nakamise-dori, the famous souvenir street selling traditional handicrafts and local delicacies. On the temple grounds, another interesting ritual caught our attention: Omikuji, or fortune telling. It begins by shaking a metal cylinder until a thin wooden stick with a number engraved on it pops out. The number corresponds to a drawer from which you pick a slip. The slip reveals your fortune, ranging from Great Blessing to Great Curse and everything in between. If you receive a good fortune, you keep it as a charm; if it bears bad luck, you tie it onto a designated spot, praying to the gods

to mitigate the curse. We each tried our luck, and the experience felt deeply ceremonial.

Fujisan

After spending three days in Tokyo, we departed for Fujikawaguchiko, one of the well-known rural towns surrounding Mt. Fuji. This town is popular with both tourists and locals as a leisurely getaway. As we moved away from the bustling metropolis, the tightly packed buildings grew sparse, the multistoreyed skyscrapers gave way to shorter structures, and the noise of traffic faded. Neon lights were replaced by warm sunlight, and towering digital billboards gave way to simple wooden hoardings. Life began to feel slow, relaxed, and soulful.

Mt. Fuji is Japan's tallest mountain, standing at 3,776 meters. It is an active volcano, though it hasn't had any significant eruptions recently. Beyond its physical presence, it represents a significant part of Japanese cultural and spiritual heritage. The Japanese call it Fujisan; although 'san' literally means mountain, it is also an honorific, reflecting the reverence for this sacred peak.

On the day of our journey, the air was clear and the sky was cloudless — a blessing for anyone chasing Fuji's elusive beauty. At first, the mountain appeared only in fleeting glimpses between clusters of trees and city buildings, almost teasing us from afar. But as the train rolled further, the distant silhouette grew sharper, and then, suddenly, it was there in its full glory. The first sight was breathtaking, the snow-capped peak rising tall, perfectly symmetrical, commanding the landscape with silent majesty. It felt almost surreal, a quiet moment of awe and excitement that words could barely contain.

Fujikawaguchiko

After checking into our room in the evening, we ventured out to roam around the city. However, in late November, the sun sets in Fujikawaguchiko well

before 5 p.m., marking the arrival of winter. The city comes to a complete halt after sunset, with dim streetlights and only a few convenience stores and eateries open. So, we decided to finish our dinner and start sightseeing the next morning.

The temperatures here were slightly lower than in Tokyo, dropping to around 0 degrees Celsius during late nights and early mornings. We enjoyed a relaxing campfire on the rooftop. It was a refreshing break after the energetic days spent exploring bustling Tokyo, and with some exciting days ahead in Osaka.



Lake Kawaguchiko

At 6 in the morning, we set off for Lake Kawaguchiko on a bicycle. It felt like living in a retro film – old houses with traditional architectural designs, basking in the warmth of the early morning sun, which was just perfect after a chilly night. Trees were painted in shades ranging from light yellow to fiery red maples. We were lucky to have a clear view of Mt. Fuji that day. It didn't feel like an inanimate object at all, neither to me nor to the locals. It stood like an older brother watching over us.. Perhaps this is what they mean by living in harmony with nature – a sense that often fades amid years of a productivity-oriented lifestyle prioritizing efficiency over creativity or community. On our way, we noticed that Japanese drivers give priority to pedestrians and cyclists, stopping to let them pass and in return, the pedestrians often bow as a gesture of respect.

This stood in stark contrast to the fast-paced vehicles and chaotic traffic of our metros.

Finally, we reached Lake Kawaguchiko. The scenery opened into a wide lawn with neatly trimmed grasses turning yellow and ochre, like a golden carpet before the majestic mountain. The mountain stood tall and bright with snow-capped peaks in the rising sun. Words cannot describe the feeling I experienced here. Unlike other places where we felt excited and energetic, here there was a sense of peace and absolute stillness. We were lucky to be the only people there in the early morning. Just sitting there felt like meditation with nature. There was absolute silence, except for the soft ripples of water, the gentle flow of a cold breeze, and the soft fall of red maple leaves in the wind. The moment felt like enlightenment, resetting a cluttered mind and reminding me of the art of doing nothing. It highlighted the importance of rest—not as doing something different from the routine, but as doing absolutely nothing. In this place, I started to realise the Japanese principle of 'Ma', that only an uncluttered open mind can be filled with happy, beautiful things.

After spending some peaceful time by the lake, we checked out and departed Fuji by afternoon, bound for Osaka. For many first-time visitors, the Tokyo–Fuji–Osaka route—known as Japan's “Golden Circuit”—offers a blend of the country's most iconic experiences. Tokyo dazzles with its ultramodern cityscape and fast pace; Fuji embodies quietude and spiritual stillness; Osaka excites with its vibrant food scene and electric nightlife; while Kyoto reflects the heart of Japan's deep traditions and culture. Though Osaka and Kyoto deserve more detailed accounts beyond this travelogue's scope, mentioning them completes the classic Japanese itinerary. My journey through Tokyo's exhilarating city life, Fuji's tranquil foothills, and the subtle harmony found throughout Japan has deepened my appreciation for this timeless and captivating country.

PRSI National Awards 2025



Canara Bank's In House Magazine – “Shreyas” won the 3rd Prize in the category of Corporate Communications - **Best House Journal** – “English” conducted by the Public Relation Society of India on 13.12.2025 held at Dehradun.

The **PRSI National Awards**, presented by the Public Relations Society of India (PRSI) (the National body for PR/Communication professionals), are India's highest accolades for excellence in Public Relations and Communication, recognizing creative contributions from corporate bodies, Government, and professionals in diverse fields like Corporate Communications, Digital Media, Corporate Campaigns, and CSR.



Shreyas Contest 2025
2nd Prize
Travelogue - Hindi

पहाड़ों की पुकार - एक सप्ताह हिमालय की गोद में

कुरुबा भवानी

अधिकारी
मुंबई अं.का.



“हम जीवन से बचने के लिए यात्रा नहीं करते, बल्कि इसलिए करते हैं कि जीवन हमसे दूर न भाग जाए

हमारी यात्रा की शुरुआत मुंबई से दिल्ली की फ्लाइट से हुई। हवाई जहाज़ से दिल्ली की ओर सफर करते हुए मन में आने वाले दिनों की उत्सुकता अलग ही थी। दिल्ली पहुंचकर हमने आगे का रास्ता ट्रेन से तय किया और सुबह की ट्रेन पकड़कर काठगोदाम पहुंचे। पहाड़ों की गोद में बसा छोटा-सा यह स्टेशन नैनीताल जाने का अंतिम पड़ाव माना जाता है। काठगोदाम से नैनीताल महज़ 30 किलोमीटर दूर है।

काठगोदाम से उतरते ही हमने सोचा क्यों न दुपहिया वाहन लिया जाए ताकि घूमना अधिक सुविधाजनक और स्वतंत्र हो। पहाड़ों की असली खूबसूरती का आनंद दुपहिया वाहन से ही लिया जा सकता है। स्कूटी स्टेशन के पास ही मिल गई, और मज़े की बात यह थी कि किराया नैनीताल से कम था। अगर किसी को नैनीताल के आस पास स्कूटी से घूमना है तो वह ट्रेन से उतरते ही काठगोदाम से स्कूटी किराए पर ले सकते हैं। यहाँ पर कम किराए में अच्छी स्कूटी मिल जाती है। हमारे पास दो बैग थे—एक स्कूटी के आगे टिक गया और दूसरा पीछे। इस तरह हमारी असली पहाड़ी यात्रा की शुरुआत हुई।

नैनीताल की ठंडी हवाएँ

नैनीताल पहुंचकर हमने होटल में चेक-इन किया और थोड़ी देर आराम के बाद फरवरी की ठंडी हवाओं का सामना करने के लिए ऊनी कपड़ों में लिपटे हम बाहर निकल गए। शाम ढलते-ढलते हम सरियाताल पहुंचे, वहाँ झील किनारे थोड़ी देर टहले, नाश्ता किया और कुछ तस्वीरें खिंचाई। झील का पानी इतना ठंडा कि किसी भी ऐडवेंचर का मन नहीं हुआ, सो धीरे-धीरे वापस होटल लौट आए।



अगली सुबह सूरज की किरणों ने हमें जल्दी उठा दिया। चूँकि सुबह-सुबह नैना झील में ज़्यादा पर्यटक नहीं होते हैं तो हमने सोचा कि नौका विहार का यही सही समय है। नाविक से देर तक भाव-ताव करने के बाद हम 40 मिनट तक झील पर डगमगाती नाव का आनंद लेने निकल पड़े। नाव ने जैसे ही पानी में गोते लगाए, पूरे वातावरण में शांति और ताजगी बिखर गई। पानी में बर्फ-सी ठंडक और ऊपर सूरज की गर्माहट, उस क्षण को शब्दों में कह पाना कठिन था। पहाड़ी सुबह की धूप, चेहरे पर पड़ती हल्की गरमाहट और बर्फीली हवा का वह संगम सिर्फ वहीं महसूस किया जा सकता है।

नौका विहार के बाद हमने नैना झील के दूसरे छोर पर स्थित नैना देवी मंदिर जाकर माँ के दर्शन किए। कहा जाता है कि जब भगवान शिव सती का मृत देह लेकर कैलाश पर्वत जा रहे थे, तब यहाँ पर देवी सती के नेत्र गिरे थे और उन्ही नयनों की अश्रुधारा से इस झील की उत्पत्ति हुई। मंदिर का वातावरण इतना शांत था कि बेचैनी और थकान दोनों पिघल गईं। इसके

बाद हम वापस अपने होटल आ गए। थोड़ी देर आराम और नाश्ता करने के बाद वापस सैर पर निकल गए।

सातताल, गरुड़ताल और पहाड़ी व्यंजन

अपनी स्कूटी निकालकर हम सातताल और गरुड़ताल की तरफ बढ़ गए। दोनों ही जगहें कम भीड़भाड़ और शांति पसंद यात्रियों के लिए आदर्श हैं। सातताल पहुंचे तो वहाँ की कुमाऊँनी थाली – फुलके, पहाड़ी आलू, भट्ट की दाल, लोअर के पत्ते ने दिल जीत लिया—देशी मसालों और पारंपरिक स्वाद से भरा यह भोजन यात्रा की असली पहचान लगा।

सातताल में भी अनेको एडवेंचर स्पोर्ट्स थे जैसे कि कायाकिंग, बोटिंग, पैराग्लाइडिंग, माउंटेन बाइकिंग इत्यादि। इसके विपरीत गरुड़ताल में कोई भी एडवेंचर एक्टिविटी या खाने की दुकान नहीं थी। यह ताल आज भी अपने वास्तविक रूप में स्थित है। यहां पर हमारी मुलाकात कुछ स्थानीय निवासियों से हुई जो खुले में मैगी बनाने का आनंद ले रहे थे। एक छोटा सा स्टोव, थोड़ा पानी, डिस्पोजेबल प्लेट्स इत्यादि का इंतजाम पूरा था। वहाँ थोड़ी देर ताल किनारे विश्राम करने के बाद हम वापस नैनीताल के लिए चल पड़े।

कौसानी और बिनसर की ओर

अगले दिन हम बागेश्वर जिले में स्थित एक खूबसूरत से गांव कौसानी के लिए निकले। नैनीताल से करीब 110 किलोमीटर की दूरी तय करके हम कौसानी पहुंचे, जहाँ से पंचाचूली और नंदा देवी की चोटियाँ नज़र आती हैं। यहाँ आने का इकलौता कारण इस चोटियों के दर्शन करना ही था। पहाड़ों की यह भव्यता मन को न सिर्फ विस्मित करती है बल्कि हर बार कुछ नया एहसास देती है। कौसानी पहुंचकर हम वहाँ से 4



किलोमीटर दूर स्थित चाय बागान गए और ढलते सूरज के साथ खूब सारी फोटो खींची। लौटते वक़्त कौसानी की प्रसिद्द शाल फ़ैक्ट्री से शाल भी खरीदी।

अगली सुबह तड़के उठकर चोटियों को स्पष्ट दृश्य में देखा। आंटी के हाथ की पूरी सब्जी खाई और निकल पड़े अपनी अगली मंजिल – बिनसर के लिए।

बिनसर वो जगह है जिसे हम सालों से अपनी बकेट लिस्ट में रखते आए थे। यहाँ पर ठहरने के लिए हमने जंगल के बीच में एक होमस्टे किया था। जंगलों के बीच स्थित होमस्टे तक पहुँचने का अनुभव किसी रोमांच से कम नहीं था। इस होमस्टे पहुँचने के लिए मेन सड़क से कटकर जंगल में 2 किलोमीटर चलना पड़ता था जो कि रोमांचक होने के साथ-साथ डरावना भी था। होमस्टे के मालिक ने हमें उस क्षेत्र में प्रसिद्द श्री विमलकोट मंदिर जाने के लिए प्रोत्साहित किया। हम मंदिर के दर्शन करने के लिए स्कूटी से निकल पड़े। मंदिर जाने का रास्ता बहुत खराब था, सड़क कहीं-कहीं ही थी बाकी जगह सिर्फ रेत और मिट्टी। जैसे-तैसे हम मंदिर के मुख तक पहुँचे जहाँ से मंदिर जाने के लिए 3 किलोमीटर का ट्रैक करना पड़ता है। हम निकल पड़े, लेकिन दो-तीन किलोमीटर खड़ी चढ़ाई, सूना और सुनसान ट्रैक। आधे रास्ते पर पहुँचकर घड़ी देखी—शाम के पांच बज चुके थे, सूरज ढलने और रास्ते के सन्नाटे ने हमें लौट आने पर मजबूर कर दिया। वापसी में बाजार में गरमा-गरम मोमो खायें और वापस अपने होमस्टे के लिए चल दिए।

जागेश्वर और अल्मोड़ा की आस्था

बिनसर आने का मुख्य कारण बिनसर जीरो पॉइंट देखना था लेकिन रात भर बारिश होने के कारण और होमस्टे मालिक के सुझाव अनुसार हम बिनसर जीरो पॉइंट न जाकर, जागेश्वर धाम के दर्शन के लिए निकल पड़े। जागेश्वर धाम उत्तराखंड के अल्मोड़ा जिले में स्थित काफी प्राचीन और प्रसिद्द मंदिर हैं। इस मंदिर का प्रबंध भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा किया जाता है। इस मंदिर के परिसर में कुल 125 मंदिर हैं। मंदिर में शांतिपूर्ण दर्शन और बंदरो के साथ कुछ देर खेलने के बाद हम यहाँ से 3 किलोमीटर दूर स्थित वृद्ध जागेश्वर धाम गए। यह मंदिर भी शिव जी को समर्पित है।



सूरज बादलों से बाहर आ रहा था और बारिश भी बंद हो चुकी थी तो हमने सोचा क्यों न बिनसर जीरो पॉइंट देखा जाए। अल्मोड़ा होते हुए हमें बिनसर सैक्चुररी गेट पहुंचते-पहुंचते लगभग तीन बज गए थे। वहां गेट पर मौजूद लोगों ने हमें जाने से मना कर दिया। बताया गया कि बारिश होने के कारण आगे का रास्ता बहुत खतरनाक हो गया है, किसी को भी आगे जाने की अनुमति नहीं थी। निराश होकर हम वापस अल्मोड़ा के लिए निकल पड़े। रास्ते में हमें कसार देवी माता का भव्य और अत्यंत सुंदर मंदिर दिखा। यह मंदिर पहाड़ की चोटी पर स्थित है जहाँ से पूरा अल्मोड़ा दिखता है। माता के दर्शन करने के बाद हम अल्मोड़ा जिले के सबसे ज्यादा प्रसिद्ध मंदिर – श्री चितई गोलू देवता मंदिर के दर्शन के लिए चल पड़े। गोलू



देवता न्याय के देवता माने जाते हैं। यहाँ पर सच्चे मन से मांगी गई सभी इच्छा पूरी होती है और इच्छा पूर्ण होने पर भक्त इस मंदिर में घंटी बांधते हैं। इस मंदिर में हजारों हस्तलिखित पत्र और घंटिया देखने को मिलती हैं। दर्शन करके हम वापस अपने होमस्टे आ गए और इस तरह बिनसर का हमारा सफर यही पर पूरा हो गया और हम अगले दिन मुक्तेश्वर के लिए निकल पड़े।

मुक्तेश्वर और वापसी

यात्रा के अंतिम दिनों में हम मुक्तेश्वर महादेव के दर्शन करने पहुँचे। पिछली बार जब हम दर्शन करने आये थे तो यहाँ सैकड़ों की तादाद में लोग थे, लम्बी-लम्बी लाइनें थी जिसके चलते हमें बाबा के दर्शन नहीं हो पाए थे। लेकिन इस बार हम सुबह-सुबह दर्शन करने पहुँच गए थे उस समय मंदिर में गिने चुने 5-10 लोग ही थे। इस बार हमें बाबा के दर्शन भी हुए और मंदिर में काफी देर सुकून से समय भी व्यतीत करने को मिला। मंदिर की शांति और भक्ति ने यात्रा को आध्यात्मिक स्पर्श भी दिया। हमने अपनी यात्रा में ऐसी-ऐसी जगह चुनी थी जहाँ पर भीड़भाड़ कम थी जिसके चलते हम इन सभी जगहों का पूर्ण रूप से आनंद ले पाए।

इस सप्ताहभर की थकान और उत्साह के बीच जब हम अगले दिन वापस काठगोदाम पहुँचे और स्कूटी लौटाई तो ओडोमीटर की रीडिंग देखकर हंसी आ गई—650 किलोमीटर हम यँ ही पहाड़ी रास्तों पर नाप आए थे। हालाँकि थोड़ी देर बाद शरीर में उठे दर्द ने इस रीडिंग को सही साबित किया।

ट्रेन से दिल्ली लौटे, होटल में रात गुज़ारी और फिर अगले दिन मुंबई की फ्लाइट पकड़ ली।

यह एक हफ्ते की यात्रा हमें सिर्फ नए दृश्यों और मंदिरों का अनुभव ही नहीं दे गई, बल्कि मन को भी ताज़गी से भर गई। सच कहा जाए तो इस भागदौड़ वाली जिंदगी में पहाड़ों की छोटी-सी छुट्टी हमें अंदर से रीचार्ज कर देती है। ऐसे सफर न सिर्फ यादें देते हैं बल्कि नए लोगों, नए अनुभवों और नई सीखों से जीवन को और सुंदर बनाने का अवसर भी प्रदान करते हैं।

Turn Around Time



Shreyas Contest 2025
1st Prize
Cartoon



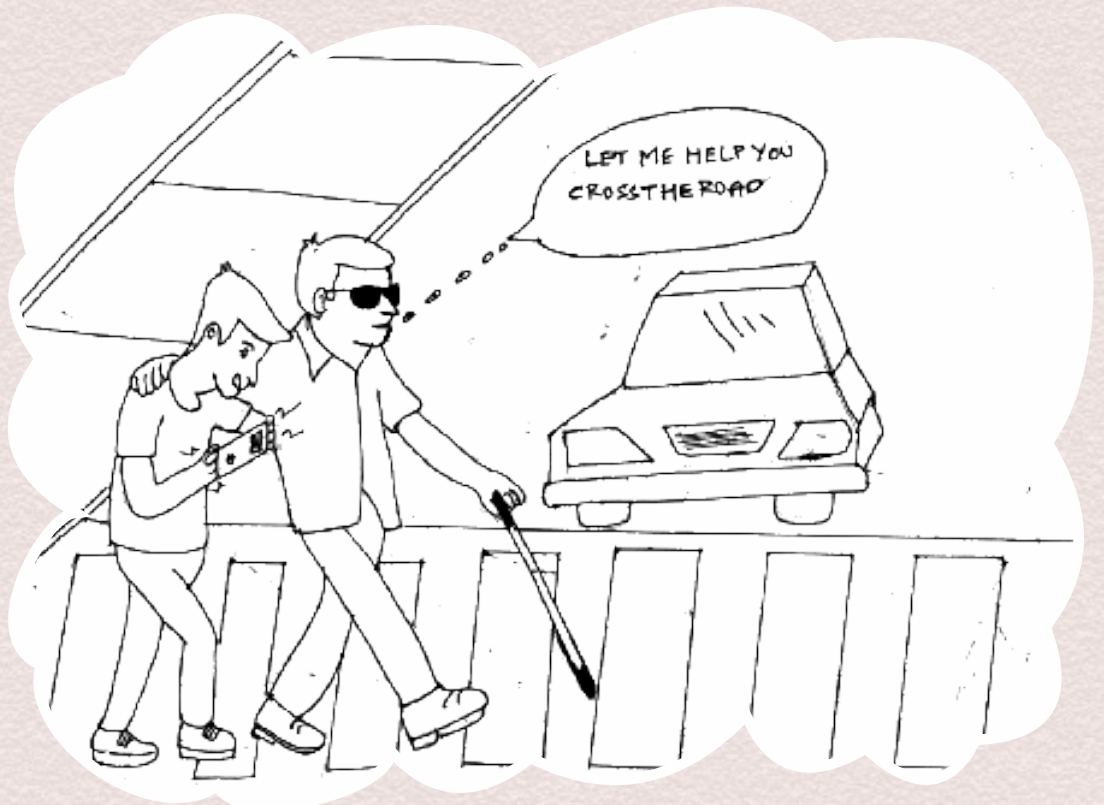
Salin K P
Chief Manager
Kavundam Palayam



Shreyas Contest 2025
2nd Prize
Cartoon



Prashanth K
Officer
Bhadravathi B.H Road Main



Union Budget impact on Banking sector

Union Budget 2026-27 has attempted to achieve a fine balance between growth and fiscal consolidation objectives. By estimating fiscal deficit at 4.3% the Budget has attempted to stick to the fiscal glide path though there is a significant increase in borrowing numbers compared to the previous Budget. There is focus on Manufacturing, MSMEs, Financial Sector, Services, Employment & Skill Development, Infrastructure, Urbanization and Fiscal Consolidation.

There are no significant or path breaking measures and this can be termed as a cautious budget. As the past measures have resulted in a growth rate exceeding 7%, big bang measures were perhaps considered unnecessary. But capex outlay has been hiked by 9% and a credible debt consolidation path has been announced with debt to GDP ratio for FY27 expected to decline to 55.6% from 56.1% in FY26. As expected, fiscal deficit will be brought down to 4.3% from 4.4%.

Table 1: Budget Arithmetic

₹ Lakh Cr, %	FY26RE	FY27BE	Y/y, %
Net Tax Revenue	26.74	28.67	7.4
Non Tax Revenue	6.66	6.70	0.60
Non-Debt Capital Receipts	0.55	1.17	112.72
Total Revenue	34.00	36.50	7.35
Revenue Expenditure	38.69	41.25	6.61
Capital Expenditure	10.96	12.22	11.50
Total Expenditure	49.65	53.47	7.69

Source: Budget documents

Budget Announcements & Impact

	Announcement	Impact
1	<p>Fiscal measures</p> <ul style="list-style-type: none"> The debt to GDP ratio proposed to be brought down to 55.6% from 56.1% in FY26. Fiscal deficit to decline to 4.3% from 4.4% in FY26. ₹ 1.4 lakh crore to be granted to State in FY27 as per 16th Finance Commission recommendation. However, the share of States remains unchanged at 41% 	<p>The proposed reduction in debt GDP ratio will offer credibility about fiscal health to global rating agencies and reduce overseas cost of borrowings for domestic institutions. The aim is to bring down the metric to 50% (+ or -)1% by 2031.</p> <p>As gross borrowing is expected to be ₹ 17.28 lakh cr and State borrowings are also expected to stay elevated G-Sec yields across the curve are expected to harden by 5-6 bps, despite lower indicative deficit.</p>

	Announcement	Impact
2	<p>Infrastructure and Public capex: Capex spend is budgeted to increase from ₹ 11.2 Lakh Cr to ₹ 12.2 lakh Cr in FY27. Measures include:</p> <ul style="list-style-type: none"> • ₹ 2 lakh cr interest free capex loans to States. • Infrastructure Risk Guarantee Fund for partial credit guarantees to lenders. • Recycling of real estate assets of CPSEs through the setting up of dedicated REITs. • Establishment of new Dedicated Freight Corridors. • Operationalizing 20 new National Waterways connecting mineral rich areas, industrial centers and ports. • Setting up of ship repair ecosystem catering to inland waterways. Coastal Cargo Promotion Scheme to increase the share of inland waterways and coastal shipping from 6% to 12% by 2047. 	<p>The hike in public capex comes to 9% and ₹ 1 lakh crore in absolute terms, keeping pace with the previous years. However, as a share of nominal GDP; the share of public capex shows a slight decline to 3.1% from the earlier 3.2%.</p> <p>Recycling of real estate assets of CPSEs involves pooling the real estate assets of Central PSUs into REITs, selling these units to investors and ploughing the money thus raised into these projects. This increases the pool of REITs as there are only a handful at present. Liquidity in REITs will increase.</p> <p>Dedicated freight corridors, waterways and ship repair ecosystems will facilitate reduction of logistics costs. India's logistics cost continues to be on the higher side vis-à-vis peers.</p> <p>Sectoral impact: Infrastructure, Banks, Infra-Financing NBFCs</p>
3	<p>Energy Security: Scheme to ensure Carbon Capture Utilization and Storage with an outlay of ₹ 20000 Cr; Extension of Basic Customs Duty on capital goods used in Lithium-ion cells; BCD exemption on goods for nuclear [power projects till 2035; Exclusion of value of biogas used in blended CNG from central excise duty.</p>	<p>The Carbon Capture Utilization scheme is aimed at sectors where switching to renewable energy is hard. The carbon capture scheme helps these sectors reduce their carbon intensity This measure helps domestic manufacturers with high carbon emission to maintain export competitiveness, especially in the context of carbon tax announced by EU.</p> <p>Moreover, such captured carbon can be converted into products like green urea. Power, steel, cement, refineries and chemical sectors will benefit.</p> <p>BCD exemption will incentivize import of lithium batteries and promote EV ecosystem while nuclear power sector also receives a boost, reducing dependence on thermal power.</p> <p>Sectoral impact: Cement, Steel, Power, Refineries and Chemicals</p>
4	<p>Urbanization:</p> <ul style="list-style-type: none"> • Focus on Tier II and Tier III cities as well as temple towns • 7 High-Speed Rail corridors between cities 	<p>Focus on Tier II and III cities as well as temple towns will create an enabling ecosystem for industries, start-ups and GCCs to develop as metros and Tier 1 cities are on the verge of saturation. This step increases economic growth by ensuring better connectivity and reducing logistics costs.</p> <p>Sectoral impact: Logistics, housing, data centers, GCCs</p>

	Announcement	Impact
5	<p>Ease of doing business measures:</p> <ul style="list-style-type: none"> Individual Persons Resident Outside India (PROIs) will be permitted to invest in equity instruments of listed Indian companies through the Portfolio Investment Scheme (PIS). Reduced Tax Collected at Source (TCS) on overseas tour package from 5% and 20% to 2% and for education and medical purposes from 5% to 2% TDS on Supply of manpower services to be either 1% or 2%. Enable depositories to accept Form 15G/ 15H from taxpayers holding securities in multiple companies. Time available for revising returns extended from 31st December to up to 31st March with the payment of a nominal fee and for non-audit business cases or trusts are proposed to be allowed time till 31st August. Allowing taxpayers to update their returns even after reassessment proceedings at an additional 10 percent tax rate. Non-production of books of account and documents and requirement of TDS payment is decriminalized. Immunity from prosecution with retrospective effect from 1.10.2024 for non-disclosure Exemption from Minimum Alternate Tax (MAT) to all non-residents who pay tax on presumptive basis. Tax buyback for all types of shareholders to be taxed as Capital Gains. However, promoters will pay an additional buyback tax. MAT is proposed to be made final tax. Honest taxpayers willing to settle disputes will now be able close cases by paying an additional amount in lieu of penalty. 	<p>These measures go a long way in promoting a business-friendly climate which in turn helps attract foreign direct investments. This is needed for overseas investments to flow to India and for reduction in exchange rate volatility.</p> <p>Some of these measures like TCS reduction will promote overseas travel and make it less costly for overseas travel for education and medical purposes.</p> <p>MAT is not only reduced but is also the final tax. This implies carry forward of excess MAT may not be possible though cash flow positions of those who struggled to utilize previous credits will abate. This will also nudge corporates to move towards the 22% tax rate regime without exemptions.</p> <p>Share buyback to get costlier. De-criminalization of various provisions and facility to settle cases with penalties reduce litigation and transaction costs.</p> <p>Sectoral impact: MSMES, individuals</p>
6	<p>Manufacturing sector:</p> <ul style="list-style-type: none"> Focus on cities with a population of more than 5 lakhs. India semi-conductor Mission 2.0 announced with an outlay of ₹ 40000 cr. Scheme for Rare Earth Permanent Magnets, research, mining, processing and manufacturing. Dedicated chemical parks. Scheme for manufacture of affordable sports goods. Electronic component manufacturing scheme. Scheme for container manufacturing and integrated scheme for textiles. Scheme for high value construction and infra equipment. 	<p>These measures will complement Make in India, boost manufacturing competitiveness and augment exports of manufactured goods. This is an opportunity for India to be self-reliant in sectors like semiconductors where we are currently dependent on other countries. Manufacturing GDP growth will sustain above 7%.</p> <p>These measures are favorable for textiles and leather manufacturers.</p> <p>The one-time measure to facilitate sale in domestic tariff areas will help small and medium enterprises adversely impacted by global headwinds.</p>

	Announcement	Impact
6	<ul style="list-style-type: none"> Extension of time on export of final product from the existing 6 months to 1 year, for exporters of leather or textile garments, exemption from basic customs duty on specified parts used in the manufacture of microwave ovens. Exemption from basic customs duty on components and parts used in aircraft manufacturing. A special one-time measure to facilitate sale in domestic tariff area at concessional rate of duty by eligible manufacturing units of SEZs. 	<p>Sectoral impact: SME, Semiconductors, Electronic Goods, Textiles, Leather, Mining, Construction Equipment.</p>
7	<p>MSME Sector focus measures:</p> <ul style="list-style-type: none"> Dedicated ₹10,000 crore SME Growth Fund. Top up the Self-Reliant India Fund (2021) with ₹2,000 crore. Corporate Mitras to Tier II and III cities to support MSMEs Mandate TReDS as the settlement platform for all purchases from MSMEs by CPSEs, Introduce a Credit Guarantee Support mechanism through CGTMSE for invoice discounting on the TReDS platform. TReDS receivables as asset backed securities, to develop a secondary market and enhance liquidity and settlement of transactions 	<p>These measures will help MSMEs to navigate the headwinds caused by global headwinds not only by reducing transaction and compliance costs but also by improving their cash flow positions.</p> <p>Invoice discounting will de risk financiers and improve credit flow. Linking TReDS to Government e-market place will enable lenders to observe real time transactions.</p> <p>This will in turn boost employment generation and export performance of MSMES.</p>
8	<p>Services sector</p> <ul style="list-style-type: none"> Clubbing of services under a single category of information technology services with a common safe harbour margin of 15.5%. Continuation of safe harbour for a period of five years at the company's choice. For IT services increasing from ₹300 crore to ₹2,000 crore Provision of tax holidays until 2047 to foreign companies providing cloud services to global customers through India-based data centre 	<p>Foreign companies wishing to set up data centers and GCCs in India will benefit through these measures. Global GCCs have emerged as huge employment generators with these GCCs and data centres reportedly employing around 19 lakhs.</p> <p>Sectoral impact: GCCs, IT services</p>
9	<p>Financial sector:</p> <ul style="list-style-type: none"> High level Committee on banking to align with Viksit Bharat. STT on futures and options to be hiked by 150% and 50%. Incentive of ₹100 Cr for a single issuance of municipal bonds. Power Finance Corporation and rural electrification corporation to be restructured 	<p>High level committee on banking is intended to usher in major reforms which might include measures relating to equity ownership, governance and steps to scale up banks to global levels.</p> <p>Hike in STT on futures and options is intended to discourage retail participation. A SEBI study had found that 90% of traders in the F&O segment incur losses</p>

	Announcement	Impact
9	<ul style="list-style-type: none"> Comprehensive review of FEMA (non-debt instruments) rule. Market making framework and total return swaps for corporate bonds 	<p>Corporate bond markets could become more liquid. Finer details on restructuring PFC and REC have not emerged and it may be a merger as currently REC is the promoter of PFC holding a majority stake.</p>
10	<p>Agriculture and farm incomes</p> <ul style="list-style-type: none"> Dedicated programme for horticulture & animal husbandry Dedicated programme for Indian cashew and cocoa, fisheries and sandalwood and fisheries segments. Bharat Vistaar for integrating Agri Stack portals and ICAR package on agricultural practices using Artificial intelligence 	<p>These measures support entrepreneurs engaged in these areas which will augment employment income generation. Moreover, India's agriculture exports will increase.</p> <p>Agri GDP growth is likely to improve from the current trend growth rate of 3 to 3.5% on account of these measures.</p> <p>Sectoral impact: Agriculture & food processing</p>

Overall impact

- As borrowing programme would be high bond market yields are likely to stay elevated.
- MSME sector will benefit from the incentives announced including TReDS linkage with GeM portal and measures to improve cash flow positions.
- **Steel, Cement, Thermal Power, Refineries, Defence, Logistics, Transport & Shipping, Chemicals, Textiles, Food Processing, Toys and Leather Sectors to benefit.**
- Incentives by way of duty reduction on inputs for lithium-ion batteries and nuclear reactors are beneficial for EVs and will encourage private investment in nuclear reactors.
- Outbound travel for education, tourist and medical purposes to increase.
- Carbon utilization and storage scheme to promote carbon emission reduction and alignment with standards in our export destinations.
- Hike in capex outlay will boost overall economic growth. However private capex has to catch up. Hike in STT on futures and options to reduce speculative risky derivative trades.

Disclaimer

Views / opinions expressed in this research publication are views of the research team and not necessarily that of Canara Bank or its subsidiaries. The publication is based on information & data from different sources. The Bank or the research team assumes no liability if any person or entity relies on views, opinion or facts and figures finding in this report.



Economic Research Section

Madhavankutty G (Chief Economist)

Tanzin Topen | Ankit Gupta | Sreejith T

For Suggestions and Views Please Contact, Economic Research Section (hoersection@canarabank.com)

**Shreyas, in homage to Canbank's departed souls,
pray that they rest in bliss, in eternal peace.**

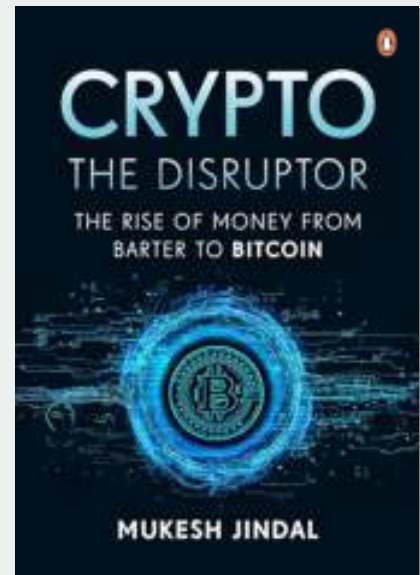
**Death, said Milton, is the golden key
that opens the palace of eternity.**

Name	Staff No	Designation	Branch	Expired on
ARUN KUMAR GOSWAMI	744263	OFF ASSISTANT	GHAZIABAD WAVE CITY	15-08-25
RAJEEV KUMAR	789554	OFFICER	SIMDEGA TOWN	23-08-25
GITHA GOVINDAIAH	605124	OFF ASSISTANT	CHITTOOR	31-10-25
S. RAJENDER	84575	MANAGER	HYDERABAD-11 MSME SULABH	07-10-25
B MANIKANTAN PILLAI	527864	OFF ASSISTANT	QUILON CUR CHEST	10-10-25
HEMANT SINGH	89465	SR MANAGER	AGRA 1 REGIONAL OFFICE	16-10-25
BIDYUT KALITA	117048	OFFICER	MANOHARPUR	16-10-25
M SIVASANKAR	66116	C S A	MAGECHERUVU	17-10-25
NAEEM UDDIN AHMAD	108324	MANAGER	ADAVI SOMAPUR	24-10-25
JAI BAHADUR SINGH	74270	OFF ASSISTANT	FAIZABAD REKAB GUNJ	25-10-25
RANGARAJ S	69932	C S A	KARAMADAI	04-11-25
PRAKASH	62952	H K CUM OFF ASST	JODHPUR CHOPASANI ROAD	06-11-25
AJAY KUMAR JHA	103833	C S A	JAMSHEDPUR SAKCHI	09-11-25
GANESH NAG	80933	C S A	PADAMPUR	13-11-25
MITHU BANIK	100205	H K CUM OFF ASST	MEMARI	16-11-25
NILESH SADASHIV SURVE	92834	ARM GRD/SEC GRD	KALWA	22-11-25
SANGEETA CHOUDHARY	782272	MANAGER	B'lore 100 FT RD KALYANNAGAR	24-11-25
KAILASH KUMAR	119788	OFFICER	JAGRAON	25-11-25
ADYA TRIPATHI	836088	OFFICER	MUMBAI SME BRANCH	25-11-25
ATIN KUMAR	743039	OFFICE ASSISTANT	ALLAHABAD CURRENCY CHEST	25-11-25
JYOTI VIDHYARTHI	71363	MANAGER	DELHI TAGORE GARDEN	02-12-25
N SHIVA KUMAR	520700	DR-CUM-OFF ASST	HEAD OFFICE BENGALURU	10-12-25
SUNIL KUMAR	555739	OFF ASSISTANT	DABLA (BUDHAJOHAR)	13-12-25
SUNIL KUMAR	621830	OFF ASSISTANT	DHARAMPUR KALAN	15-12-25
AHMAR ABBAS ZAIDI	109749	OFFICER	VARANASI REGIONAL OFFICE	16-12-25
KAMAL SINGH	492021	OFF ASSISTANT	BINDU BULAKI	23-12-25
RAJINDER ANEJA	64354	MANAGER	FAZILKA	27-12-25

Crypto the Disruptor - The rise of Money from Barter to Bitcoin

— Mukesh Jindal

From the dawn of history to the age of artificial intelligence, the story of human progress has always been driven by one simple need - 'survival'. Evolution has paved its way from the basic life forms to complex civilizations, shaped by constant adaptation and the instinct to endure. Overtime, this instinct to survive transformed into the ability to innovate, allowing the human race to move beyond mere existence and create tools, systems and technologies that improved their living environment. The book, “**Crypto the Disruptor - The rise of Money from Barter to Bitcoin**” by Mukesh Jindal, captures this journey with clarity, showing the evolution and development of money and technology from the basics of its origin. Mukesh Jindal is the founder of Alpha Capital and is also recognized as a leading global financial adviser by Citywealth magazine, London. He is also the author of best-selling books like **Dream Big** and **Crorepati Mindset** and has a flair of simplifying investment strategies for the common mindset.



MRP: ₹599 | Pages: 275
Language: English | Genre: Non-Fiction/ Finance

The book offers an insightful journey through the history of money and the global economy and the present stage of digital finance and crypto currencies. The Indian crypto market has faced a rapid growth in recent years and is often perceived as a shortcut to quick wealth. Crypto currency is a decentralised system of finance and is contributing significantly to the modern fiscal framework. “**Crypto the Disruptor**” explores how crypto currencies have disrupted established financial systems, and has taken the world by storm. Crypto assets, popularly known as VDAs (Virtual Digital Assets) have become a powerful force for democratizing finance by providing more transparency and decentralising control. For a beginner, the book is definitely a go-getter, as this book opens up a full new realm of the digital financial world which marks its powerful presence in the present scenario. The rise, the boom and bust, the big shorts, the troubles, capitalism and finally the rise of the decentralised currency has been beautifully woven and interlinked in the eight segments of the book.

The author has tried to present the whole evolution in the form of stories and anecdotes which are easy to relate and understand. Not only India, but the world's political and geographical scenario is taken into account while preparing the backdrop of the book. After navigating through the historical references starting from the Victorian era, the Baring Crisis (also known as the Panic of 1890), the Great Depression, the Great Latin American meltdown, the emergence of the information age at 1993, the Stock exchange boom, and finally the Satoshi Nakamoto's Bitcoin era commencing from 2008; the book delves deep into the creation and need of the first ever decentralized form of currency. Many technical and new words are also made familiar to us with the author's simple explanation. Even though, many terms may sound new and unfamiliar but in the due course of understanding the concepts, we get to know them quite well.

Furthermore, the book's final chapter gives emphasis on the Indian context of cryptocurrency scenario. The author offers cautious advice on how to approach the volatile and speculative yet exciting world of cryptocurrency investment, making it an invaluable tool for both new and experienced investors. Regardless of one's interest in history, technology, or investing; this book provides insightful viewpoints on how cryptocurrency will influence the future of the financial industry.

Why do people invest in a particular asset? At its core, every investment is based on a shared sense of trust. Similarly, when a new technology breaks through and it is creating ripples across the globe-how can one stand aloof and think that the shift won't affect his/her financial world. So, it is better to be updated before the actual lightning strikes! As the book ends, “The DeFi world has already opened its doors,” and this book serves as an apt guide for those who are willing to explore the emerging decentralized financial world.

By **Manisha Manohar**

Officer, HM&L Section.





दिनांक 13 जनवरी, 2026 को अंचल कार्यालय, मुंबई में आयोजित कारोबार रणनीति सह समीक्षा बैठक में श्री भवेंद्र कुमार, कार्यपालक निदेशक, श्री आलोक कुमार अग्रवाल, मुख्य महाप्रबंधक, सामरिक एवं डेटा विश्लेषिकी वर्टिकल, प्रधान कार्यालय, श्री रंजीत कुमार, मुख्य महाप्रबंधक व अंचल प्रमुख, श्री सुनील कुमार यादव, महाप्रबंधक, एमएसएमई वर्टिकल, प्रधान कार्यालय और श्री रजनीश कुमार, उप महाप्रबंधक, अंचल कार्यालय भी उपस्थित रहे।

Sri Bhavendra Kumar, ED at the Business Strategy and Review meeting conducted at Mumbai Circle, on 13th January, 2026. Sri. Alok Kumar Agarwal, CGM, Strategy and Data Analytics Vertical, HO, Sri. Ranjeev Kumar, CGM and Circle Head, Sri. Sunil Kumar Yadav, GM, MSME Vertical, HO and Sri. Rajnish Kumar, DGM, CO are seen in the picture.

दिनांक 26 दिसंबर, 2025 को श्री एस. के. मजुमदार, कार्यपालक निदेशक, द्वारा अंचल कार्यालय कोलकाता की श्याम बाजार शाखा परिसर का उद्घाटन किया गया। श्री अरुण कुमार मिश्रा, महाप्रबंधक व अंचल प्रमुख, श्री अमृत घोष, उप महाप्रबंधक, एच. एन. आई. ग्राहक एवं अन्य अधिकारीगण इस अवसर पर उपस्थित रहे।

Sri S. K. Majumdar ED, at the inauguration of new premises of Shyam Bazaar Branch, Kolkata Circle on 26th December, 2025. Sri. Arun Kumar Mishra, GM and Circle Head, Sri. Amrit Ghosh, DGM, CO, HNI customers and other Executives are seen in the picture.



दिनांक 26 दिसंबर 2025 को चेन्नई अंचल कार्यालय में आयोजित संसदीय समिति की बैठक में श्री सुनील कुमार चुघ, कार्यपालक निदेशक, श्रीमती के ए सिंधु, मुख्य महाप्रबंधक व अंचल प्रमुख, श्री आर राजेश, महाप्रबंधक, प्रौद्योगिकी परिचालन वर्टिकल, प्रधान कार्यालय और अन्य कार्यपालकगण इस अवसर पर उपस्थित रहे।

Sri. Sunil Kumar Chugh, ED, at the Parliamentary Committee meeting held in Chennai Circle on 26th December, 2025. Smt. K A Sindhu, CGM and Circle Head, Sri. R Rajesh, GM, Technology Operations Vertical, HO, and other Executives are seen in the picture.



केनरा बैंक
Canara Bank
A Government of India Undertaking



Together We Can

Higher Education Loans Simplified!



PM-VIDYALAXMI

Inspiring Learning, Achieving Goals

Apply online @ pmvidyalaxmi.co.in

- ✦ Collateral-free and Guarantor-free Education Loan under PM-Vidyalaxmi Scheme
- ✦ Education Loan Scheme for Top-952 Quality Higher Educational Institutions (QHEIs) in India
- ✦ Loan Amount as per course fee & other fee charged by QHEIs
- ✦ Attractive ROI starting from 6.75% * p.a. (Includes 0.50% concession for Canara Aspire account)



SCAN TO APPLY



An Exclusive Savings
Account for Youth
Between Age 17-28 Years



Scan QR Code
to know more

You Aspire,
We Empower



*Conditions Apply
रजिस्ट्रेशन सं./Registration No. 36699/83



1 Bank
Number



1800 1030



www.canarabank.bank.in

National Cyber Crime Reporting Portal <https://cybercrime.gov.in> | National Cyber Crime Helpline - 1930